भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

BY

RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART I.

पहला हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
एप्रिल सन् १८९७ ई०

1st Edition, 600 copies.
Price per copy, 8 annas.

पहली बार ६०० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ॥) आने

भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART I.

पहला हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेखाने में छापा गया
विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

एप्रिल सन् १८९७ ई०

उपोद्घात

प्रकट हो कि जब हमने इस ग्रंथका आरंभ करनेकेलिये लेखनी उठाई तो मनका यह संकल्प था कि एक छोटीसी पुस्तक ऐसी रचें, जिससे बालकोंको यह सारा भूगोल हस्तामलक हो जाय; पर होते होते विस्तार बहुत बढ़ गया, चार सौ पृष्ठकी इतनी बड़ी पुस्तक में भी पूरा न पड़ा, और केवल एशिया का वर्णन होने पाया. यदि शरीर वर्त्तमान है, और ईश्वरेच्छा अनुकूल, तो दूसरा भागभी शीघ्र बनकर छपजायगा, और फ़रंगिस्तान अफ़रीका अमरिका और टापुओंका जो शेष रहगए हैं उसमें वर्णन होगा. यदि बालक भिन्न युवा और वृद्ध भी इस ग्रंथको पढ़ेंगे तो निश्चय है कि उनका परिश्रम व्यर्थ न जायगा; वरन हमारे देशके राजा बाबू और महाजनों को, जो हिंदी छोड़कर और कुछ भी नहीं जानते, और न उनकी ऐसी अवस्था है कि पाठशालामें जाके अब अंगरेज़ी और पारसी सीखें, यह ग्रंथ बड़ाही उपकारी होगा; परंतु जहां कहीं इसमें कोई बात लड़कपन की देखने में आवे तो ग्रंथकर्त्ता को न हँसें, क्योंकि वास्तव में यह पुस्तक लड़कोंही के लिये लिखी गई—हमने इस ग्रंथमें कवियों की नाईं बढ़ावा अथवा

अत्युक्ति अरु वाक्यबाहुल्य कहीं नहीं किया, जैसी जो बात है वैसा ही लिख दिया, यहां तक कि जो कहीं लिखा देखो कि ऐसी जगह सारे संसार में नहीं है तो निश्चय जानना कि दूसरी नहीं है. अत्युक्ति और बढ़ावा कभी मत समझना.—मानचित्रों में हमने उतनेही नाम लिखे जो ग्रंथमें हैं, अधिक नहीं लिखे, परन्तु ग्रंथमें जितने नाम हैं, वह मानचित्र में सब आगए कुछ भी शेष नहीं छोड़े; ऐसा न होने से पुस्तक के लिखे हुए नाम चित्रोंमें ढूंढ़ने के समय बड़ा कष्ट पड़ता है·—ग्रंथके अन्त में बर्णमाला के क्रमसे भी सब नाम लिखदिए हैं, और जिस जिस पृष्ठ में उनका बर्णन आया है उसका अङ्क भी लिख दिया है; जिस नामके पहले दो लकीरें खिची हैं जानो कि उस स्थान को हमने अपनी आंखों से देखा है जिस पृष्ठांक के पीछे दो लकीरें लिखी हैं जानो कि उस पृष्ठ में उस नामका पूरा बर्णन है और दूसरी पृष्ठों में केवल किसी कारणसे नाम मात्र आगया है; जिस नदी पहाड़ झील नगर गांव घर राजा इत्यादि का कुछ विवरण देखना हो, कोश की रीति बर्णमालाके क्रमसे इस अनुक्रमणिका में उसका नाम निकालकर उसके साम्हने लिखेहुए पृष्ठांकों के अनुसार समुदित वृत्तान्त देख लो लड़कों की परीक्षालेने में परीक्षकों को इस अनुक्रमणिका से बड़ा सुभीता पड़ेगा ॥

कितने मित्रोंकी सम्मति थी, कि यह पुस्तक छुट हिन्दी बोली में लिखी जावे, फ़ारसी का कुछ भी पुट न आने पावे, परन्तु हमने जहां तक बन पड़ा बैतालपचीसी की चाल पर रखा, और इसमें यह लाभ देखा, कि फ़ारसी शब्दों के जानने से लड़कों की बोल चाल सुधर जावेगी, और उर्दू भी जो अब इस देशकी मुख्य भाषा है सीखनी सुगम पड़ेगी, ॥

एशियाटिकजर्नेल और सैक्लोपीडिया के व्यतिरिक्त जिन ग्रन्थकारों के ग्रंथों से इस पुस्तक में बहुत बातें ली गई हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं ॥

हमिल्टन । रीनोल्ड । थारंटन । मीयर । टाड । टर्नर । मालकाम । मकफ़र्सन । मकफ़ार्लेन । हम्बोल्ट । मालब्रन । बाल्बी । ईवार्ट । निकल्स ब्रूजल । वाइन । मूर्क्राफ्ट । जिरार्ड । टेवर्नियर । एलियट । प्रिंसिप । कनिङ्गहम् । हीबर । मरे । मार्शमेन । वालेंशिया । इत्यादि ॥

सोरठा

जे जन होहु सुजान । लीजो चूक सुधार धरि ॥
बालक अति अज्ञान । हौं अजान जानत न कछु ॥

शि०

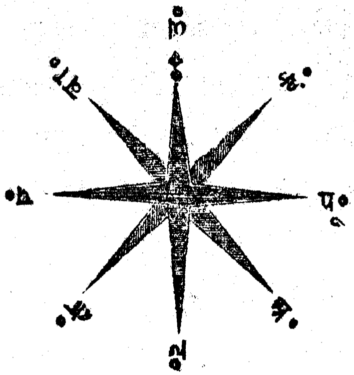
CONTENTS
OF THE
FIRST VOLUME.

INTRODUCTION.

ASIA.

Page

HINDUSTAN.



भूगोल हस्तामलक

जो कभी कोई आदमी किसी बड़े आलीशान मकान के दर्मियान जा निकले, तो क्या उसका दिल इस बात को न चाहेगा, कि उस मकान के एक एक कमरे और कोठरी को घूम घूम कर देखे, और उन में जो वस्तु अद्भुत और अपूर्व रक्खी हों सब को अच्छी तरह ध्यान करे ? लेकिन सोचो कि यदि उस मकान में बहुत से कमरे ऐसे हों, जिन में अजनबी आदमियों के जाने की रोक टोक और मनाही रहे, या इसी सैर करनेवाले को बिलकुल कमरों में जाकर हरएक चीज़ देखने की फ़ुर्सत न हो, और कोई आदमी उस मकान की बातों से जानकार इस सैरकरनेवाले को उन सब कमरों का हाल ब्योरेवार बतला देना कबूल करे, तो क्या यह सैरकरनेवाला खुश होकर इस बात को ग़नीमत न समझेगा ? निदान जब लोगों को मकानों के कमरों का हाल मालूम होने से उनका दिल इतना खुश होता है, जो हम उनको इस दुनिया के सब मुल्क पहाड़

नदी झील और शहर और उन मुल्कों में जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं, या जो जो बातें ऐसी अनोखी और चमत्कारी हैं, कि न कभी कानों सुनी न आंखों देखीं, सारे उनके समाचार और वहां के लोगों की भाषा चाल चलन और व्यवहार पतेवार बतला देवें तो क्या उनका मन प्रसन्न न होवेगा ? ऐसा तो कोई बिरला ही सुस्त और अल्पबुद्धी आदमी होगा जिसका दिल ऐसी बातों की खोज करने को न चाहे, या जो कोई पुरुष उसको उन्हें बतला दे तो वह उसका उपकार न माने। मतलब हमारा इस भूमिका के बांधने से यह है, कि अब हम इस ग्रन्थ में कुछ वर्णन भूगोल का करते हैं, परन्तु जैसे उस मकान के कमरों का हाल सुनने से पहले सैर करनेवाले को मकान के हिस्सों के नाम और उनकी सूरत जान लेनी बहुत अवश्य है, कि दर्वाज़ा कैसा होता है, और खंभा किसको कहते हैं, और दालान क्या है, और कोठरी किसका नाम है, निदान जब तक वह सैर करनेवाला इन बातों से बेख़बर रहेगा, उस मकान के कमरों का हाल किसी के समझाने से भी न समझ सकेगा, इस वास्ते पहले हम ज़मीन के हिस्सों के नाम लिखते हैं जिनको याद रखने से इस भूगोल का सारा हाल ध्यान में आ जावे॥

जानना चाहिये कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है, और बिना किसी आधार के अधर में सूर्य के गिर्द घूमता (१) है, दो तिहाई से अधिक अर्थात् १००० में ७३४ हिस्से पानी से ढपा हुआ है। अनाड़ियों को इस बात के सुनने से बड़ा आश्चर्य होगा, कि

---

(१) पृथ्वी का घूमना ऋतु का बदलना और दिन रात का घटना बढ़ना यह इस किताब के अंत में वर्णन होगा॥

पृथ्वी बिना किसी आधार के अधर में किस तरह रह सकती है, उनको इस बात पर अच्छी तरह ध्यान करना चाहिये, कि जो वे किसी चीज़ को पृथ्वी का आधार मानेंगे तो फिर उस आधार के ठहराव के लिये भी कोई दूसरा आधार अवश्य मानना होगा, और फिर इसी तरह एक के लिये दूसरे का आधार बराबर ठहराते चले जाना पड़ेगा, यहां तक कि आख़िर थककर यही कहेंगे कि सब से पिछले आधार का कोई भी दूसरा आधार नहीं है, वह ईश्वर की शक्ति से आपही अधर में ठहर रहा है। निदान जब यही बात है तो इतना बखेड़ा न करके पहले ही से यह बात क्यों न कह देवें, कि जैसे सूर्य चन्द्र और तारे अधर में हैं, उसी तरह पृथ्वी भी ईश्वर की शक्ति से बिना आधार अधर में ठहर रही है, और यही बात हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में लिखी है, अंगरेज़ों ने विद्या और दूरबीन इत्यादि यंत्रों के बल से प्रत्यक्ष साबित कर दिखाई। ये पहाड़ जो देखने में बहुत बड़े मालूम पड़ते हैं, जब पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो, कि जिसका घेरा पच्चीस हज़ार बीस मील (१)

---

(१) दो मील का एक पक्का कोस होता है, सड़क पर जहां पत्थर गड़े हैं, वे मील ही के हिसाब से गड़े हैं हमने इस पोथी में कोस का हिसाब इस वास्ते नहीं लिखा, कि वे किसी ज़िले में छोटे और किसी ज़िले में बड़े होते हैं, बरन पहाड़ी लोग बोझ पर और चलनेवाले की ताक़त देखकर कोसों का हिसाब करते हैं, वही मंज़िल जो बोझेवाले को वे दस कोस की बतलावेंगे ख़ाली आदमी के लिये पांच कोस की कहेंगे, और जो कभी वह आदमी घोड़े पर सवार होजावे तो फिर वे उस मंज़िल को दो ही कोस की गिनेंगे॥

का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगी के छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने दाने से रहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों के समुद्र में चारों तरफ़ घूम आने से इस बात में कुछ भी सन्देह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह जहाज़ जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुंह किये चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बाएं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है, जहां से चला था, तो इस हालत में पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता, और सच है जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचे ऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरों से क्यों न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गों पर से दूरबीन लगाकर, कि जिससे लाखों कोस के तारों की सूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्मल आकाश में सारा हिन्दुस्तान क्यों न देखलेते, बरन समुद्र के तट पर खड़े होकर जो किसी आते हुए जहाज को देखने लगो तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्धभाग और फिर पीछे से जब जहाज़ कुछ समीप आजायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज़ समीप नहीं आता, पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जलकी ओट में छिपा रहताहै यह पानी जिस्से दो तिहाई से अधिक पृथ्वी ढकी हुई है, समुद्र अथवा सागर कहलाता है खारा सब जगह है लेकिन कहीं कम कहीं ज़ियाद: थाह उसकी सवापांच मील तक तो मालूम होसक्ती है परन्तु गहरा वह कहीं कहीं इस्से भी अधिक है। लहरें उसकी बाईस फ़ुट तक ऊंची नापी गई हैं। यद्यपि समुद्र इस भूमंडल पर एकही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिये शहर को मुहल्लोंमें बांट देतेहैं,

वैसेही समुद्र में द्वीप और जहाज़ों का सहजसे पता लगजाने के वास्ते उसके पांच हिस्से करके पांच नाम रखदिये हैं। पहले हिस्से को जो अमेरिका के महाद्वीपसे फ़रंगिस्तान और अफ़रीका के मुल्क तक फैला हुआ है, अटलांटिक समुद्र कहते हैं। दूसरे हिस्से को जो अमेरिका महाद्वीप और एशियाके मुल्क के बीचमें है, पासिफ़िक समुद्र बोलते हैं। तीसरा हिस्सा जिसकी हद अफ़रीक़ा के मुल्क से लेकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के टापू तक है· उसका नाम हिन्द का समुद्र रक्खा गया है. और चौथे और पांचवें हिस्सों को जो उत्तर और दक्षिण ध्रुवके गिर्द हैं, उत्तर समुद्र और दक्षिण समुद्र पुकारते हैं। इन पिछले दो समुद्रोंका जल शीतकी अधिकाई से जमकर सदा यख़ अर्थात् पाला बना रहता है, जो ध्रुव के समीप है वह तो कभी नहीं गलता, और बाक़ी गर्मियों के मौसिम में जहां कहीं गलता है तो यख़के टुकड़े पहाड़ोंकी तरह वहां जलमें तिरने लगते हैं। जहाज़ों को इन समुद्र में बड़ा डर है, जो कभी यख़के टुकड़ोंके बीच में फस जावें, तो फिर उस जगह से उनका निकलना बहुत कठिन है। ह्वेल मछली जो समुद्र के सब जीवोंसे बड़ी, प्रायःसाठ हाथ लम्बी होती है बहुधा इन्हीं में रहती है। इन पांचों समुद्र के जो छोटे टुकड़े दूर तक थल के भीतर आगये हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं। और खाड़ियों के नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्कों के नाम पर बोले जाते हैं, जो उनके समीप अथवा किनारे पर होते हैं। बन्दर वह स्थान है, जहां जहाज समुद्रकी कोल में आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात् सूखा है, कुछ एकही ठौर नहीं, बरन कई जगह टुकड़ा टुकड़ा समुद्रके बीच बीच में प्रगटहो रहाहै जैसे निर्मल नीले आकाश में मेह बरस जाने के बाद बादल के टुकड़े दि-

खलाई देते हैं। इन ज़मीन के टुकड़ों में दो टुकड़े बहुत बड़े हैं, और इसी वास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, बाक़ी छोटे छोटे टुकड़े द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र में निकलगये हैं, अर्थात् तीन तरफ़ उनके पानी है और एक तरफ़ महाद्वीप से मिलेहुए हैं, उनको प्रायद्वीप बोलते हैं, और उसी प्रायद्वीप का सिरा अर्थात् अग्र भाग अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीप से मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरूमध्य कहा जायगा, क्योंकि जैसे डमरू का मध्य उसके एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है, कि ज़मीन अर्थात् थल सभी जगह बराबर एक सी बट्टा ढाल मैदान नहीं है, किसी जगह बहुत ऊंची होगई है। ऊंची ज़मीन का नाम पहाड़ है और जिन पहाड़ों के अन्दर से आग निकलती है वे ज्वालामुखी कहलाते हैं। पहाड़ों के झरने और मेह का पानी जो इकट्ठा होकर मैदान में बहता हुआ समुद्र को जाता है, उसे नदी कहते हैं, पर जो नदी बहुत बड़ी होती है उस को दर्या भी पुकारते हैं, और जो बहुत ही छोटी होती है वह नाला कहलाती है, और जो नदी से काटकर किसी दूसरी जगह पानी ले जावें, तो उसे नहर बोलते हैं। जब कभी इस मेह के पानी को बहने की राह नहीं मिलती और किसी नीची ज़मीन में इकट्ठा होजाता है तो वही ताल और झील है। जिस तरह पर कोई माली या ज़मींदार किसी बड़े बाग़ या खेत को जुदा जुदा क़िस्म के फूल वा अन्न बोने के लिये तख़्ते चमन और क्यारियों में हिस्से करता है उसी तरह यह पृथ्वी भी जुदा जुदा क़ौम के आदमी और जुदा जुदा बादशाह राजे और कादीरों की बादशाहत राज और कादीरी के कारन जुदा जुदा हिस्सों

में बटी हुई है। मुल्क अथवा देश छोटे और बड़े सब हिस्सों को कह सकते हैं, पर विलायत उसी बड़े हिस्से को कहेंगे, जिस में निराली क़ौम बसती हो, और जहां का चाल चलन और व्यवहार जुदा ही बरता जाता हो। यह विलायतें बमूजिब अपनी लंबान चौड़ान के सूबों में और सूबे ज़िलों में और जिले परगनों में बटे रहते हैं, और फिर हरएक परगने में कई एक मौज़े अर्थात् गांव बसा करते हैं। जो बस्ती बहुत बड़ी होती है अर्थात् जिस में हज़ारों आदमी बसते हैं, और पक्के संगीन बड़े बड़े मकान बने होते हैं, उसको शहर और नगर कहते हैं। शहर से छोटा और गांव से बड़ा क़सबा कहलाता है।

अब यहां इस किताब के पढ़नेवालों को यह भी सोचना चाहिये, कि यद्यपि उस आलीशान मकान के सब कमरों का हाल जिस को सैर करनेवाला आप नहीं देख सकता, किसी जानकार आदमी से सुनकर अवश्य उसके दिल को ख़ुशी हासिल होवेगी, लेकिन जो वह आदमी उसको उन कमरों का नमूना या तसवीर भी दिखला-देवे तो फिर उस सैर करनेवाले को कैसा मज़ा मिलेगा, और कितना आनन्द हाथ लगेगा। निदान इसी तरह जानकार आदमियों ने भूगोल विद्यार्थियों के देखने के वास्ते ज़मीन का नमूना और उसकी तसवीर भी बना दी है। भूगोल के नमूने को भी भूगोल ही कहते हैं और ठीक भूगोल के डौल पर गोल बनाते हैं, और तसवीर वह है कि जिस को नक़्शा कहते हैं, पर इस तसवीर में भेद है, हम उसी एक मकान की तसवीर कई तरह से खींच सकते हैं, जो किसी छोटे से कागज़ पर खींचें, तो उस मकान का डौल तो निस्सन्देह मालूम हो जावेगा, लेकिन उसके दर दीवार अच्छी तरह न ज़ाहिर हो सकेंगे, और जो बड़े कागज़ पर बनावें तो दर दीवार अवश्य

मालूम हो जावेंगे, पर फिर भी उनकी नक़्क़ाशी और बारीकी तभी भले प्रकार प्रकट होवेगी, कि जब उनके जुदा जुदा हिस्सों की जुदा जुदा तसवीर खींची जावे, इसीतरह भूगोल का नक़्शा भी जो छोटा होता है, उस्से उसका डौल मात्र, और जो ज़रा बड़ा रहता है उस्से केवल इतना कि कौन मुल्क किस तरफ़ है मालूम होसकता है, लेकिन गांव और शहर और पहाड़ और नदी और सड़कोंका ब्योरा पतेवार तभी जाना जायगा, कि जब जुदा जुदा विलायत बरन जुदा जुदा परगनों का जुदा जुदा नक़्शा खींचा जावे। जानना चाहिये कि ज़मीन नारंगी की तरह गोल है, और समुद्र और टापू उसकी चारों अलंग पड़े हैं और तसवीर में हर एक चीज़ की एकही अलंग दिखलाई देती है, दोनों अलंग कदापि दिखलाई नहीं दे सकती, इसवास्ते भूगोल के नक़्शे में उसकी दोनों अलंगों की दो तसवीरें लिखी हैं, जैसे आदमी के चिहरे की कोई तसवीर खैंचकर उसकी सब अलंगों को दिखलाना चाहे, तो अवश्य उसको दो तसवीरें लिखनी पड़ेंगी, एक में तो आंख नाक कान और मुंह इत्यादि नज़र पड़ेंगे, और दूसरी में चिहरे की पिछाड़ी, अर्थात् गुद्दी और सिरके बाल दृष्टि में आवेंगे, लेकिन भूगोल की तसवीर देखकर कोई ऐसा न समझे कि वह चक्कीके पाटों की तरह चिपटा है, वह तसवीर में चिपटा इस कारण मालूम होता है कि तसवीर में किसी चीज़ की भी उंचाई प्रत्यक्ष प्रकट नहीं होसकती। यह भी बख़ूबी समझ लेना चाहिये, कि सहज में गांव और शहर इत्यादि का पता लगने के वास्ते, और इस बात के लिये कि जो किसी विलायत का जुदा नक़्शा खिंचा हो, तो तुरंत यह जान सकें, कि वह विलायत भूमण्डल के किस खण्ड में कौन कौन सी विलायत से किस किस तरफ़ को पड़ती है, भूगोल के नक़्शेमें ठीक

बीचों बीच पूर्व से पश्चिम को एक लकीर, जिसका नाम विषुवत् रेखा है, खींचकर भूगोल को बराबर दो हिस्सों में अर्थात् उत्तर और दक्षिण बांट दिया है (१) और उस विषुवत् रेखाको ३६० अंशों में, जिसे अरबी में दर्जा कहते हैं, भाग करके प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उत्तर और दक्षिणकी तरफ़ खींच दी है, और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों में भाग देकर हर एक अंशमें पूर्व से पश्चिम को लकीरें खींच दी हैं, (२) निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के खाने बनगये हैं, कि जैसे चौपड़ और शत-रंज में घर बने रहते हैं, और इन्हीं घर अर्थात् लकीरों के अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानों का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फ़ासिला (३) भी मालूम होजाता है। जो लकीरें पूर्व से पश्चिम को खिंची हैं उन्हें अक्षांश और जो उत्तर से दक्षिण को उन्हें देशान्तर कहते हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् रेखा से करते हैं, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं जो नक़शे में इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर परसे खींची गई है। जैसे चौपड़ और शतरंज में घर की गिनती बोलने में उस स्थान का अ-

---

(१) भूगोल का नक़शा देखो ॥

(२) नक़शा छोटा होनेके कारन प्रत्येक अंशसे लकीर न खींच कर दस दस अंश के बाद लकीर खींची है ॥

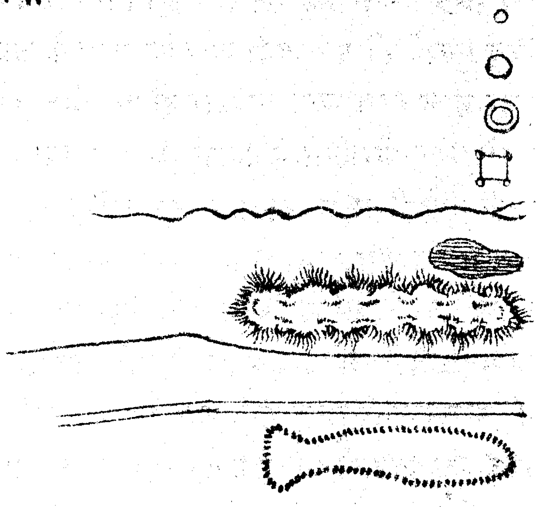
(३) पृथ्वी के घेरे को, जो २५०२० मील किसी जगहमें लिख आये हैं, ३६० दर्जों में बाटने से एक एक दर्जा ६९ ॥ मीलका पड़ेगा जब किसी जगह से फ़ासिला जानना मंज़ूरहो फ़ौरन् पर्कार से नाप कर देख लेवें कि उन दोनों केबीच कितने दर्जे का तफ़ावत् है ॥

नुभव होता है, उसी तरह अक्षांश और देशान्तर के अंश की गिनती कहने से नक़शे में उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो जाता है। गिनती अंशों की नक़शे में उन्हीं अंशों पर लिखी रहती है, और अंश के साठवें हिस्से को कला, और कला के साठवें हिस्से को विकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल में विषुवत् रेखा से उत्तर और दक्षिण उन दो स्थानों का नाम है, जहां देशान्तर की सारी लकीरें इकट्ठी होकर आपस में मिल जाती हैं। भूगोल के नक़शे में सिवाय ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान बिन्दी बिन्दी देकर पूर्व से पश्चिम को बने रहते हैं, प्रयोजन उससे इस बात का बतलाना है, कि इन बिन्दी की पहली दोनों लकीरें, जो विषुवत् रेखा से २३॥ अंश के तफ़ावत पर उत्तर और दक्षिण की तरफ़ खिचीं है, उनके दर्मियान के मुल्क में, सदा सूर्य के साम्हने रहने से, निहायत गर्मी होती है इसी वास्ते वह मुल्क गर्म सेर अथवा ग्रीष्म प्रधानक कहलाता है, और बाक़ी बिन्दी की दो लकीरें जो दोनों ध्रुवों से २३॥ अंश के फ़ासले पर दोनों तरफ़ खिंची हुई हैं, उनके अन्दर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश है, क्योंकि उस पर सूर्य की किरनें सदा तिरछी पड़ती हैं। इन सर्द सेर और गर्म सेर मुल्क के दर्मियान मोतदल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क बसा है अर्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द ॥

हम अभी ऊपर लिख आये हैं कि जिस तरह मकानों की तसवीर बन्ती है उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का नक़शा भी रचा है, परंतु मकान इत्यादि के चित्रों में तो उनके अवयव ज्यों के ज्यों उतार देते हैं, अर्थात् द्वार की जगह द्वार का आकार बनाते हैं, और दीवार की जगह दीवार का और भूगोल के नक़शों में उन नक़शों

का विस्तार बहुत बढ़जाने के भय से शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उनका पूरा आकार नहीं बनाते, नक़शे में इन्हीं चिन्हों को देखकर उनका अनुभव कर लेना चाहिये ॥

गांव
शहर
बड़ा शहर
क़िला
नदी
झील
पहाड़
कच्चीसड़क
पक्कीसड़क
देशसीमा



यह भी बात याद रखने की है कि किसी समय में इस सारी पृथ्वी पर ईश्वर की इच्छा से समुद्र का पानी छागया था, और ऊंचे से ऊंचे पहाड़ उस से डूब गए थे, इस बात को सारे मज़हब और सब मुल्क के आदमी मानते हैं कोई उसका नाम तूफ़ान बतलाता है, कोई प्रलय कहता है, पर समय में उसके तकरार है, जुदा जुदा मुल्क के आदमी जुदा जुदा काल उसके वास्ते ठहराते हैं, अब तक भी पहाड़ों पर समुद्र की मछलियों का हाड़ और सीप और शंख और घोंघे जो मिलते हैं, किसी काल में इस तूफ़ान के आने की गवाही देनेकेवास्ते बहुत हैं। यह भी किताब और पोथियों के देखने से मालूम होताहै कि एक

ही स्त्री पुरुष से हम सब पैदा हुए हैं मुसलमान और अंगरेज़ उस पहले पुरुष को नूह और हिन्दू वैवस्वत-मनु कहते हैं। ज्यों ज्यों औलाद बढ़ती गई मनुष्य संसार में फैलते गये, और नए नए गांव और नए नए नगर बसने लगे, जब लोग दुनिया में सब तरफ़ बसगये तो बमूजिब मुल्कों की गर्मी सर्दी और पैदायशों के जुदा जुदा क़ौमों के जुदा जुदा चाल ढाल और व्यवहार हो गए, जैसे सर्दमुल्कवाले सदा ऊनी कपड़े और पोस्तीनों में लिपटे रहते हैं, और गर्म मुल्कवाले केवल धोती दुपट्टेही से अपना काम चलाते हैं। सूरतें भी आब हवाकी तासीर से तबदील होगईं, एशिया के पश्चिम भाग और फ़रंगिस्तान के आदमी सब से अधिक सुन्दर और बुद्धिमान हैं, पर जो देश उत्तर अलंग अर्थात् ध्रुव से समीपहैं, वहांवाले नाटे होतेहैं, एशिया के पूर्व भागियों की नाक चिपटी गाल चौड़े और आंखें तिरछी और छोटी और अफ़रीकाके रहनेहारों की नाक फैलीहुई रङ्ग काला बाल घूंघरवाले और होंठ मोटे रहते हैं, और अमेरिका के असली बाशन्दों का रंग तांबे का सा लाल है। मज़हब भी इस अर्से में क़ई तरहके हो गए, और राजे भी हर एक क़ौम ने दूसरी क़ौमों के ज़ोर ज़ुलम से बचने के लिये अपने अपने जुदा बना लिये। निदान अब हम एक एक मुल्क का हाल जुदा जुदा पतेवार पढ़नेवालों का चित्त प्रसन्न करने के लिये इस ग्रन्थ में लिखते हैं। थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बड़े टुकड़ों से, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, पूर्व का खण्ड एशिया, पश्चिम का यूरुप अथवा फ़रंगिस्तान और दक्षिण का अफ़रीका। इन सबमें टापुओं समेत अटकल से प्राय: नव्वे करोड़ आदमी बसते हैं. और

उनकी भाषा भिन्न भिन्न प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेंगी। इन नव्वे करोड़ आदमी में से प्रायः पच्चीस करोड़ तो ईसाई मज़हब रखते हैं, अर्थात् क्रिस्तान हैं, पैंतीस करोड़ बुद्धका मत मानते हैं, दस करोड़ मुसलमान हैं, और दसही करोड़ के लगभग हिन्दू होवेंगे' बाक़ी दस करोड़ में और सब मज़हब के आदमी सोच लेने चाहिये ॥

एशिया

यह नाम यूनानी है, संस्कृत नाम हम लोगों को पृथ्वी के इन विभाग और मुल्क और नदी पहाड़ों के नहीं मिलते, इसी वास्ते नाचार अंगरेज़ी और फ़ारसी काम में लाने पड़े और प्लक्ष शाल्मलीक कुश क्रौञ्च शाक पुष्कर ये द्वीप, और दही दूध मधु मदिरा और इक्षु रस के समुद्र और सोने चांदी के पहाड़, जो संस्कृत ग्रन्थों में लिखे भी हैं तो अब उनका कहीं पता नहीं लगता, न जाने इन लिखने वालों ने क्या समझ के ऐसा लिखा था, पण्डित लोग कहते हैं कि बातें तो ग्रन्थों में सब सत्य लिखीं हैं, पर अब उनके ठीक अर्थ का समझानेवाला नहीं मिलता। जो कुछ हो, लेकिन हम तो वही लिखते हैं जो जब जिसका दिल चाहे अपनी आंखों से देखलेवे। जिस तरह खेत और गांव का सर्हद-सिवाना है उसी तरह बड़े मुल्कों की भी सीमा होती है। इस एशिया की सीमा उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र, और दक्षिण तरफ़ हिन्द का समुद्र, और पूर्व तरफ़ पासिफ़िक समुद्र, और पश्चिम तरफ़ रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी और स्वीज़ का डमरूमध्य अफ़रीका से, और मेडिटरेनियन और ब्लैकसी-नामक समुद्र की खाड़ी और डन और बलगा नदी और यूरल पहाड़ यूरुप से उसे जुदा करते हैं, और २ से लेकर ७७ उत्तर अक्षांश और २६

पूर्व देशान्तर से लेकर १७० पश्चिम देशान्तर तक विस्तृत है। इस का लम्बान पूर्व से पश्चिम को अधिक से अधिक प्राय: ७५०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को प्राय: ५००० मील और बिस्तार एक करोड़ पछहत्तर लाख मील मुरब्बा अर्थात् वर्गात्मक (१)

---

(१) वर्गात्मक उसे कहते हैं जो चारों तरफ़ बराबर हों, अर्थात् जितना चौड़ा हो उतनाही लम्बा, इसलिये जब हम किसी देश का बिस्तार वर्गात्मक मीलों में बतलावें, तो समझलो कि जितने वर्गात्मक मील हमने लिखे उत्तने ही टुकड़े एक एक मील के लम्बे और एक एक मील के चौड़े उस देश के हो सकते हैं जैसे कोई कपड़ा सोलह गिरह लम्बा और चार गिरह चौड़ा हो, तो हम उस कपड़े का बिस्तार चौंसठ गिरह वर्गात्मक बतलावेंगे, और फिर जो तुम उस कपड़े से गिरह गिरह भर लम्बे और गिरह गिरह भर चौड़े टुकड़े काटने लगो तो चौंसठ ही टुकड़े काटे जावेंगे, देश की धरती का प्रमाण जानने के लिये यह हिसाब बहुत अच्छा है, नहीं तो एक एक जगह की लम्बान चौड़ान बतला देने से उन के बिस्तार का कदापि ठीक अनुमान न हो सकेगा, क्योंकि देश किसी जगह में कम लम्बे चौड़े रहते हैं और किसी जगह में अधिक, कुछ पोथी के पत्रे की तरह सब तरफ़ बराबर नहीं होते। निदान जिस तरह गांव को बीघे से नापते हैं, उसी तरह देशों को वर्गात्मक मीलों से नापते हैं। अस्सी हाथ लम्बा और अस्सी हाथ चौड़ा बङ्गाली बीघा होता है, एक मील लम्बा और एकही मील चौड़ा, अर्थात् ३५२० हाथ लम्बा और ३५२० हाथ चौड़ा, एक वर्गात्मक मील होता है, इसी वर्गात्मक को अरबी में मुरब्बा कहते हैं॥

मील है। आदमी उस में अटकल से सवा चव्वन करोड़ बसते हैं। आबादी उसकी इस हिसाब से फ़ी मील मुरब्बा ३१ आदमी की पड़ती (१) है और एक सौ तेतालीस से अधिक भाषा बोली जाती हैं। पृथ्वी के इस भाग में ऐसे सर्द मुल्कों से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्म सेर तक बसे हैं, कि जिस में आदमी सूर्य के तेज से काले हो जाते हैं। मुसलमानों का मज़हब बहुत दूर दूर

---

(१) यह पड़ता फैलाने की तर्कीब मुल्क की आबादी जानने के लिये बहुत अच्छी है, मिरज़ापुर के ज़िले में सन् १८४८ के बीच खानःशुमारी के समय ८३१३८८ आदमी गिने गये थे, और बनारस के ज़िले में कुल्ल ७४१४२६। अब अनाड़ी लोग इस बात के सुनने से यही समझेंगे कि मिरज़ापुर बनारस से अधिक आबाद है, पर विद्वान लोग दोनों ज़िलों का बिस्तार देख फ़ी मील मुरब्बा पड़ता फैला लेते हैं, और इस हिकमत से सहज में जानलेते हैं, कि बनारस मिरज़ापुर से कुछ कम पचगुना अधिक आबाद है, क्योंकि मिरज़ापुर का विस्तार ५२८४ मील मुरब्बा है, और बनारस का कुल २०९५ मील मुरब्बा पड़ता फैलाने से मिरज़ापुर में फ़ी मील मुरब्बा १५८ आदमी पड़ते हैं, और बनारस में ७४५ आदमी यह वही हिसाब है कि जैसे एक के खेत में ४ मन गेहूं पैदा हुआ और दूसरे के में १० मन, पर जब मालूम हुआ कि दस मनवाले खेत में बीस बीघे धरती है, और चारमनवाले में दो ही बीघे तो साफ़ प्रकट होगया, कि चार मनवाले की धरती अधिक उपजाऊ है क्योंकि उसको फ़ी बीघे दो मन गेहूं पड़े और दस मनवाले को फ़ी बीघे कुल आध मन अर्थात् बीस सेर॥

तक फैला है, पर गिन्ती में बुद्ध के माननेवाले अधिक हैं। हिन्दुस्तानवाले वैदिक धर्म रखते हैं, और ईसा का मत अब तक पृथ्वी के इस विभाग में बहुत नहीं चला। एशिया का मुल्क अगली तवारीख़ और इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिससे हम सब मनुष्य उत्पन्न हुए, पृथ्वी के इसी भाग में पैदा हुआ था, और पृथ्वी के इसी भाग से सारी बातें बुद्ध विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुईं। पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग में प्रतापी और बलवान राजे हुए, और सब से पूर्व पृथ्वी के इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया। सिवाय इसके जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल औषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इस में पैदा होते हैं, ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे। एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं। आदौ हिन्दुस्तान, उसके पूर्व बर्म्हा, उसके दक्षिण स्याम, उसके दक्षिण मलाका, स्याम के पूर्व कोचीन, बर्म्हा के पूर्व और उत्तर चीन, उसके उत्तर एशियाईरूस, चीन के पूर्व जापान के टापू, हिन्दुस्तान के पश्चिम अफ़ग़ानिस्तान, उसके पश्चिम ईरान, चीन के पश्चिम तूरान, ईरान के पश्चिम अरब उसके उत्तर एशियाईरूम। बादशाहत इन सब विलायतों में स्वाधीन स्वेच्छाचारी हैं, और सदा से ऐसी ही चली आईं, अर्थात् बादशाह जो चाहे सो करे, कोई उसको रोक नहीं सकता, बादशाह के मुंह से निकला वही आईन है, मुल्क चाहे बर्बाद हो चाहे आबाद, प्रजा की सामर्थ्य नहीं कि उसकी आज्ञा टाल सके। इस ढब के राज्य में जब राजा धार्मिक और नैयायिक होता है, तब तो प्रजा को सुख चैन मिलता है, और नहीं तो लूट मार और बे इन्तिज़ामी मची रहती है, और तैमुर

और नादिर ऐसे बादशाह एक एक दिन में लाख लाख आदमी मर्द औरत और बच्चे बेगुनाह कटवा डालते हैं। केवल एक हिन्दुस्तान के बीच हम लोगों के भाग्यबल अब कुछ दिनों से आईनी बन्दोबस्त हुआ है, अर्थात् बादशाह का मक़दूर नहीं कि आईन के बख़िलाफ़ कुछ भी काम करसके। आईन बादशाह और रैयत दोनों की सम्पति साथ बनता है, जब तक रैयत राज़ी न हो बादशाह अपनी तरफ़ से कोई भी आईन जारी नहीं कर सकता, और रैयत काहे को ऐसे किसी आईन पर राज़ी होगी, कि जिस्से उसका नुक़सान है, पस इस बन्दोबस्त से बादशाह चाहे अच्छा हो चाहे बुरा इन्तिज़ाम में ख़लल नहीं पड़ता, और मुल्क की दिन पर दिन उन्नति होती जाती है। विशेष वर्णन इस आईन और पार्लीमेण्ट का अर्थात् जहां आईन बनता है, यूरूप देश के अन्तर्गत इंगलिस्तान की विलायत के साथ होगा, क्योंकि अब हिन्दुस्तान उसी बादशाह के ताबे है। हम लोगों को इतनी बुद्धि न होने के कारण कि अपने मुल्क के लिये आप आईन बनावें वहांवाले अपनी तरफ़ से कई बड़े योग्य साहिबों को चुनकर कौंसिल के नाम से यहां मुक़र्रर करते हैं, कि जिस में वे सम्मत होकर प्रजा के हितकारी आईन बनावें। इस कौंसिल का वर्णन हिन्दुस्तान के साथ होगा ॥ १५ मई १८३५

हिन्दुस्तान

यह मुल्क एशिया के दक्षिण भाग में ८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला गया

है। हिन्द और हिन्दुस्तान इस मुल्क का नाम मुसलमानों ने रक्खा, और इंडिया अङ्गरेज़ लोग पुकारते हैं, जड़ इन दोनों नाम की सिन्ध नदी मालूम पड़ती है, क्योंकि अंगरेज़ लोग तो अब भी उस नदी को इंडस कहते हैं। संस्कृतवालों ने उसका नाम भारतवर्ष इसलिये रक्खा कि उनके मत बमूजिब किसी समय में राजा भरत ने यहां एक छत्र राज किया था। सीमा इस देश की जुदा जुदा समय में जुदा जुदा तरह पर रही है कभी लोगों ने ब्रह्मा स्याम मलाका और कोचीन को भी इसी में गिना, और कभी काबुल क़न्दहार और तिब्बत को इस में मिलाया, पर हम यहां वही सीमा लिखते हैं जो अब इस काल में बरती जाती है और अंगरेज़ी नक़्शों में लिखी रहती है, और इसी सीमा के अन्तर्गत देश को हिन्दुस्तान कहना चाहिये क्योंकि ब्रह्मा और काबुल इत्यादि देशवाले अपना चाल चलन मज़हब और राज्य इन दिनों हम लोगों से ऐसा जुदा रखते हैं कि अब उनको जुदा ही विलायत कहना उचित है। निदान यह हिन्दुस्तान जो पान की तरह कुछ त्रिकोणसा और नोक उसकी दक्षिण को निकली हुई नक़्शे में देख पड़ता है, दक्षिण तरफ़ समुद्र से घिरा है और उत्तर तरफ़ उसके हिमालय का पर्वत पड़ा है, पश्चिम तरफ़ सिन्धु पार जिसे अटक का दर्या भी कहते हैं सुलैमान पर्वत है और पूर्व तरफ़ उसके मनीपुर के जंगल-पहाड़ों से परे ब्रह्मा का मुल्क है। इसकी लंबान कुमारी-अन्तरीप से, जो दक्षिण में सेतुबन्धरामेश्वर के भी अगाड़ी है, कश्मीर तक प्रायः अठारह सौ मील होगी, और चौड़ान मुंज-अन्तरीप से जो करांची-बन्दर से भी बढ़ कर पश्चिम में है और जिसे वहांवाले रासमुअर्री भी कहते हैं ब्रह्मा देश की सीमा तक प्रायः सोलह सौ मील है। विस्तार इसका कुछ न्यूनाधिक बारह लाख मील मुरब्बा वत-

लाते हैं, और आदमी इसमें अटकल से चौदह करोड़ बस्ते हैं। पड़ता फैलाने से फ़ी मील मुरब्बा कुछ ऊपर ११६ आदमी पड़ेंगे॥

हम अभी ऊपर इस ग्रन्थ में किसी जगह एशियाकी बड़ाई लिख आये हैं पर जानना चाहिये कि एशियामें भी यह देश सबसे अधिक प्रख्यात था। यह देश किसी समय में विद्या और धनके लिये सब में शिरोमणि गिना जाता था। सारे पृथ्वी के मनुष्य इस देश के देखने की अभिलाषा रखते थे, और जो बणिक् बेवपारी यहां तक आते थे जन्मभरको रोटियों से निश्चिन्त होजाते थे। यहां के राजाओं से सारे बादशाह दबते थे और इनका वे लोग सब तरह से मन रखतेथे। देखो इन फ़रंगिस्तान वालोंने, जो अब विद्याको भी विद्या सिखाते हैं, पहले ही पहल रूमिया से पढ़ने लिखने की सुधबुध पाई, रूमी यूनानियों के चेले थे, और यूनानी और मिसरवाले हिन्दुस्तान में आकर यहां के पंडितों से विद्या उपार्ज्जन कर गये थे। केवल सिन्धु नदी के तटस्थ दो चार जिले इस देशके जो कुछ दिन ईरान के बड़े बादशाह दाराशाह के क़ब्जेमें रहे तो कहते हैं कि जितनी आमदनी सारे ईरानके मुल्क की उसके ख़ज़ाने में आतीथी उसकी एक तिहाई निराले इन ज़िलों से उसे हाथ लगती थी, बरन ईरानवाले सब उसे कर में चांदी देते थे और इन ज़िलों के ज़मींदार सोना पहुंचाते थे। इस टूटे हालमें भी सन् १७३९ के दर्मियान नादिरशाह यहां से सत्तर करोड़ का माल लेगया कि जिसमें केवल एक तख़्त ताऊस बादशाह के बैठने का सात करोड़ से अधिक का था। जब तक राह न मालूम थी तो फ़रंगिस्तानवाले समुद्र से इस मुल्क में जहाज़ लाने के वास्ते कैसे अधैर्य्य और व्याकुल थे, कितने जहाज़ उनके इस राह की खोजमें मारे गये और कितने आदमी इसी लालसा में समुद्र की

मछलियों के ग्रास हुए। सिकन्दर ऐसा महीपाल इस मुल्क लेने की कामनाही में मरा, और बाबिल के स्वामी सिल्यूकस और ईरान के अधिपति नौशेरवां जैसे बादशाहों को इस देश के राजाओं के लिये अपनी बेटियां देनी पड़ीं। सिल्यूकस की बेटी महाराज चन्द्रगुप्त को आई थी और नौशेरवां की बेटी उदयपुरके राणाने ब्याही। निदान इस देश की अभिलाषा सारे देशों के लोग रखते थे, और चारों तरफ़ से दौड़ दौड़ कर यहां आते थे, और यहांवाले और सब देशों को तुच्छ जैसा समझ कर कभी बाहर न जाते, और सदा अपनेही स्थान में स्थिर बने रहते कौन ऐसी वस्तु थी जो इस देशमें न हो और ये उसकी खोजके लिये बाहर जावे, ईश्वर की कृपा से इनको इसी जगह सब कुछ मौजूद था॥

पहाड़ इस मुल्क में कम हैं और मैदान बहुत, और उन मैदानों में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं कि सारा मुल्क मानों बागकी तरह सिंच रहा है। हिमालय पर्वतजो इस मुल्क की उत्तर सीमा है दुनिया के सब पर्वतों से ऊंचा है। पूर्व में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, पश्चिम से उस स्थान तक जहां सिन्धुनदी इसे काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड़ की लम्बान प्राय: दो हजार मील होवेगी (१) और चौड़ान अनुमान कुछ कम चारसौ मील। हिमा-

(१) इस पहाड़ की अवधि इतनी ही मत समझना जितनी यहां लिखी गई। यहां उतना ही लिखना उचित है जितना हिन्दुस्तान के साथ मिला है और हिमालय के नाम से पुकारा जाता है बाक़ी का हाल दूसरी विलायतों में लिखा जावेगा यह पर्वत समुद्र तक चला गया है॥

चल और हिमाद्रि भी उसी का नामहै। हिम संस्कृत में बर्फ़ को कहते हैं। इस पहाड़ के शृंग सदा बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं, जो कभी कहीं से कुछ बर्फ़ हट जाती या गिर पड़ती है, तो सैकड़ों हाथ ऊंचे केवल बर्फ़ के करारे दिखलाइ देने लगते हैं जो कोई आदमी हिन्दुस्तान के मैदान से इस कोहिस्तान में जावे, तो पहले उसे छोटे पहाड़ों पर चढ़ना उतरना पड़ता है ज्यों ज्यों वह उत्तर को इन पहाड़ों में बढ़ता जाता है पहाड़ों की उचान भी बढ़ती जाती हैं, यहां तक कि जाते जाते दस पन्द्रह अथवा बीस दिन में वह उन पहाड़ों की जड़ में पहुंच जाता है कि जिनके शृंग सदा हिम से आच्छादित रहते हैं। इन पहाड़ों पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नहीं पहुंच सकते, वरन बादल भी कटिमेखला से उनके अधोभागहीं में लटकते रहजाते हैं, शृङ्ग तक कदापि नहीं चढ़ सकते। हट्टू से पहाड़ पर, जो शिमलासे तीन मंज़िल आगे दस हज़ार फ़ुट समुद्र (१) के जल से ऊंचा है

---

(१) पहाड़ उचान समुद्र के जल से इस वास्ते लिखते हैं कि पृथ्वी कहीं ऊंची कहीं नीची, हिसाब सब जगह में ठीक नहीं बैठता, और समुद्र का जल सब स्थान में बराबर है। बहुत अनजन आदमी पहाड़ों की उचान चढ़ाई के हिसाब से बतलाते हैं, पर याद रखो कि इस ढब से कदापि उस्की उचान का ठीक अनुमान नहीं हो सकता क्योंकि किसी पहाड़ में ढालो थोड़ा रहता है और किसी में बहुत इस लिये हमने सब जगह पहाड़ों की खड़ी उचान का हिसाब लिखाहै, जैसे देखो कसौली के पहाड़को कालका से सड़ककी राह छ कोस चढ़ाई लगती है, परजो सड़क छोड़ कर कोई आदमी दूसरी तरफ़ से उस पर सीधा जा सके तो उसे अनुमान दो कोस से अधिक

किसी दिन जब आकाश निर्म्मल हो चढ़ के इन बर्फीपहाड़ों की शोभा देखनी चाहिये पूर्व पश्चिम और दक्षिण को जहां तक निगाह जाती है सौ सौ दो दो सौ मील तक पहाड़ ही पहाड़ सवा सवा सौ हाथ तक ऊंचे और बीस बीस हाथ तक जड़ में मोटे पेडों के जङ्गलों से मानो हरे कपड़े पहने हुए जिन में नदियों का पानी, जगह जगह पर उनकी जड़ों में सूर्य्य की आभा से चमकता हुआ कनारी गोटा लगा है समुद्र के तरङ्ग की तरह ऊंचे नीचे दिखलाई देते हैं और उत्तर दिशा में अर्द्धचन्द्राकार कोई दो सौ कोस के पल्ले तक बर्फी पहाड़ नज़र पड़ते हैं ऐसे ऊंचे कि मानो ई-श्वर ने आकाश के सहारे के लिये यही खम्भे रचे, धूप के तेज से ऐसे चमकते कि मानो पृथ्वी के हाथ में यह उजले हुए चांदी के कङ्कण पड़े हैं, और फिर जो अपने पैरों के नीचे निगाह करो तो बाग की क्यारियों की तरह सैकड़ों रंग के फूल खिल रहे हैं, बरन बागों में वे फूल कहां पाइए पहाड़ों के पानी के गिरने का शोर और ठंढी ठंढी हवा की झकोर यह शोभा देखेही बन आवे लिख के कोई कहां तक बतावे। जो लोग इन पहाड़ों को पार होकर हि-

न चढ़ना पड़ेगा. और हिसाब से उस की खड़ी उचान समुद्र के जल से कुल कुछ ऊपर चार हज़ार हाथ अथवा छ हज़ार फ़ुट है. अर्थात् जो कसौली के शृंग पर कोई कूवा खोदना चाहे तो जब चार हज़ार हाथ गहरा खुद चुकेगा तब उसकी हाथ समुद्र के जल से बराबर गिनी जायगी, अथवा कसौली के बराबर ऊंचा कोई मनार समुद्र के ठीक तट पर बनाना चाहे तो चार हज़ार हाथ ऊंचा बनाना पड़ेगा तीन फ़ुट का एक गज़ होता है और एक गज़ में दो हाथ होते हैं ॥

न्दुस्तान से तिब्बत को जाने चाहते हैं, वे उन नदियों के किनारे किनारे, जो इन पहाड़ों को काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आई हैं, पहाड़ों की जड़ ही जड़ में चल कर, अथवा उन घाटियों पर, जो किसी किसी जगह में ऐसी ऊंची नहीं हैं जिन पर जान न बच सके, चढ़ कर पार हो जाते हैं। शृंगों पर, अर्थात् इन पहाड़ों की चोटियों पर, कदापि कोई नहीं जासकता। सब से ऊंचा शृंग उसका धवलगिरि जहां से गंडक नदी निकली है समुद्र के जल से कुछ ऊपर अठाईस हज़ार फ़ुट ऊंचा है। जमनोत्री का पहाड़ जिसके नीचे से जमना निकली है प्रायः छब्बीस हज़ार फ़ुट, और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतलज नदी के बीच में है, प्रायः तेईस हज़ार फ़ुट ऊंचा है। नीति-घाटी, जिसे लीति भी कहते हैं, बदरीनाथ से ईशान कोन की तरफ़ दौली नदी के किनारे कुछ ऊपर सोलह हज़ार फ़ुट समुद्र से बलन्द है। कमाऊं-गढ़वाल-वाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीन को जाते हैं। श्रेणी हिमालय पहाड़ की सिन्धु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक एक ही चली गई है, पर उसके जुदा जुदा टुकड़े और जुदा जुदा शृंग जुदा जुदा नाम से पुकारे जाते हैं, जैसा अभी ऊपर शिमला हद्दू धवलगिरि जमनोत्री पुरगिल इत्यादि लिख आये। इन पहाड़ों में प्रायः तेरह हज़ार फ़ुट की ऊंचाई तक तो जङ्गल भी होता है और आदमी भी बस्ते और खेती बारी करते हैं। फिर तेरह हज़ार फ़ुट से ऊपर बर्फ़ ही बर्फ़ रहती है, जो पहाड़ तेरह हज़ार फ़ुट से कम और सात हज़ार से अधिक ऊंचे हैं उन पर केवल जाड़े के दिनों में थोड़ी बहुत बर्फ़ गिर जाती है। अजब महिमा है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, ज्यों ज्यों ऊपर चढ़ते जाओ दरख़्त झाड़ी फल फूल और खेतियों की सूरत बदलती जाती है, कहां तो

अभी उनकी जड़ में गर्म मुल्क के पेड़ आम इमली इत्यादि देखे थे, और कहां थोड़ी ही दूर बढ़ कर सर्द मुल्क की पैदाइशेंबान् बरास चील केलो देवदार इत्यादि दिखलाई देने लगे, यहां तक कि फिर बर्फ़ की हद के पास सिवाय भोजपत्र के और कुछ भी नहीं उपजता। एकही निगाह में गर्मी सर्दी बरसात तीनों मौसिम नजर पड़जाते हैं। अधोभाग में गर्मी और गर्मी की खेतियां, जो पहाड़ी लोग सीढ़ियों की तरह पहाड़ों पर दर्जा बदर्जा बोते चले जाते हैं और झरनों के पानी से अनायास सिंचा करते हैं, मध्य में जो बादल घिर आये तो बरसात और गरजना तड़पना, और ऊपर फिर जाड़ा और बर्फ़ है। दस कोस के तफ़ावत में तीनों मौसिम की चीज़ पैदा होसकती हैं। जोरार्ड साहिब पुरगिल पहाड़ पर बीस हज़ार फ़ुट तक ऊंचे चढ़े थे, इस्से अधिक ऊंचे इन पहाड़ों पर किसी आदमी का जाना अब तक सुनने में नहीं आया। पन्द्रह हज़ार फ़ुट से आगे बढ़ने पर सांस रुकने और सिर और छाती में दर्द होने लगता है। शिमला मंसूरी इत्यादि स्थानों में जहां सर्कार ने पत्थर काटकर सड़क निकाल दी हैं वहां चढ़ाव उतराव तो अवश्य रहता है पर लोग बे खटके घोड़े दौड़ाते चले जाते हैं। बाक़ी और सब जगह में जहां सड़कें नहीं, रस्ता इन पहाड़ों में बहुत बिकट है, कहीं दीवार की तरह खड़े पहाड़ों में उन की दरारों के दर्मियान खूंटियां गाड़ कर और उन खूंटियोंपर लकड़ियां रखकर उन लकड़ियों के सहारे से चलते हैं, और कहीं घास की जड़ पकड़ पकड़ कर बन्दरों की तरह हाथके बल इन पहाड़ों पर चढ़ते हैं, जो पैर के तले निगाह करो तो कई सौ हाथ नीचे दर्या का पानी इस ज़ोर के साथ पत्थरों से टकरा रहाहै कि जिसे देखकर सिर घूमे, और जो सिर पर नज़र उठाओ तो वह पहाड़ दीवार सा

इतना ऊंचा दिखलाई देवे कि जिसे देखके आंख तिरमिरा जावे, ऐसी बिकट राहों का हाल भी सुनने से रोंघटे खड़े होते हैं चलनेवालों का तो जी ही जानता होगा। हिमालय के सिवा इस मुल्क में और भी जो सब पहाड़ बर्णन योग्य हैं उनमें से विन्ध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है खम्भात की खाड़ी से नर्मदा नदीके उत्तर उत्तर ज़िलै भागलपुर में गंगा के किनारे तक चला आया है; पर उंचाई उस्की अनुमान दो अढ़ाई हज़ार फुट से अधिक कहीं नहीं। सह्याद्रि विन्ध्य के पश्चिम सिरे से लेकर समुद्र के तट से निकट ही निकट कुमारी अन्तरीप तक चला गया है। अंगरेज़ लोग इसे पश्चिम घाट बोलते हैं। मलयागिर इसी के दक्षिण भाग का नाम है। सह्याद्रि के साम्हने बंगाले की खाड़ी के निकट कावेरी से विन्ध्यके पूर्ब सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्ब्बघाट बोलते हैं। इन पश्चिम और पूर्ब्बघाट के बीचमें दक्षिण तरफ़ जो पहाड़ उस्का नाम नीलगिरि है। यद्यपि इन पहाड़ों में पानी और जंगल की बहुतायत से बड़े बड़े रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृंग उन के पांच छ हजार फुट से अधिक ऊंचे कोई नहीं, केवल एक मूरचूर्तिबेत नीलगिरि में कुछ ऊपर आठ हज़ार फुट ऊंचाहै ॥

अब उन नदियों का बयान सुनो जो इन पहाड़ों में से निकलती हैं। मुख्य उनमें गंगा जमना सरयू गण्डक शोण कोसी तिष्ठा चम्बल सिन्धु झेलम चनाब रावी व्यासा सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा तापी महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं। गंगा इस देशकी प्रधान नदी जिसे संस्कृत में भागीरथी जान्हवी इत्यादि बहुतेरे नामों से पुकारते हैं, हिमालय से निकलकर पन्द्रह सौ मील बहनेके बाद अनेक प्रवाहों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है। जिस स्थान से यह निकली है

उसे गंगोत्री अथवा गंगावतारी और गोमुख भी कहते हैं, वहां कोई तीन सौ फुट ऊंचा एक बर्फ़ का ढेर है, उसी के नीचे एक मोखे से इस गंगा की धारा कुछ न्यूनाधिक अठारह हाथ चौड़ी और अनुमान हाथ या दोहाथ गहरी निकलती है, कि जोफिर और नदियोंका पानी लेकर पांच कोस के पाट से समुद्र में मिलती है। गंगाका उत्पत्तिस्थान अर्थात् गंगोत्री समुद्र के जल से कुछ कम चौदह हज़ार फुट ऊंचा है। जिस जगह में यात्रियों के दर्शन के लिये मन्दिर बना है वहां से यह स्थान ग्यारह मील आगे है। हरिद्वार से, जो समुद्र के जल से एक हज़ार फुट ऊंचा है, यह नदी पहाड़ों को छोड़ मैदान में बहती है। राजमहल से कुछ दूर आगे बढ़कर इस गंगा की कई धारा होगई, पर जो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगली के नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है हिन्दू उसी को असली गंगा समझते हैं, और जहां इसका समुद्र से संगम हुआ बड़ा तीर्थ मानते हैं। वहां कपिल मुनि का एक मन्दिर बना है, और जो धारा सब से बड़ी पूर्व में ब्रह्मपुत्र के साथ मिलकर दखन शहबाज़पुर नाम टापू के साम्हने समुद्र में गिरती है उसे पद्मा पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, और उसका माहात्म्य असली गंगा के बराबर नहीं मानते इस सौ कोस के तफ़ावत में जो इन दोनों धारा के बीच पड़ा है गंगा की और सब सैकड़ों धारा समुद्र से मिलती हैं। पानी की बहुतायत से इस जगह में बड़ा दलदल और अति सघन जंगल रहता है। इसी जंगल का नाम सुन्दर बनहै, कि जो वृक्षों की शाखा पर कलोलें करते हुए बंदर लंगूर और रंग बरंग के मधुर मंजुल शब्द करनेवाले पक्षियों की बहुतायत से पथिक जनों का जिनकी नावें उस राह से आती हैं, मन लुभाता है, और अति सुन्दर और मनोहर मालूम पड़ता है, पर जिस

में सर्प सिंह इत्यादि दुष्ट जीव जन्तु भी इतने रहते हैं कि ऐसा साहसवाला कोई नहीं जो अपनी नौका से उतर कर इस जंगल के भीतर घुसे, बरन नौकामें भी, जो बीच धारा में लंगर पर रहती है, रात को चौकस रहना पड़ता है, नहीं तो आश्चर्य नहीं जो कोई शेर पानी में तैर कर नाव से किसी आदमी को उठा ले जावे। आबहवा भी इस जंगल की निहायत ख़राब है। बरसात में गंगा का पानी दस ग्यारह हाथ ऊंचा बढ़ जाता है और बंगाले के मुल्क में इस नदी के दोनों किनारों पर पचास पचास कोस तक जलही जल दिखलाई देने लगता है। धानों के खेत में नावें चलती हैं और गांव जगह जगह पर पानी के बीच में टापुओं की तरह देख पड़ते हैं। हिन्दुओं का यह मत है कि गंगा में नहाने से सारे पाप धो जाते हैं, और कहते हैं कि उसका पानी चाहे जितने दिन रक्खो बिगड़ता कभी नहीं, बरन उसका पीना बहुत गुणकारी समझते हैं। अबदुल हकीम खां जो सन् १७९२ में बीजापुर के ज़िले के दर्मियान शाहनूर का नव्वाब था मुसलमान होकर भी सिवाय गंगा जल के कभी कोई दूसरा पानी न पीता, और पांच सौ कोस से इस नदी का पानी मंगवाता, जो कुछ हो गंगा से इस देशवालों का बड़ा उपकार होता है, लाखों बीघे खेती केवल इसी के जल से होती है, और करोड़ों काम इन लोगों के इसमें नाव चलने से निकलते हैं, केवल जलंघी भागीरथी और माथाभंगा इसकी इन तीन धारा की राह में कम से कम अस्सी हजार नाव साल भरमें आती जाती हैं, बरन कलकत्ते तक तो इस नदी में समुद्र से जहाज़ भी आते हैं। जमना जिस का शुद्ध नाम यमुनाहै, और जिसे संस्कृत में कालिन्द्री इत्यादि नामों सेभी पुकारते हैं, गंगोत्री से कुछ दूर पश्चिम हिमालय में जमनोत्री के पहाड़ से निकलकर कुछ कम आठ सौ मील बहती हुई प्रयाग

के नीचे, जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गंगा में मिल जाती है। इन दोनों नदियों के संगम को हिन्दू लोग त्रिवेनी कहते हैं, और बहुत ही बड़ा तीर्थ मानते हैं। अगले समय में ये लोग दूसरे जन्म में अपना मन वाञ्छित फल पाने के निश्चय पर अक्सर इस तीर्थ में अपना सिर आरे से चिरवा डालते थे, शाहजहां बादशाह ने यह काम बुरा समझकर मौकूफ़ कर दिया, और वह आरा भी तुड़वा डाला। कपतान हजसन साहिब जमनोत्री का हाल इस तरह पर लिखते हैं, कि जमनोत्री के पहाड़ की नैर्ऋत अलंग में कुछ ऊपर दस हज़ार फ़ुट समुद्र से ऊंचे एक बर्फ़ के टुकड़े के नीचे से, जो उस समय साठ गज़ चौड़ा और तेरह गज़ मोटा था, यह नदी कोई गज भर चौड़ी और पांच चार अंगुल गहरी निकलती है, उस बर्फ़ के टुकड़े में एक मोखा था, कपतान साहिब उस मोखे की राह उस के अंदर चले गए, तो वहां जाकर क्या देखते हैं, कि उस बर्फ़ की छत के नीचे पहाड़ के पत्थरों में बहुत से छेद हैं, और उन छेदों में से अदहन की तरह खौलता हुआ पानी निकलता है। निदान यही पानी जमना का जड़ है, पर पहाड़ छोड़ कर जब यह मैदान में पहुंचती है, तो फिर इतनी बड़ी है कि बड़े बड़े नाव बेड़े इसमें चलते हैं। सरयू जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते हैं, और गण्डक अथवा गण्डकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्टा जिसे संस्कृत में तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदियां हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ों से निकल कर पहली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने, तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेती हुई नवाबगंज के पास, गंगा से मिलती हैं। गण्डक में सालग्राम

मिलते हैं इसलिये उसे सालग्रामी भी बोलते हैं। कहते हैं कि हिमालय के उत्तर भाग में मुक्तिनाथ के पास गण्डक के किनारे जो एक पर्ब्बत है यह नदी सालग्राम को उसी में से वहालाती है। हिन्दू तो सालग्राम को साक्षात विष्णु का अवतार समझते हैं, और अंगरेज़ लोग उसे अमोनैट कहते हैं, और बतलाते हैं कि जिस को हिन्दू चक्र का चिन्ह जानते हैं वह तूफ़ान के समय में जो सब समुद्र के जीव पहाड़ों में दवगए थे उनमें से एक प्रकार के छोटे से जानवर का निशान है। इस जाति के जानवर अब तक भी समुद्र में मौजूद हैं और इस प्रकार के अङ्कित पत्थर और भी बहुत पहाड़ों में मिलते हैं। गण्डक में तैरना और करतोया में नहाना हिन्दुओं के मत बमूजिब मना है, और इसी तरह कर्मनाशा का, जो एक छोटी सी नदी बनारस और बिहार के ज़िलों के बीच बह कर गंगा में गिरती है, पानी छूने के लिये मनाही है। चम्बल जिसे संस्कृत में चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों विंध्याचल से निकल कर पहली तो इटावे से बारह कोस नीचे जमना में गिरती है और दूसरी शरयू और गण्डक के मुहानों के बीच में छपरे के साम्हने दक्षिण से आकर गंगा में मिलती है। सिन्धु नदी, जिसे अटक का दर्या और अंगरेज़ लोग इण्डस कहते हैं, हिमालय के पार गारू-शहर के पास कैलास पर्ब्बत की उत्तर अलङ्ग से निकली है, और सत्तरह सौ मील से ऊपर बह कर कई धारा हो, कि जिस में सब से बड़ी का पाट मुहाने पर छ कोस से कम नहीं है, हिन्दुस्तान की पश्चिम दिशा में समुद्र से मिलती है। अटक के नीचे पहाड़ों में जगह की तंगी से यह दरिया बड़े ज़ोर शोर से बहता है, पाट वहां पर कुछ ऊपर पांच सौ हाथ होगा, पर पानी बहुत गहरा और नावों को उस जगह में बड़ा ही डर रहता है, जो कहीं पहाड़ से

टक्कर खावें तो एक दम में टुकड़े टुकड़े हो जावें। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र में सिन्धु-पार जाना मना है, लेकिन काम पड़ने से सब जाते हैं, बरन अगले ज़माने में हमारे देश के राजाओं ने सिन्धु पार उतरकर बहुत मुल्क फ़तह किये हैं। झेलम चनाब रावी व्यासा और सतलज ये पांचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पञ्चनद के नाम से मिट्ठनकोट के नीचे सिन्धु में गिरती हैं, और इन्हीं पांच नदियों से सिंचा हुआ देश पंजाब अथवा पंचनद कहलाता है। इन में से एक सतलज तो हिमालय के उत्तर भाग में मानसरोवर के पास रावण ह्रद से निकली है, और बाक़ी चारों हिमालय की दक्षिण अलंग से निकलती हैं। झेलम, जिसे शास्त्र में वितस्ता लिखा है, और कुछ ऊपर चार सौ मील बहकर झंग से दस कोस नीचे चनाब में मिल जाती है, और रावी भी जिसका संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई मुलतान से बीस कोस ऊपर इसी चनाब से आमिलती है। व्यासा जिसे विपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान दो सौ मील बहकर हरीके पत्तन के पास सतलज से मिलती है, उसकी थाह में चोरबालू अकसर जगह है इस कारन जाड़ों में जब पानी घट जाता है पायाब उतरने में बहुत खबरदारी रखनी पड़ती है बरन किनारों पर संभल संभल के पैर धरते हैं, पगडंडी से कदापि बाहर नहीं जाते, नहीं तुरत बालू में गड़ जावें, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रु है, कुछ ऊपर आठ सौ मील बहकर बहावलपुर से बीस कोस नीचे चनाब से मिल पंजनद के नाम से अनुमान तीस कोस बह कर मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आए हैं, सिन्धु में जा गिरती है। चनाब, जिसे संस्कृत में चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय में अपने निकास से मिट्ठन कोट

तक कुछ ऊपर छ सौ मील लम्बी है। पहाड़ों में इन नदियों के दर्मियान जहां पत्थर से पानी टकराने के सबब नावों का गुज़र हर्गिज़ नहीं हो सकता झूले अथवा छीके पर पार होते हैं, या मशकों पर चढ़कर उतर जाते हैं। झूला उसे कहते हैं कि जो नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक बराबर कई रस्से बांधकर उन्हें तख्तों से पाट देते हैं, आदमी उन तख्तों पर अपने पांव से चलकर पार हो जाते हैं, यद्यपि अजनबी आदमी को इन पर से जाने में बड़ा डर लगता है, क्योंकि चौड़ान उसकी बहुधा हाथ दो हाथ से अधिक नहीं रहती, और पाट नदियों का सौ सौ दो दो सौ हाथ होता है, और सहारा हाथ से थामने को केवल उन्हीं रस्सों का मिलता है, पर छीका इस से भी बुरा है वह एक रस्सा होता है, इस पार से उस पार बंधा हुआ, और उसमें एक छीका लटका हुआ, और फिर छीके में एक रस्सी बंधी हुई आदमी उस छीके में बैठ जाता है, तब मल्लाह उसे उस रस्सी से, जिसका एक सिरा उस छीके में बंधा हुआ और दूसरा दूसरे किनारे पर उनके हाथ में, रहता है, खींच लेते हैं; जब छीका बीच में पहुँचकर रस्सी के झटकों से हिलने लगता है और नीचे दर्या समुद्र की तरह पत्थरों से टकराता हुआ देख पड़ता है, तब अनजान आदमी का तो होश उड़ जाता है, और क्योंकर न उड़े, कि जो रस्सी टूटे, तो मीयां बीच ही में लटकते रह जांय और जो रस्सा टूटे तो फिर दर्या में गोते खांय। मशक पर ऐसी दहशत नहीं है, जहां पानी का ज़ोर बहुत नहीं होता वहां मल्लाह, जिसे पहाड़ में दर्याई कहते हैं, अपनी मशक पर पेट के बल पड़ जाता है और पार होनेवाला उसकी पीठ पर दुज़ानू हो बैठता है वह मल्लाह अपने पैरों की तो पतवार बनाता है, और दोनों

हाथों में दो चप्पू रखता है, उन्हीं से खेकर पार पहुँच जाता है। यह मशक रोझ अथवा बैल के चमड़े की बनती है और बहुत बड़ी होती है। ब्रह्मपुत्र जिसे तिब्बतवाले सांपू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उत्तर अलंग से निकलकर कुछ ऊपर सोलह सौ मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गंगा में मिल जाता है। नर्मदा शोण के उद्गम-स्थान से पास ही निकलकर ७०० मील बहती हुई भड़ौंच के पास खम्भात की खाड़ी में जा गिरती है; और उसके मुहाने से कुछ दूर दक्षिण सूरत से दस कोस नीचे तापी भी जो बैतूल के पास पहाड़ से निकली है, साढ़े चार सौ मील बह कर समुद्र से मिल गई है। महानदी नागपुर के इलाक़े से निकल कर पांच सौ मील बहती हुई कटक के पास कई धारा होकर समुद्र में गिरी है। गोदावरी पश्चिम घाट में त्रिम्बक से निकलकर बरदा और बानगंगा को, जो दोनों नदियां गोंदवाने के इलाक़े से निकली हैं, लेती हुई नौ सौ मील बहके राजमहेन्द्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्हीं पहाड़ों में सितारे के नज़दीक महाबलेश्वर से निकलकर मालपर्वगतपर्व भीमा, जिसे संस्कृत में भीमरथी लिखा है, तुंगभद्रा इत्यादि नदियों को, जो उन्हीं पश्चिम घाट के पहाड़ों से निकली हैं, लेती हुई सात सौ मील बहके मछलीबन्दर के पास समुद्र से मिल गई है। जितने क़िस्म के क़ीमती पत्थर हीरा लसनिया इत्यादि इस नदी के बालू में मिलते हैं उतने और किसी में भी हाथ नहीं लगते। और कावेरी नीलगिरि में उतकमन्द अथवा उटकमण्ड से निकलकर कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई तिरुच्चिनापल्ली से थोड़ीदूर आगे समुद्र में खप गई है। दक्षिण के पहाड़ों में इन कृष्णा कावेरी इत्यादि नदियों के दर्मियान जहां नाव का गुजर नहीं हो सकता, बांस की

टोकरी में, जो चमड़ों से मढ़ी रहती है, बैठकर पार उतरते हैं। निदान मुख्य नदियां तो यही हैं जिनका वर्णन हुआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं कि जिनकी गिनती बतलाना भी कठिन है, पर उन में से बहुत इन्हीं ऊपर लिखी हुई नदियों में मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात में सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ से निकली हैं, वे गर्मी में भी बर्फ़ गलने के सबब कुछ थोड़ी बहुत बढ़ जाती हैं। नक़शे में नदियों का बहाव देखने से देश का ऊंचा नीचा होना भी बख़ूबी मालूम हो जाता है, जहां से नदियां निकलती हैं वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उस से नीची और ढाल होती है॥

नहर बड़ी इस मुल्क में दोही हैं एक तो जमना की जो पहाड़ से काटकर दिल्ली में लाये हैं, और जिसका एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुंचकर वहां रेगिस्तान में खप जाता है, और दूसरी गंगा की, जो हरिद्वार से काटकर दुआबे में लाए हैं। पहली तो फ़ीरोज़शाहतुग़लक, जो सन् १३५१ में तख़्त पर बैठा था, पहाड़ से सफ़ेदों के परगने तक जो दिल्ली से अनुमान तीस कोस होवेगा, और शाहजहां सफ़ेदों से दिल्ली तक लाया था, लेकिन फिर बहुत दिनों तक बेमरम्मत पड़ी रहने से बिलकुल खुश्क होगई थी, सो अब सरकार अंगरेज़ी ने बख़ूबी मरम्मत करा दी, और पानी उसी तरह से जारी हो गया, लोगों को बड़ा आराम हुआ दिल्लीवालों के मानों सूखे खेत फिर लहलहाए और दूसरी सरकार की तरफ़ से बनकर तैयार हुई है। इस नहर के तैयार होजाने से अब दुर्भिक्ष अन्तर्वेद में कभी न पड़ेगा॥

झील हिन्दुस्तान में बड़ी कोई नहीं और छोटी छोटी भी बहुत कम हैं। चिलका कटक के पास चौंतीस मील लम्बी आठ मील चौड़ी है, पानी खारा, और कुछ न्यूनाधिक दो लाख मन नमक हर साल उस से वहां तैयार होता है पल्लीकाट अथवा पलियाकट. जिसे कोई मलयघाट भी कहता है इतनी ही बड़ी करनाटक अथवा कर्णाट देश में है कोलेरू कृष्णा और गोदावरी के बीच में छयालीस मील लम्बी और चौदह मील चौड़ी होगी। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमलदारी के बीच में बीस मील लम्बी और दो मील चौड़ी है। सांभर नमक उसी में पैदा होता है जब गर्मी में उसका पानी सूखता है तो उसके किनारों पर यह नमक जम जाता है, लोग खोद कर उठा लाते हैं, और बहुधा उसके किनारों पर क्यारियां बनाकर उन में उसका पानी ले आते हैं वही पानी सूखकर नमक बन जाता है ऊलर कश्मीर के इलाके में सोलह मील लम्बी और आठ मील चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उसकी थाह नहीं पाई वितस्ता एक तरफ़ से उसका पानी लेती हुई बही है सिंघाड़े उस में बहुत होते हैं॥

अब सोचना चाहिये कि जिस देश में इतनी नदियां बहती हैं और पानी की ऐसी इफ़रात है फिर ज़मीन उपजाऊ और उर्बरा क्यों न हो, और यही कारन है कि जो इस देश की धरती शस्यजनक और बहुफला होना सारे संसार में प्रख्यात होगया, बरन और उपजाऊ देशों का इसे उपमा ठहराया यहां साल में दो फ़सल और कहीं तीन तीन फ़सल भी काटते हैं, और ऐसी विरली वस्तु है कि जो यहां पैदा न हो। बर्फ़िस्तान और रेगिस्तान मैदान और कोहिस्तान, समुद्र से निकट, और समुद्र से दूर, गर्म और सर्द खुश्क और तर,

सब तरह के मुल्कों के अन्न फल फूल और औषधि यहां मौजूद हैं, मनुष्य की सामर्थ्य नहीं जो यहां के जंगल पहाड़ों की जड़ी बूटियों का सारा भेद जानलेवे, या जितने प्रकार के वृक्ष उनमें होते हैं सब की गिनती करे, केवल वे सब, कि जो सदा हम लोगों के काम में आते हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं। खेत में यहां जव गेहूं चावल चना ज्वार बाजरा मूंग मोट मक्की उर्द मसूर मटर कोदों किराव अरहर मरूआ तिल तीसी राई सरसों जीरा सौंफ़ अजवायन धनियां काहू कासिनी मेथी कंगनी सांवां चैना कोलथ बाथू फाफरा रगी सोंठ हलदी सन तमाकू मजीठ मिरचा कुसुम कपास पोस्त नील ऊख केसर कचूर रेंडी अरवी शकरक़न्द ज़मीक़न्द रतालू बंडा खीरा ककड़ी तुरई आरिये कद्दू कोहड़ा पेठा तरबूज़ खरबूज़ा भिंडी बेड़ा सेम आलू गोभी पलवल करेला मूली गाजर शलगम पयाज लहसन हींग चुक़न्दर आदी-चक बैंगन और बाग़ और जंगल पहाड़ में सेव नाशपाती विही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुखारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दआलू अखरोट आम अमरूद अनार आमला कौला सन्तरा जामन गुलाबजामुन लुकाट लीची फालसा खिरनी केला कमरख अंजीर शरीफ़ा नीबू चकोतरा अनन्नास पपीता कटहल बढ़हल करौंदा हड़ बहेड़ा बेर बेल इस्टाबरी मको रसभरी कैफल ताड़ खजूर नारियल सुपारी तेजपात छोटी बड़ी इलायची जायफल जावत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन कालीमिर्च कबाबचीनी कपूर जटामासी अगर गुग्गुर धूप लोबान मुसब्बर सागौन साल सीसों तुन नीम इमली महुआ कीकर पाकर खैर तीखुर चिरौंजी पलास रीठा सेमल बड़ पीपल कदम्ब कचनार कैत आमड़ा जलपाई अमलतास मौलसिरी चम्पा हारसिंगार चील चिलग़ोज़ा केलो का-

यल रौ बान बरास देवदार कक्कड़ महुरू भोजपत्र वेदमुश्क चनार सफ़ेदा सर्व वांस बेत नर्कट कुश क़लम दूब बनफ़शा चाय मिंहदी भांग धतूरा पान टेंटी फोक करील आक झड़बेरी, फुलवारियों में गुलाब केवड़ा बेला चंबेली जाही जूही सेवती मदनबान मेगरा रायवेल नर्गिस सुगन्धरा सेवती सोसन गेंदा गुलदावदी गुलमेहंदी गुलदुपहरिया गुलअब्बास गुलखैरू लटकन झूमका इमरैलिस डेलिया, और पानी में कमल कमोदनी मखाना शोला सिंघाड़ा कसेरू इत्यादि बहुतायत से होते हैं। सिवाय इनके बहुत से फल फूल के वृक्ष अब अंगरेज़ लोगों ने दूसरे मुल्कों से लाकर इस देश में लगाए हैं, और लगाते जाते हैं, कि जिन का हिन्दी में नामही नहीं मिल्नता। डाकतर वालिच साहिब ने चार सौ छप्पन प्रकार की लकड़ी, जिन से यहां काठ की चीज़ें बनती हैं इकट्ठी की थीं। सहारनपुर में सर्कारी बाग़ के दर्मियान पांच हज़ार क़िस्म से जियादः और कलकत्ते में सर्कारी बाग़ के दर्मियान जिसका घेरा प्रायः तीन कोस का होवेगा, दस हज़ार क़िस्म से अधिक वृक्ष विरुध लगाये हैं और डाकतर वैट साहिब केवल मन्दराज हाते से लाख क़िस्म से ऊपर पेड़ बूटे इकट्ठे करके इंगलिस्तान को ले गए। गेहूं नागपुर का प्रसिद्ध है। चावल बाड़े का सा, जो पिशौर के ज़िले में है, कहीं नहीं होता, पुलाव बहुत सुस्वाद और सौगन्ध बनता है, सेर भर चावल सेरही भर घी सोखता है, और फूल कर चार सेर के बराबर हो जाता है। चैना कोलथ बाथू फाफरा ये चारों अदना क़िस्म के अन्न केवल हिमालय के पहाड़ी-देशों में होते हैं और रागी दक्षिण के पहाड़ों में। तम्बाकू भिलसा सा कहीं नहीं होता, इस पेड़ का यहां पहले कोई नाम भी नहीं जानता था, जहांगीर बादशाह के इश्तिहार से जिसका ज़िकर उसने अपनी किताब में

लिखा है मालूम होता है कि यह काम की चीज़ पहले ही पहल उसके अथवा उसके बाप अकबर के समय में फ़रंगी लोग अमरिका से लाए। अब तो इतनी फैलगई कि लोगों को इस बात का निश्चय आना भी कठिन है। कपास यद्यपि अमरिका में भी होता है, परन्तु पुराने महाद्वीप के सब मुल्कों में इसी भारतवर्ष से फैली। सिकन्दर जब सतलज तक आया था तो उसके साथवालों ने कपास के पेड़ देखकर बड़ा अचरज माना, और अपनी किताब में उसका नाम ऊनका पेड़ लिखा, और उसकी यह टीका की कि यूनान में जो ऊन भेड़ियों की पीठपर जमता है वह हिन्दुस्तान में पेड़ों के बीच फलता है बेचारों ने रूई पहले कभी न देखी थी, केवल पोस्तीन और ऊनी वस्त्र पहनते थे। यहां रूई मालवे के दर्मियान बहुत पैदा होती है। पोस्त जिस्से अफ़यून निकलती है मालवे में बहुत होताहै, और वहां की अफ़यून अव्वल क़िस्म की गिनी जाती है, सिवाय इसके बनारस और पटने के आस पास भी बोया जाता है। नील तिरहुत में बहुत होती है। ऊख इसी जगह से बहुत विलायतों में फैली है। पुराने यूनानियोंने इस मुल्क की चाशनी खाकर बड़ा आश्चर्य माना, और किताबों में लिखा कि हिन्दुस्तान के आदमी भी मक्खियों की तरह पेड़ों के रस से शहद बनाते हैं। केसर की खेती कश्मीर के पामपुर परगने मात्र में होती है, और कहीं नहीं जमती, वहां केसर ऊंची ज़मीन पर बोते हैं जिस में पानी बिलकुल न ठहरे और सींचते कभी नहीं, जड़ उसकी पयाज़ के गट्ठे की तरह होती है, और वही गट्ठे बोए जाते हैं पेड़ और पत्ते उसके कुश घास से मिलते हैं, और फूल ऊदे रंग का क्वार कार्त्तिक में खिलता है, उसी फूल के भीतर पीली पीली यह केसर रहती है। कश्मीर में केसर पन्द्रह रुपये सेर मिलती है, और चालीस पचास

हज़ार रुपये की पैदा होती है। तरबूज़ मधुरता में इलाहाबाद का प्रसिद्ध है, और खरबूज़े जमाली आगरे के। आलू और गोभी भी हिन्दुस्तान की तरकारी नहीं हैं, तम्बाकू की तरह अमरिका से आ गई। शलगम भुटान में बहुत बड़ा और मीठा होता है। पयाज़ बम्बई की प्रसिद्ध है। हींग का पेड़ सिन्ध और मुलतान की तरफ़ होता है। सेब नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुख़ारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दालू अखरोट ये सब कश्मीर में बहुत अच्छे और कई प्रकार के होते हैं, और हिमालय के तटस्थ दूसरे ठंढे मुल्कों में भी मिलते हैं पर गिलास कश्मीर के सिवाय और कहीं नहीं होता बहुत नाज़ुक और वहां के मेवों का सर्दार है, फ़सल उसकी पन्द्रह बीस रोज़ से अधिक नहीं रहती, सावन के महीने में फलता है। अंगूर कश्मीर में किशमिश बहुत अच्छा होता है, बीज बिलकुल नहीं गुच्छे का गुच्छा शर्बत की घूंट की तरह निगल जाओ पर कनावर सा इस विलायत में कहीं नहीं होता, गुच्छे और दाने भी बहुत बड़े और मीठे होते हैं और वहां सस्ते भी इतने कि चार पैसे को एक आदमी का बोझ लेलो। शफ़तालू चम्बे से बिहतर दूसरी जगह नहीं फलता। आम बम्बई के बराबर कहीं नहीं होता, पर बनारस और मालदह का भी बहुत प्रसिद्ध है, इस मुल्क का ख़ास मेवा है, दूसरी विलायत में नहीं मिलता, और दुनिया के सब मेवों का सिरताज है, इसका नाम अमृतफल लोगों ने बहुत ठीक रक्खा, अमृत भी उस से अधिक सुस्वाद न होगा, बड़े आम सेर सेर से भी ऊपर वज़न में उतरते हैं। आमला और अमरूद बनारस में बहुत तोहफ़ा होता है। कौला सिलहट सा उमदा और मीठा कहीं नहीं पाया जाता, और वहां इसके जंगल के जंगल खड़े हैं, रुपये

के हज़ार हज़ार तक बिकते हैं। कटहल इतना बड़ा होता है कि शायद ऐसे वैसे कमजोर आदमी से तो उठ भी न सके। इसटावरी मको रसभरी और कायफल उत्तराखण्ड के देशों में अच्छे होते हैं। हड़ बिलासपुर की मशहूर है, पर सूखी हुई दो तोले से भारी नहीं होती। ताड़ दक्षिण पाईं-घाट में इतने बड़े होते हैं कि उसके दो तीन पत्तों से छप्पर छा जावे। नारियल और सुपारी समुद्र के तटस्थ देशों में जमते हैं दूर नहीं होते। तेजपात इलायची जायफल जावत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन और कालीमिर्च के दरख़्त दक्षिण देश में बिशेष करके तुलव केरल कच्छी और त्रिवङ्कोड़ू के दर्मियान होते हैं। तेजपात और बड़ी इलायची नयपाल में भी इफ़रात से उगती है। सागू के दरख़्त की टहनियां काटकर उन्हें पानी में कूटते भिगाते और धोते हैं, उनका जो सत निकलता है उसी को चलनी से गर्म तवा पर चलाते हैं, वह भुनकर दाने दाने सा हो जाता है और सागूदाने के नाम से बिकता है। चन्दन और रक्तचन्दन के पेड़ वहां पश्चिमघाट में मलयागिर पर बहुत हैं, चन्दन में जो वस्तु रहे उस से कहते हैं कि कीड़ा और मोर्चा नहीं लगता, इसलिये हथियार इत्यादि चीज़ों के रखने के लिये जिस में मोर्चा अथवा कीड़ा लगने का डर है अमीर लोग चन्दन के सन्दूक़ बनवाते हैं। पथरैली-धरती में चन्दन के पेड़ अच्छे होते हैं, और सब से अधिक उत्तम चन्दन उन पेड़ों में उस स्थान का है जो धरती के नीचे और जड़ों से ऊपर रहता है, और जिसका रंग खूब गहरा होता है। चन्दन काटकर महीने दो महीने तक वहां मिट्टी में दाब रखते हैं। हिक्मत उस में यह है कि ऊपर का छिलका जो नाकारा होता है बिलकुल दीमक खालेती हैं, और खुशबूदार गूदा बिलकुल बाक़ी

रह जाता है। कालीमिर्च आशाम में भी बोते हैं, और कपूर का दरख़्त मनीपुर में जमता है। अगर सिलहट के जंगल में और गुग्गुर अर्थात् गूगल सिन्ध में होता है। लोबान के पेड़ त्रिवा-ङ्कोड़ू में और मुसब्बर के दरख़्त कांगड़े में बहुतायत से हैं। सागौन की लकड़ी के जहाज़ बनते हैं। इसलिये वह बड़े कामकी चीज़ है, यह वृक्ष बहुधा पश्चिम घाटपर और चित्र गांव में समुद्र के निकट होता है और साल जिसका हरिद्वार के पास पहाड़की तराई में बड़ा भारी जंगल है अक्सर इमारत के काम में आता है। खैर तीखुर चिरौंजी बहुधा विन्ध्य के पहाड़ में और चील चिलगोज़ा, अर्थात् नेवज़ा, केलो कायल रौबान बरास देवदार कक्कड़ महरू भोजपत्र हिमालय के पर्व्वत में होते हैं। चील का गोंद बिरोज़ा और तेल तारपीन कहलाता है, पहाड़ी लोग मशाल और बत्तीकी जगह रात को उसीकी लकड़ी जलाते हैं। केलो कायल और देवदार ये तीनों सनोबर की क़िस्म हैं, और सात सौ हाथ से भी अधिक ऊंचे होते हैं। बान को अंगरेज़ी में ओक कहते हैं। बरासके फूल लाल लाल बहुत बड़े और सुहावने होते हैं। भोजपत्र उसी जगह होता है जहां से वर्फ़िस्तान का आरम्भ है, बारह हज़ार फुट से नीचे कदापि नहीं उगता। बेदमुश्क चनार और सफ़ेदा ये कश्मीर के वृक्ष हैं, बेदमुश्क से केवड़े की तरह अर्क़ निकालते हैं, वह केवड़े से भी अधिक गुण रखता है। बेत पश्चिम घाटके पहाड़ों में २२५ फुट तक लम्बा होता है। चाय के पेड़ अब सर्कार की आज्ञानुसार देहरादून और कांगड़े के पहाड़ों में लगने लगे हैं, पहले चाय चीन के सिवाय और कहीं नहीं होती थी, पर अब जान पड़ता है कि इन उत्तराखण्ड के पर्व्वे-तों में भी वैसी ही हो जायगी। सर्कार ने इस बात के लिये बहुत

रुपया खर्च किया है, और उसकी तैयारी के वास्ते चीन से बुलाकर वहां के आदमी नौकर रक्खे हैं. क्योंकि जब पेड़ से पत्ते तोड़ते हैं तो उनको आग पर गर्म करके हाथों से मसलने में बड़ी चतुराई चाहिये, कई बार उनको आग पर सेकना पड़ता है और कई बार हाथों से मलना, अनाड़ी आदमी से यह काम कभी नहीं बन पड़ता, आशाम के ज़िले में भी बोई जाती है। पान इस मुल्क की तोहफ़ा चीज़ों में गिना जाता है, वरन यह भी एक रत्न कहलाता है। मखाना पुरनिया के तालावों में फलता है। गुलाब ग़ाजीपुर और अजमेर में बहुत होता है, और चंबेली जौनपुर और बाढ़ में। पर सब से अधिक आश्चर्य का पेड़ हिन्दुस्तान में वड़ है कि जिसकी प्रशंसा दूसरी विलायत वालों ने अपनी किताबों में बहुत ही लिखी है जिस किसी स्थान में जल के समीप कोई पुराना बड़ रहता है और उस पर मोर और वन्दर नाचते कूदते हैं अतिरम्य और सुहावना होता है और उसकी बहुत सी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ती हैं मानो दालान और बारहदरियां बन जाती हैं. एक बड़ का पेड़ जिसे लोग तीन हज़ार बरस का पुराना बतलाते हैं, नर्मदा नदी के किनारे भड़ौंच के पास इतना बड़ा है कि जिस के नीचे सात हज़ार आदमी अच्छी तरह आराम से डेरा कर सकें, उसका घेरा प्राय चौदह सौ हाथ का होवेगा, और उसकी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ गई हैं तीन हज़ार से कम नहीं। नाम उसका वहांवाले कबीर बड़ कहते हैं। सिवाय इसके छपरे से पश्चिम जहां सरयू गंगासे मिलती है मांझी—नाम बस्तीके पास एक बड़का पेड़ इतना बड़ा है कि जिस की छाया गर्मियों में दो पहर के समय १२०० फुट के घेरे में पड़ती है॥

जानना चाहिये जहां तृण और जलकी ऐसी बहुतायत होगी वहां

पशु पक्षी भी अधिक रहेंगे। जंगली जानवरोंमें सिंह बाघ बघेरा चीता हाथी गैंड़ा अरना रीछ सूअर भेड़िया हिरन बारहसिंहा रोझ पाढ़ा साही गीदड़ लोमड़ी खरगोश सियाहगोश बनविलाव ऊदबिलाव तरह बतरह के बन्दर और लंगूर कस्तूरिया बरड़ कक्कड़ सकीन घोड़ल सुरागाय ईल गिलहरी नेवला गिरगिट, और घरेलुओं में घोड़े गधे ऊंट खच्चर गाय भैंस भेड़ी बकरी दुम्बे कुत्ते बिल्ली, और पक्षियों में मनाल जीजूराना खलीज पलास कस्तूरा ओंकार नूरी बांधनू चकोर तीतर बटेर मुर्ग़ मुर्ग़ाबी सारस बगला बतक चकवा लाल बुल्बुल लवा तोता मैना काकातूआ मोर कोकिला अगिन श्यामा कोयल पपीहा बाज़ बहरी शिकरा शाहीन गिद्ध चील कौआ हुदहुद खञ्जन बया गौरय्या पिंडकी कबूतर, इनके सिवाय चूहे छछूंदर चिमगादड़ सांप अजगर बिच्छु गोह कनखजूरा मच्छर पिस्सू मक्खी शहदकी मक्खी भिड भौंरा जुगनू तितली दीमक, और रेशम क़िर्मिज़ और लाखके कीड़े भी इस देश में बहुत होते हैं। नदी और तालाबों में मछली मेंडक जोंक और कच्छुए रहते हैं। और बड़े दर्याओं में मगर और घड़ियालों का डर है। दक्षिण में समुद्र के किनारे कौड़ी और मोतीवाले सीप भी होते हैं। हमने सिंह और बाघ भिन्न भिन्न लिखाहै, यद्यपि बहुतेरे लोग वरन कितनेही कोशकर्त्ताभी इन दोनों के बीच भेद नहीं करते पर सिंह वह है जिसे संस्कृत में केसरी और फ़ारसी में शेरबब्र और अंगरेज़ी में लायन कहते हैं। उसकी गर्दन पर केसर अर्थात् घोड़े की यालों के से बहुत से झबड़े झबड़े बाल रहते हैं और शेर से अत्यन्त अधिक बल पराक्रम और साहस रखता है, ये जानवर अब बहुत कम रहगए, कभी कभी हरियानेके जंगलों में मिल जाते हैं। और बाघ वह है जिसे फ़ारसी में शेर कहते हैं और जिससे

तमाम तराई और सुन्दरबन भरा पड़ा है। चीता यहां के राजा लोग हिरन मारने के लिये पालते हैं। शिकार के समय इस जानवर की आंखों में पट्टी बांध बहली पर बिठा साथ ले जाते हैं, जब किसी तरफ़ हिरनों का झुण्ड निकलता है तो तुरन्त उसकी आंखसे पट्टी हटा देते हैं, और वह बिजली की तरह लपक कर उन में से एक को जा ही दबाता है। हाथी और गैंडे रंगपुर सिलहट आशाम त्रिपुरा और चटगांव के जंगलों में बहुत हैं, पर हाथी दक्षिण के जंगल में बहुत अच्छा होता है, और हिमालय की तराई में जो पकड़ा जाता है वह ऐसा बड़ा और उसका चिहरा इतना उभरा हुआ नहीं रहता। हाथी-पकड़ने के लिये जंगलों में गढ़े खोदकर मिट्टीसे बे मालूम ढक देते हैं, जब हाथियों का झुण्ड उधर आता है तो जो उनमें गिर रहता है उसी को पकड़ लाते हैं। पर सुन्दर बनके पास ज़मीन दलदल होने के कारन गढ़ा खोदना कठिन है, इसलिये हाथी के पकड़नेवाले चालीस पचास आदमी इकट्ठे होकर पलेहुए हाथियों पर सवार बड़े बड़े मज़बूत रस्सों के फन्दे बनाकर जंगल में जाते हैं, जब जंगली हाथी इनके हाथियों के मारने के लिये हल्ला करके आते हैं तो ये उनको फन्दे में फसा लेते हैं, कोई उसकी गरदन में रस्सा डालता है और कोई उसकी सूंड़ फसाता है और कोई पैर कस लेता है, निदान उन रस्सों का एक एक सिरा उन पले हुए हाथियों की कमर में बँधे रहने के सबब फिर वे जंगली हाथी भाग नहीं सकते और चारों तरफ से जकड़ जाते हैं। पर उस काम में जानजोखों बड़ी है इसलिये अक्सर हाथी पकड़ने वाले एक बड़ा बाड़ा बनाते हैं, खूब मज़बूत लकड़े गाड़ कर और उसके गिर्द खाई खोद देते हैं, अन्दर जाने को केवल एक दरवाज़ा रखते हैं, लेकिन वह भी इस ढब का कि जैसे जंगलों में जाने की राह रहती

हैं, जो हाथी को मालूम पड़जाय कि यह दरवाज़ा आदमी का बनाया है तो कदापि उसके अन्दर पैर न धरे, क्योंकि यह जानवर बड़ा होशयार होता है, और उस बाड़े से मिलाहुआ उसी तरह का एक ऐसा छोटा बाड़ा रखते हैं कि जिस में जाकर फिर हाथी घूम न सके निदान जब वह बाड़े तैयार हो जाते हैं तो बहुत से आदमी उन जंगलों को जा घेरते हैं कि जिनमें हाथी रहते हैं, और दूर दूर से इस तरह पर ढोल इत्यादि की आवाज़ें करते हैं, और आग जलाते हैं कि उन हाथियों का झुण्ड हटते हटते उसी बाड़े के दरवाज़े पर आ जाता है, और जब सारे हाथी उस बाड़े के अन्दर चले जाते हैं तो ये लोग तुरन्त उसका दरवाज़ा बड़ी मज़बूती से बन्दकर देते हैं, जब हाथी कोई राह निकलने की नहीं पाते उस वक़्त जो उनको गुस्सा होता है वह तमाशा देखने लाइक़ है, निदान कुछ दिनमें भूख प्यास और दौड़ने से वे सुस्त और काहिल होजाते हैं तब अन्दर से उस छोटे बाड़े का दरवाज़ा खोलते हैं, और ज्यों हीं एक हाथी उसके भीतर आ जाता है तुरन्त उसको बन्दकर देते हैं, इस छोटे बाड़े के गिर्द मचान बंधे रहते हैं, हाथी जगह की तंगी से घूम भी नहीं सकता बिलकुल बेक़ाबू हो जाता है ये मचानों पर चढ़कर अच्छी तरह उसे रस्सों से जकड़ लेते हैं, और उन रस्सों को अपने सधेहुए हाथियों की कमर से कसकर तब उसे बाहर निकालते हैं और किसी पेड़ से बांध देते हैं. इसी तरह एक एक करके जब सब हाथियों को निकाल चुकते हैं तब फिर धीरे धीरे उनको खिला पिलाकर आदमियों से परचा लेते हैं। आगे यहां के राजा और बादशाह लड़ाई के वक़्त दुश्मन की फ़ौज के साम्हने अपने सधाए हुए मस्त हाथियों की सूंड़ों में दुधारे खांड़े देकर हुलवा देते थे, पर अब तोप के आगे बेचारे हाथी की क्या पेश जासकती है केवल सवारी और बार-

बरदारी के काम में आते हैं। पुरु राजा ने झेलम के किनारे पर दस हज़ार जंगी हाथियों के साथ सिकंदर का मुक़ाबला किया था। आसिफ़ुद्दौला के पास सब से बड़ा हाथी जो त्रिपुरा के जंगल से पकड़ागया था साढ़े दस फुट ऊंचाथा, पर स्काट साहिब के लिखनेसे मालूम हुआ कि उन्होंने उस जंगल में बारह फ़ुट दो इंच तक ऊंचा हाथी सुना था। रूस के बादशाह बड़े पीटर को ईरान के बादशाह ने जो हाथी तोहफ़ा भेजा था, और जिसकी खाल अब तक वहां के अजाइबख़ाने में रक्खी है, सोलह फ़ुट ऊंचा था मालूम नहीं कि इसी जगह से गया था या किसी दूसरे मुल्क से आया। गैंडे से मज़बूत दुनिया में कोई दूसरा जानवर नहीं, इसका चमड़ा ऐसा कड़ा होताहै कि उस पर सिवाय गोली के तीर तलवार और कोई भी हथियार कुछ काम नहीं करता, ढाल अच्छी उसी के चमड़े की बनती है, इस जानवर से न शेर लड़ना चाहता है और न इसको हाथी छेड़ता, इसे जंगल का चक्रवर्ती राजा कहना चाहिये, यदि डील डौल में हाथी से छोटा है, पर जब उसके पेटमें अपनी खाग मारता है तो फिर हाथी चित्त ही गिर पड़ता है और गैंडे का कुछ भी नहीं कर सकता, यह जानवर केवल घास पत्ते खाता है और जब तक कोई इसे न सतावे तो यह भी किसी जीव को कुछ दुख नहीं देता। अरना भैंसा भी बड़ा भयानक जानवर है, किसी किसी के सींग दश फ़ुट तक लम्बे होते हैं। कस्तूरिया-हिरन हिमालय के पहाड़ों में होता है, लोगों ने यह बात बहुत ग़लत मशहूर कर रक्खी है कि उसके पैर की नलीमें जोड़ नहीं होता और वह बैठ नहीं सकता, जैसे और सब जानवर चलते फिरते दौड़ते बैठते हैं इसी तरह वह भी सब काम करता है, जाड़ों में जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ़ बहुत पड़ जाती है तब यह नीचे उत-

रता है, उन्हीं दिनों में इसका शिकार होता है, इस जानवर की नाभी में एक छोटी सी थैली रहती है जिसको नाफ़ा कहते हैं उसी के अन्दर कस्तूरी है, जब उसे मारकर उसके पेट से नाफ़ा निकालते हैं, तो कस्तूरी उसमें लहू मास की तरह गीली रहती है, धूपमें रखकर सुखा लेते हैं, जो कस्तूरी खाने में बहुत कड़वी और तीखी हो उसे असल और जो कसैली या दूसरे मज़े पर हो उसे बनावट समझना चाहिये, और भी इसकी बहुत परीक्षा हैं। वरड कक्कड़ सकीन घोड़ल सुरागाय और ईल ये सब जानवर बर्फ़ी-पहाड़ों के पास होते हैं। सकीन एक तरह का जंगली भेड़ा है, लेकिन सींग उसके ऐसे भारी होते हैं कि एक आदमी से नहीं उठ सकते। गाय को सुरा और बैलको याक कहते हैं, इनके बदन पर रीछ की तरह बड़े लंबे लंबे बाल रहते हैं और उनकी दुमका चवर बनता है, वहां के लोग इन याक-बैलों पर सवारी भी करते हैं, जिन कठिन पहाड़ों में घोड़ा टट्टू नहीं जा सकता वहां वे याक पर चढ़कर बखूबी चले जाते हैं। ईल एक प्रकार की गिलहरी है, जो चिमगादड़ की तरह उड़ती है। घोड़े यहां दक्षिण में भीमा नदी के किनारे जो तेलिये कुमैत सियाह ज़ानू होते हैं बहुत उमद: हैं और काठियावाड़ और लक्खी जंगल भी घोड़े के वास्ते प्रख्यात है, काठियावाड़ का घोड़ा कूदने फांदने में खूब चालाक होता है, कहते हैं कि उस किनारे पर कभी किसी अरब का जहाज़ ग़ारत हो गया था उसी के घोड़ों के फैलने से वहां उनकी नसल दुरुस्त हुई है, और लक्खी जंगल का घोड़ा डील डौल में बहुत बड़ा रहता है, पांच पांच हज़ार तक भी उसका दाम उठता है। ऊंट जोधपुर का प्रसिद्ध है, सौ कोस तक एक दिन में जा सकता है। गाय भैंस गुजरात हरियाना सिन्ध मुलतान इत्यादि प-

श्चिम देशों की दूध बहुत देती हैं, और बैल भी वहां के प्रसिद्ध हैं। ये जानवर दक्षिण में बहुत खराब होते हैं, क़द्के छोटे और दूध भी थोड़ा देते हैं। बर्फ़ी—पहाड़ोंमें भेड़ी का ऊन बहुत अच्छा और बकरी के बालके अन्दर पश्मीना होता है। दुम्बे सिन्धु के तटस्थ-देशों में होते हैं। पक्षियोंके दर्मियान मनाल जीज़ूराना खर्लीज और पलास बर्फ़िस्तान के तटस्थ पहाड़ों में, और कस्तूरा और ओंकार कश्मीर में होता है। मनाल देखनेमें मोरकी तरह खूब सूरत, पर दुम उसकी सी नहीं रखता। जीज़ूराना नूरी और बांधनू ये भी बहुत सुन्दर होते हैं। ओंकार के सिर में सियाह परों की एक अच्छी लम्बी कलग़ी रहती है कि जो इस देशके अक्सर बादशाह राजा और सर्दार अपनी टोपी और पगड़ियों में लगाते हैं। चकोर बटेर मुर्ग़ लाल बुलबुल लवा लड़ने में और तोता मैना काकातूआ आदमी की बोली—बोलने में मख्यात हैं, नूरी बांधनू और तोते इत्यादि सुन्दर—बन और तराई के जंगल में ज़ियादः मिलते हैं। मोर कोकिला अगिन श्यामा कस्तूरा कोयल और पपीहे का शब्द बहुत मधुर होताहै। बाज़ बहरी शिखरा और शाहीं अमीर लोग चिड़ियोंका शिकार करने के लिये पालते हैं। बया अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाता है, चटाई की तरह बुनता है और तीन उसमें घर रखता है बाहर नरके लिये बीच का मादा के लिये और अन्दरवाला बच्चे के लिये, और पेड़ की ऐसी पतली टहलियों से बल्कि खजूर के पत्तों से उसे लटकाता है कि जिस में अण्डों तक सांप न पहुँच सके, बहुधा जुगनू कीड़े उठा लाता है कि जिस में रात को घोंसले के अन्दर उजाला रहे, सच पूछो तो पक्षियों में ऐसी होशयारी किसी में नहीं यह छोटी सी चिड़िया आदमी के सिखलाने से बड़े बड़े काम कर दिखलाती है,

तोप पर चोंच से बत्ती लगा देती है बदकार आदमी चुहल के लिये औरतों की टिकलियें दिखला कर इशारा कर देते हैं यह फौरन उतार लाती है, धन्य है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर जिसने ऐसी ऐसी चिड़ियों को यह समझ दी। सांप इस मुल्क में बाज़े ऐसे ज़हरीले हैं कि जिनका काटा आदमी फिर पानी न मांगे। और अजगर दक्षिण के जंगलों में चालीस फ़ुट तक लम्बे होते हैं। मछलियों में कलकत्ते के बीच तपस्या-मछली की बड़ी तारीफ़ है, कहते हैं कि उसके स्वाद को कोई नहीं पहुँचती। मलबार में मछलियों की इतनी बहुतायत है कि बाज़े वक्त घोड़ों को दाने के बदल मछलियां खिला देते हैं। जोंक दक्षिण के घाटों में बहुत होती हैं, यहां तक कि बर्सात में मुसाफ़िर को राह चलना मुश्किल पड़ जाता है। घड़ियाल गंगा में बीस हाथ तक लम्बे होते हैं। कौड़ियां समुद्र के किनारे इस बहुतायत से मिलती हैं कि समुद्र के तटस्थ देशों में चूना भी कौड़ी जलाकर बनता है। मोतीवाले सीप दक्षिण देश के नीचे समुद्र में होते हैं, लोग ग़ोतामारकर बहुत से सीपजानवर सैकड़ों बरन हज़ारों समुद्र की थाहसे निकाल लाते हैं और गढ़े खोदकर मिट्टी से दाब देते हैं, जब थोड़ी देर बाद वे सब मर जाते हैं तब एक एक को उस गढ़े से निकाल कर चीरना शुरू करते हैं, बहुत तो ख़ाली जाते हैं किसी में मोती निकल आता है। सांप और सिंह को सब कोई बुरा कहता है, पर सोच कर देखो तो इस मनुष्य का चित्त तुष्ट करने के वास्ते कितने जीव सताए जाते हैं॥

खान इस मुल्क में लोहा तांबा सीसा सुरमा गन्धक हरिताल नमक कोयला मर्मर यशम बिल्लौर अक़ीक़ इन सब चीज़ों की मौजूद है, और हीरा भी बहुत अच्छा और बेशक़ीमत निकलता है।

महा नदी के किनारे सम्भलपुर के इलाक़े में बुंदेलखण्ड में पन्ने के दर्मियान दक्षिण में कृष्णा के किनारे कोलूर इत्यादि स्थानों में इस की खान हैं और वह प्रसिद्ध बड़ा हीरा कोहनूर जो सर्कार कम्पनी ने दलीपसिंह से लेकर महारानी विक्टोरिया को नज़र दिया, शाहजहां के समय में इसी कोलूर की खान से निकला था, और मीरजुमला ने वह उस बादशाह को भेट किया था, उस समय में इसका मोल पछत्तर लाख रुपया आंका गया था। पत्थर के कोयलों की क़दर आगे तो कोई नहीं जानता था और न यहां कभी किसी को इसकी खानका कुछ गुमान था, पर जब से अंगरेज़ोंने धूएं के जहाज़ चलाए तो यह कोयला भी अब एक बड़े काम की चीज़ ठहरा बीरभूम के ज़िले में इसकी खान जारी है, और नर्मदा–किनारे के ज़िलों में भी इसका होना साबित है, सिवाय इन के और अनेक प्रकार के बहुतेरे रंग बरंग के पत्थर मिलते हैं कि जो अक्सर साहिब लोग अपने गहनों में लगाते हैं॥

मौसिम हिन्दुस्तान में तीन हैं जाड़ा गर्मी और बरसात, और हरएक ऋतु अपने अपने समय पर अच्छी बहार दिखलाती है, समुद्र के तटस्थ–देश में विशेष करके दक्षिण के घाटों पर बरसात बहुत होती है, यहां तक कि किसी किसी जगह में नौ नौ महीने के लिये सारा सामान गृहस्थी का घर में इकट्ठा कर रखना पड़ता है, मेह की शिद्दत से बाहर निकलना नहीं होता। और हिमालय के पहाड़ों में सर्दी अधिक रहती है, जहां बर्फ़ नहीं होती वहां भी जो पहाड़ चार पांच हज़ार हाथसे ऊंचे हैं उनपर जेठ बैसाखमें आग तापनी पड़ती है। कनावर और कश्मीर में बरसात नहीं होती, क्योंकि उन इलाक़ों के चौगिर्द ऐसे ऐसे ऊंचे पहाड़ आगये हैं कि बादल जो समुद्र की

तरफ़ से आते हैं पहाड़ों की जड़ों ही में लटकते रह जाते हैं पार होकर उन इलाक़ों में नहीं पहुँच सकते। और बाक़ी सब ज़िलों में ग्रीषम ऋतु अति कठिन होती है, लूएं चलने लगती हैं और धरती तपने, अमीर लोग तहख़ाने और ख़सख़ाने में बैठकर पंखे झलवाते हैं, और ग़रीब बेचारे सूर्य के प्रचण्ड ताप से व्याकुल होते हैं॥

आदमी हिन्दुस्तान के जवांमर्द और दयावान् होते हैं यहां तक कि बहुतेरे लोग पशु पक्षी तो क्या बरन वृक्ष को भी नहीं सताते, गर्म मुल्क के सबब मिहनत कम करते हैं, और बहुधा सुस्त और काहिल बरन आराम तलब रहते हैं, यहां तक कि अक्सर लोग इसी मसल पर चलते हैं॥ दोहा॥

चलिबे तें ठाढ़ो भलो वातें बैठ्यो जान।
बैठे तें सोबो भलो सोवे तें मर जान॥१॥

पर बड़ा ऐब इन में यह है कि सर्वजन हितैषी और सर्व मंगलेच्छक नहीं होते, अपना नाम बढ़ाने के लिये अवश्य कूए तालाब और पुल इत्यादि बनवाते हैं, पर जो काम ऐसा हो कि इन से अकेले न बन सके और दस पांच आदमी मिलकर उसे चन्दे के तौर पर बनवाना चाहें तो उसमें उनको एक पैसा भी देना भारी पड़ जाता है, निदान यहां के आदमी जो काम करते हैं सो केवल अपने नाम के लिये, यदि उसमें दूसरों का भी भला हो जावे तो आश्चर्य नहीं, पर केवल दूसरे आदमियों के भले के लिये ये कदापि कोई काम न करेंगे, चिहरा इनका बादामी आंखें लम्बी पुतलियां काली, नाक तीखी, क़द मयाना, कमर पतली, और बाल लम्बे और काले रहते हैं। इस मुल्क में कुल को बहुत बचाते हैं, बहुधा जैसे कुल के आदमी होते हैं वैसा ही रूप और स्वभाव रखते हैं, उच्च कुल के आदमी सुन्दर और भले

मानस होते हैं, और इसी तरह नीच-कुलवाले कुरूप और खोटे होते हैं, पर यह बात कुछ सब जगह नहीं है, कहीं कहीं इसका विपरीत भी देखने में आता है। जातिभेद केवल इसी मुल्क में है, यह बात दूसरी किसी विलायत में नहीं, प्रधान तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार हैं, पर अब इन से सैकड़ों निकल गईं। रुपया इस मुल्क के आदमियों का शादी ग़मी में बहुत खर्च होता है, अर्थात् लड़का लड़की के बिवाह में और मा बाप के क्रिया कर्म में। सिवाय इसके जो लोग सुबुद्धी हैं वे अपना धन तीर्थ-यात्रा और दान-धर्म-करने में और मन्दिर धर्मशाला कूवा तालाव पुल सरा इत्यादि बनाने में उठाते हैं, और सदावर्त बिठलाते हैं, और कपूत और कुबुद्धी नाच रंग और तमाशबीनी में उसे उड़ा देते हैं। बाक़ी गुज़ारा इनका बहुत थोड़े से में होजाता है, खाने पहने और रहने के लिये इनको बहुत नहीं चाहिये, गहना पहन्ना और नौकर बहुत से रखना यही बहुधा धनी और दरिद्री का भेद है। स्त्री यहां की लाज करती हैं, और पर्दे में रहती हैं, आगे यह बात न थी जब से मुसल्मानों की अमलदारी आई तब से यहां यह रस्म जारी हुई, आगे रानी लोग राजाओं के साथ सभा में बैठती थीं। विवाह इस देश में बहुत छोटी उमर में करलेते हैं, और इसी से पुरुष बहुधा दीर्घायु और बलवान् नहीं होते। पातिव्रत धर्म इस मुल्क का सा और कहीं भी नहीं, यहां उच्च कुल की स्त्री कदापि दूसरा बिवाह नहीं करतीं, बरन अपने पति की लाश के साथ चिता पर बैठकर जल जाती थीं। सर्कार ने अब इस सती होने की बुरी रस्म को मौक़ूफ़ कर दिया। आगे लौंडी गुलाम भी यहां बेचे और मोल लिये जाते थे, पर सर्कार के प्रताप से अब यह भी अन्याय दूर होगया। केवल एक बुरी

बात अब तक जड़ से नहीं गई, यद्यपि सर्कार उसके मिटाने में बहुत उद्यम और परिश्रम कर रही है, तथापि होही जाती है, अर्थात् कोई कोई दुष्ट रजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिस में किसी का सुसरा न बनना पड़े। पहले तो जीव का सताना ही बुरा है, तिस में पंचेन्द्रिय आदमी को मारना, तिस में भी स्त्री को, और तिस में भी ऐसी अवस्था में कि जिसे देख के राक्षस को भी दया आवे, और जिसका हाल सुन कर पत्थर भी पसीज जावे, और तिस में भी अपनी आत्मजा लड़की को। हम नहीं जानते कि ऐसे आदमियों को कैसी सज़ा देनी चाहिये, फांसी तो इनके वास्ते कुछ भी नहीं है, ये अपनी पूरी सज़ा को तभी पहुंचेंगे जब रौरव नर्क की अग्नि में जलेंगे। हिन्दू मुर्दों को आग में जलाते हैं, और मुसलमान मिट्टी में दाबते हैं, पर पारसी लोग न जलाते हैं न दाबते, वे अपने मुर्दों को एक खुले मकान के बीच जो केवल इसी काम के लिये बना है, धूप में रख देते हैं। भील गोंद चुवाड़ धांगड़ कोल इत्यादि को जो जंगल पहाड़ों में बस्ते हैं, अंगरेज़ लोग इस मुल्क के क़दीमी बाशिन्दे अर्थात् भूमिये ठहराते हैं, और कहते हैं कि ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य उत्तर अथवा पश्चिम से आकर पहिले सारस्वत देश अर्थात् कश्मीर लाहौर मुलतान और सिन्ध इत्यादि में बसे, और फिर धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान में फैल गए, और इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी दलीलें लाते हैं। निदान यह तो हमने वे बातें लिखीं जो प्राय सारे हिन्दुस्तान में मिलेंगी, पर याद रखना चाहिये कि यह ऐसी बड़ी विलायत है कि इस में एक एक सूबे के दर्मियान कई तरह के आदमी बस्ते हैं, और जुदा ही रंग रूप पहनावा और चाल ढाल रखते हैं। उत्तराखण्ड के

आदमी विशेष करके गंगा और सिन्धु के बीच गोरे सुन्दर और सीधे सादे सच्चे होते हैं, स्त्रियां वहां की ऐसी रूपवती कि मानो कहानी क़िस्से की परियों को पर काटकर छोड़ दिया है। कश्मीर की सदा से प्रसिद्ध रही हैं पर कमर उनकी ज़रा मोटी होती है। जम्बू चम्बा कांगड़ा और कहलूर इन इलाक़ों की सब से बढ़कर हैं, पर यह हम उन्हीं लोगों का हाल लिखते हैं जो बर्फ़िस्तान से इधर नीचे पहाड़ों में बस्ते हैं, और नहीं तो हिमालय के उत्तर भाग में बर्फ़िस्तान के दर्मियान भोटिये लोग महा ग़लीज़ और अति कुरूप होते हैं, प्यास बुझाने के लिये भी झरनों में गाय बैलों की तरह मुंह लगाकर पानी पीते हैं हाथ से नहीं छूते, फिर बदन धोने की कौन बात है। पोशाक में कश्मीर की औरतें केवल एक पीरहन अर्थात् गले का कुरता पर एड़ी तक लटकता हुआ पहनती हैं, और सिरसे एक तिकोना रूमाल पट्टी की तरह बांध लेती हैं। गंगा से पूर्व नैपाल इत्यादि उत्तराखण्ड के देशों में लोग नाटे होते हैं, और उनकी छाती और कन्धा चौड़ा, बदन गोल गोल और गठीला, चिहरा चकला आंखें छोटी और नाक चपटी होती है, उत्तराखण्ड के मुल्कों में स्त्रियें लाज कम करतीं हैं, और सिवाय कुलीन आदमियों के उन सब को वहां इख़्तियार है कि चाहे जितने बिवाह करें और चाहे जिस पुरुष के पास जा रहें, जब कोई स्त्री एक पुरुष को छोड़ कर दूसरे के पास जाती है तो वह पहला पुरुष उस दूसरे से कुछ रुपये जो उसने बिवाह के समय ख़र्च किये थे अवश्य ले लेता है। और इसी तरह जब वह स्त्री दूसरे को छोड़ कर तीसरे के पास पहुंचती है, तो वह दूसरा अपने रुपये उस तीसरे आदमी से वसूल कर लेता है। औरत क्या यह तो दर्सनी हुंडी ठहरी। और जब कई भाई

मिलकर पाण्डवों की तरह एक ही औरत से ब्याह कर लेते हैं, तो पहला लड़का बड़े भाई का, दूसरा दूसरे भाई का, तीसरा तीसरे भाई का, इसी तरह क्रम से बट जाते हैं। सिन्धु के तटस्थ-देशों में हिन्दू मुसलमानों से बहुत कम पर्हेज़ रखते हैं। बरन किसी किसी जगह आपस में शादी ब्याह भी कर लेते हैं। पंजाब के सिक्ख हजामत नहीं बनाते, जवान अच्छे सजीले होते हैं, पोशाक उनकी सिपाहियाना, और सुन्दर, दांत पान न खाने से सफ़ेद मोतियों की लड़ी से रहते हैं, उस देश में औरतें भी तङ्ग मुहरी का पाजामा पहनती हैं। रजपुताने की औरतों के घांघरों का घेर बहुत बड़ा रहता है, डाढ़ी रखने की वहां भी चाल है, और कच्ची रसोई की छूत बिलकुल नहीं मानते, बनिये महाजनों को नाई दाल भात और रोटी परोस देता है। लखनऊवालों का पहनावा ज़नाना है, पाजामे की मुहरियां इतनी चौड़ी रखते हैं कि उठावें तो सिर तक पहुंचें, और पगड़ियों का घेरा इतना बड़ा कि छतरी का भी काम न पड़े, बोझ में तो छोटी मोटी गठड़ी से कम न होगी, बरन कहीं खुलजावे तो अन्दर से गड़गूदड़ का ढेर इतना निकले कि एक टोकरी भरे। बङ्गाली बड़े कमहिम्मत और असाहसी बरन डरपोकने होते हैं, और सन्देस और मण्डा खा खा कर बहुधा बूढ़े होने पर तुन्दले होजाते हैं, ये लोग अंगरेज़ों की तरह सिर अक्सर खुला रखते हैं, बादशाही महलों के लिये इन्हीं बङ्गालियों को खोजा बनाते थे। औरतें वहां की केवल एक धोती पर किफ़ायत करलेती हैं, पर उसे भी इस ढब से लपेटती हैं कि नङ्गी और कपड़ेवालियों में थोड़ा ही फ़र्क़ रहजाता है। दक्षिण में विशेष करके कावेरी पार मुसलमानों का राज्य पक्का न होने के कारन अब तक भी बहुत बातें असली हिन्दूमत

को देखने में आती है, आदमी वहां के नाटे होते हैं धोती दुप्पटा और पगड़ी पहनते हैं, औरतें साड़ी पहनती हैं, पर मर्दों की तरह लांघ कस लेती हैं, इस सबब से उनकी पिण्डलियां खुली रह जाती हैं, लाज बिल्कुल नहीं करतीं, घोड़ों पर सवार होकर फिरती हैं, बहुत सी रस्म और रवाज और लोगों की चाल ढाल और सूरत शकल जो खास किसी ज़िले से इलाक़ा रखती हैं, और उनका अहवाल सुनने लाइक़ है, वह सब उन्हीं ज़िलों के साथ वर्णन होंगी यहां मौक़ा नहीं है ॥

मज़हब यहां सदा से दो चले आये थे, एक वेद के मुवाफ़िक़ और दूसरा वेद के बख़िलाफ़, यह बात खुद वेदों से प्रगट है। जो लोग वेद को नहीं मानते थे, वह असुर और राक्षसों में गिने जाते थे। बौद्ध और जैनी वेद को नहीं मानते और पशु का घात करना बहुत बुरा समझते हैं। दो ढाई हज़ार बरस का अर्सा गुज़रता है कि यह मत बड़ा प्रबल होगया था, और सारे हिन्दुस्तान में राजा प्रजा सब लोग उसी मत को मानते थे केवल, कन्नौज ऐसी जगहों के आस पास कुछ कुछ वेद के माननेवाले रह गये थे, शङ्कराचार्य के समय से वह मत दूर हुआ, और वेद की महिमा फिर चमकी। अब मुख्य मत तो शैव शाक्त वैष्णव वेदान्ती और जैनी हैं, पर भेद इनके हज़ारों ही हो गये, सिवाय इसके आठवें हिस्से से अधिक इस देश में मुसलमान बस्ते हैं और लाखों ही अब क्रिस्तान होते चले हैं॥

विद्या की जड़ यही मुल्क है, इसी मुल्क से विद्या निकली थी, सब से पहले इसी मुल्क के आदमियों ने विद्या अभ्यास में चित्त लगाया, और यहां के पण्डित सदा से नामी और ज्ञानी और अन्य सब देशियों के मान्य और शिरोमणि रहे। मिसर और यूनानवाले

जिन्हों ने सारे फ़रंगिस्तान को आदमी बनाया, अपने बड़े पण्डितों के हाल में यही लिखते हैं कि वे हिन्दुस्तान से विद्या सीख आए, सिकन्दर इतना बड़ा बादशाह जिसकी सभा में अरस्तू-ऐसे बड़े बड़े योग्य यूनानी पण्डित मौजूद थे, इस देश से एक पण्डित को जिसका नाम वहांवालों ने कलन लिखा है और असल में कल्याण मालूम होता है, बड़ी खुशामद से अपने साथ ले गया था, उस समय उसके साथ यहां से कोई बड़ा पण्डित तो काहे को गया होगा, किसी ऐसे वैसे ही ने यह बात क़बूल की होगी, पर यूनानवाले उसकी प्रशंसा यों लिखते हैं कि जितने दिन वह सिकन्दर के पास रहा, उस ने अपने चलन में ज़रा भी फ़र्क़ न आने दिया, और अच्छी तरह हिन्द का धर्म निबाहा, और जब बहुत बूढ़ा हुआ तो उन सब के साम्हने तुषानल करके अपने आप जल गया। ईरान के प्रतापी बादशाह बहराम ने यहां से गवैये बुलवाये थे, गान-विद्या अब तक भी हिन्दुस्तान सी दूसरी जगह नहीं है। बग़दाद के बड़े ख़लीफ़ा मामूं ने यहां से वैद मंगवाए थे, और सदा उन्हीं वैदों की दवा खाता था, ग्रन्थ भी इस देश में आत्मतत्व ज्योतिष गणित भूगोल खगोल इतिहास नीति व्याकरण काव्य अलङ्कार न्याय नाटक शिल्प वैद्यक शस्त्र गान अश्व गज इत्यादि सब विद्या के अच्छे अच्छे मौजूद थे, परन्तु मुसलमानों ने अपनी अमलदारी में हिन्दुओं के शास्त्र नष्ट कर दिये और फिर राज्य भ्रष्ट होने के कारण इन विद्या की चाह न रहने से घटते घटते उनका पढ़ना पढ़ाना ऐसा घट गया कि अब तो कोई ग्रन्थ भी यदि हाथ लग जाता है उसका पढ़ाने और समझानेवाला नहीं मिलता। मुसलमान बादशाहों के समय में लोग फ़ारसी अरबी सीखते रहे, अब इन दिनों में अंगरेज़ी विद्या ने उन्नति पाई है, सर्कार

ने हिन्दुस्तानियों का हित बिचार उनके पढ़ने के लिये जगह जगह पर मदरसे और पाठशाले बैठा दिये हैं, और दिन पर दिन नये बैठते जाते हैं, उमेद है कि इस अंगरेज़ी भाषा के द्वारा फिर भी हमारे देशबासी सब विद्याओं में निपुण हो जावें, और जो सब नई नई बातें फ़रंगिस्तानवालों ने अपनी बुद्धि के बल से निकालीं और निर्णय की हैं उन से बड़े फ़ायदे उठावें ॥

बोली इस मुल्क में अब उर्दू मुख्य गिनी जाती है, परंतु यह केवल थोड़े ही दिनों से जारी हुई है, उर्दू का अर्थ लशकर है, जब तुर्क अफ़ग़ान और मुग़लों की हिन्दुस्तान में बादशाहत हुई, और उनके आदमी यहां लशकर के दर्मियान बाज़ारियों के साथ हर वक्त ख़रीद फ़रोख़्त में बोलने चालने लगे तो उनकी अरबी फ़ारसी और तुर्की इन लोगों की हिन्दी (१) के साथ मिलकर यह एक जुदी बोली बन गई, और इसका निकास उर्दू अर्थात् लशकर के बाज़ार से होने के कारन नाम भी इसका उर्दू की ज़ुबान रक्खा गया, महाराज पृथ्वीराज के भाटचन्द ने जो दोहरे बनाए हैं, वह उसी असली हिन्दी बोली में हैं, जो मुसलमानों के चढ़ाव से पहिले इस देश में बोली जाती थी, अब जिस बोली में फ़ारसी अरबी के शब्द कम रहते हैं, और हिन्दी हर्फ़ों में लिखी जाती है, उसे हिन्दी और जिस-

---

(१) पुरानी पोथियों में जो दस भाषा लिखी हैं अर्थात् पञ्चगौड़ और पञ्चद्राविड़ । पञ्चगौड़ में सारस्वत कान्यकुब्ज गौड़ मिथिला और उड़ेसा । और पञ्चद्राविड़ में तामल महाराष्ट्र कर्नाट तैलङ्ग और गुर्जर । सो इन में से जो बोली कान्यकुब्ज में बोली जाती थी वही हिन्दी की जड़ है ॥

में फ़ारसी अरबी के शब्द अधिक रहते हैं, और फ़ारसी हर्फ़ों में लिखी जाती है, उसे उर्दू कहते हैं, प्राचीन समय में यहां प्राकृत अर्थात् मागधी भाषा बोली जाती थी, बौद्ध मत और जैन मत की बहुत पोथी इसी भाषा में लिखी हैं, पर संस्कृत, जिस में वेद और पुराण इत्यादि हिन्दुओं के शास्त्र लिखे हैं, ऐसा नहीं मालूम होता कि कभी इस मुल्क की बोली रही हो, और सब लोग संस्कृत में बोल चाल करते हों, बरन इसीलिये ब्राह्मण इसे देवबाणी पुकारते हैं, मुख्य बोली कहने से मुराद हमारी उस बोली से है जो मध्यदेश में राजा की सभा और राजधानी में बोली जावे, जैसे कि उर्दू, दिल्ली आगरे लखनऊ में और मध्यदेश की सब सरकारी कचहरियों में बोली जाती है, और नहीं तो हिन्दुस्तान में हर जगह की एक जुदी बोली है, जैसे बङ्गाले में बङ्गाली, भोट में भोटिया, नयपाल में नयपाली, कश्मीर में कश्मीरी, पंजाब में पंजाबी, सिन्ध में सिन्धी, गुजरात में गुजराती, रजपुताने में देसवाली, ब्रज में ब्रजभाषा, तिरहुत में मैथिली, बुन्देलखण्ड में बुन्देलखण्डी, उड़ेसे में उड़िया, तिलंगाने में तैलंगी, पूना सितारे की तरफ़ महाराष्ट्री, कर्नाटक में कर्नाटकी, द्रविड़ में तामली, जिसे अन्ध्र भी कहते हैं, बोलियां बोली जाती हैं। इन सबमें ब्रजभाषा बहुत प्रसिद्ध, और अत्यन्त मधुर कोमल प्यारी और रसीली है, और कितने ही काव्य के ग्रन्थ इस भाषा में कवि लोगों ने बहुत सुन्दर और नामी रचे हैं॥

चीज़ें यहां सब तरह की बनती हैं, ज़िन्दगी के ज़रूरी और आराम दोनों तरह के असबाब यहां हाथ लग सकते हैं, और सब क़िस्म के कारीगर मौजूद हैं, पर तो भी कश्मीर की शाल और ढाके की मलमल बहुत प्रसिद्ध है, यह दोनों चीज़ जैसी इस मुल्क में बनती है दूसरे

मुल्कों के आदमी हर्गिज़ नहीं बना सकते। सारी दुनिया के बादशाह इन्हीं कश्मीरियों के बुने दुशाले ओढ़ते हैं, अंगरेज़ों ने इंगलिस्तान में हज़ारों तरहकी कलें बनाईं, परन्तु इस देश की सी शाल और मलमल बनाने की उन्हें भी कोई तदबीर न सूझी, न ऐसी नर्म और गर्म शाल वहां बन सकती, और न ऐसी बारीक मज़बूत और मुलाइम मलमल तैयार हो सकती है, अब भी वहां की जो सुकुमार बीबियां हैं, गर्मी में ढाके की मलमल का गौन पहनती हैं। अकबर के समय में ढाके के दर्मियान पांच अशरफ़ी तक की मलमल और १५ अशरफ़ी तक का खासा तैयार होता था, और दुशाला अब भी कश्मीर में सात हज़ार रुपये तक का बुना जाता है। सिवाय इसके कश्मीर के कागज़ और कलमदान, बनारस के कमखाब दुपट्टे और गुलबदन, फ़रुखाबाद की छींटें, मुलतान के रेशमी कपड़े और क़ालीन, मुर्शिदाबाद के बूंद और कोरे, दिल्ली के आइने और नैचे, ग़ाज़ीपुर का गुलाब, शाहजहांपुर का क़न्द, गया और जयपुर की काले और सफ़ेद पत्थरों की चीज़ें, अमरोहे और चनार के मिट्टी के बर्तन बहुत बढ़िया और अच्छे होते हैं॥

तिजारत इस मुल्क में कम है, यहां के आदमी ज़मीदारी की तरफ़ बहुत मन देते हैं, और अपने मुल्क से निकलकर दूसरे मुल्क में तो बनज बेवपार के लिये कदापि नहीं जाते। अगले ज़माने में दूसरी विलायतों के आदमी यहां आकर इस मुल्क की चीज़ें ले जाते थे, और उसके बदल में सोना चांदी देजाते। पर अब फ़रंगिस्तान वालों ने कल के बल से वस्तु के बनाने में श्रम और समय घटाकर उन्हें ऐसा सस्ता कर दिया, और दुरुस्ती और सफ़ाई में इस दर्जे को पहुंचाया कि सारी दुनिया उन्हीं की चीज़ें पसन्द करती है और

हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई कोई नहीं पूछता, बरन हिन्दुस्तानी लोग भी अपने सब काम उन्हीं विलायती चीज़ों से चलाते हैं, इस देशकी बनी हुई चीज़ से राज़ी नहीं होते, अगले ज़माने में ईरान तूरान और रूम यूनान इत्यादि देशों के सौदागर खुश्की पिशावर की राह से ऊंटों पर माल ले जाते थे, और मिसर और अरब के बेवपारी समुद्र की राह जहाज़ लाते थे, पर यह जहाज़ उतनी ही दूर में चलते थे, जिसे अरब की खाड़ी कहते हैं, वे लोग तब जहाज़-चलाने की विद्या में ऐसे निपुण न थे जो किनारा छोड़कर दूर खाड़ी से बाहर महासागर में अपना जहाज़ लेजाते। फ़रंगिस्तानवाले समुद्र की राह अपने जहाज़ हिन्दुस्तान में लाने के वास्ते बहुत तड़फते थे, उन दिनों में वे भी अरब और मिसरवालों की तरह जहाज़ चलाने में चतुर न थे, और न भूगोल विद्या अच्छी तरह जानते थे, समुद्र को अपार और अगम्य समझ के सदा अपने जहाज़ों को तट से निकट रक्खा करते, पहले तो वहांवाले हिन्दुस्तान आने के लिये अपने जहाज़ उत्तर समुद्र में ले गये इस मंसूबे पर कि रूस और चीन की परिक्रमा देकर यहां पहुंचें, पर जब कितने ही जहाज़ उस समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फसकर तबाह होगये और रूस की हद से आगे न बढ़ सके, तब उस राह को छोड़कर पश्चिम तरफ़ अटलांटिक समुद्र में चले, वहां उनका जहाज़ अमरिका के महाद्वीप में जा लगा, और आगे न बढ़ सका, तब हारकर दक्षिण की राह ली, और अफ़रीका के किनारे किनारे केपअवगुडहोप से जिसे कोई उत्तमाशा अन्तरीप भी कहता है, मुड़कर हिन्दुस्तान में आए। जिस आदमी ने यह समुद्र की राह फ़रङ्गिस्तान से हिन्दुस्तान को निकाली उसका नाम वास्को-डिगामा था, आठवीं जुलाई सन् १४९७ को कि जिन दिनों में सुल्तान

सिकन्दर लोदी दिल्ली के तख़्त पर था वास्कोडिगामा तीन जहाज़ लेकर पुर्टगाल की राजधानी लिसबन से वहां के बादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान की राह ढूंढ़ने के वास्ते निकला, और साढ़े दस महीने के अर्से में उसका जहाज़ कल्लीकोट में आकर लगा। निदान फ़रंगियों का यह पहला जहाज़ था कि जिसने हिन्दुस्तान का किनारा छुआ, और वास्कोडिगामा पहला फ़रंगी था कि जो समुद्र की राह से इस देश में पहुंचा, और कल्लीकोट पहला नगर था जिस में इनका क़दम आया। कहते हैं कि जब वास्कोडिगामा के जहाज़ लिसबन से चले थे तो वहांवालों को फिर इन जहाज़ों के देखने की आस न थी, और इन जहाज़ियों को मुर्दों में गिन चुके थे, जब इन के जहाज़ लौट कर लिसबन में पहुंचे तो वहां के राजा और प्रजा सब को अत्यन्त हर्ष हुआ और बड़ी ही खुशियां मनाईं। पुर्टगालवालों की देखा देखी फिर फ़रंगिस्तान के और लोग भी अपने जहाज़ इस राह से यहां लाने लगे, और हिन्दुस्तान की तिजारत से बड़े बड़े फ़ाइदे उठाए, जब से धूएं के जहाज़ बनने लगे तब से यहां का आना जाना फ़रंगिस्तान वालों को और भी बहुत सुगम होगया, और यद्यपि स्वीज़ के डमरुमध्य के पास थोड़ी दूर खुशकी तो अवश्य चलना पड़ता है. परन्तु रेडसी से मेडिटरेनियनसी में चले जाने से यह राह फ़रंगिस्तान की बहुत ही निकट पड़ती है। इस राह यहां से धूएं के जहाज़ पर इंगलिस्तान तक जाने में डेढ़ महीना भी नहीं लगता। फ़रंगिस्तान और अमरीका से यहां शराब, कपड़े, हथियार, औज़ार, बरतन, धात खुशबू, किताबें, ज़ेवर, खाने की चीज़ें, लिखने पढ़ने की वस्तु, कलें, खिलौने, मकान सजाने के असबाब, और तरह बतरह के अद्भुत और अनोखे पदार्थ आते हैं। और यहां से नील, शोरा, अफ़यून, रेशम, हाथीदांत,

रुई, चांवल, शक्कर, गोंद, जवाहिर, शाल, मलमल, गर्म मसाले और दवाइयां, उन मुल्कों को जाती हैं। सिवाय इन मुल्कों के ईरान तूरान तिब्बत अफ़गानिस्तान, बर्म्मा चीन अरब मिसर इत्यादि एशिया और अफ़रीक़ा के देशों से भी इस मुल्क की तिजारत जारी है। अपने मुल्क में अर्थात् एक शहर से दूसरे शहर को हिन्दुस्तानी लोग जहां दर्या है वहां नाव पर, और जहां सड़कहै वहां गाड़ियों पर, और रेगिस्तान में ऊंटों पर, और पहाड़ों में भेड़ी बकरी और याकबैलों पर और बाक़ी जगहों में बैल टट्टू और खच्चरों पर, तिजारत का असबाब ले जाते हैं। बहुत जगहों में वार्षिक मेले भी हुआ करते हैं, कि जिन में सब तरफ़ के व्यापारी माल लाते हैं। हरिद्वार का मेला जो हर साल मेष की संक्रांति को हुआ करता है, इस देश में सरनाम है, पर उसमें भी बारहवें बरस जो कुम्भका मेला होता है, वह बहुतही भारी है, कभी कभी बीस लाख तक आदमी इकट्ठा हो जाते हैं ॥

राज्य इस देश का सदा से सूर्य और चन्द्रवंशी राजाओं के घराने में रहा, परंतु अगले समय के हिन्दू राजाओं का वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नहीं मिलता, और न उनके साल संवत् का कुछ पता लगता है, जो किसी कवि या भाट ने किसी राजा का कुछ हाल लिखा भी है, तो उसे उसने अपनी कविताई की शक्ति दिखलाने के लिये ऐसा बढ़ाया कि अब सच से झूठ को जुदा करना बहुत कठिन पड़ गया। सिवाय इसके ब्राह्मणों ने बौध राजाओं को असुर और राक्षस ठहराकर बहुतों का नाम मात्र भी अपने ग्रन्थों में लिखना उचित न समझा, और इसी तरह बौध ग्रन्थकारों ने इनके राजाओं का वर्णन अपनी पुस्तकों में लिखना अयोग्य जाना, तिस पर भी बहुत से ग्रन्थ अब लोप हो गए, बौधों ने ब्राह्मणों के ग्रन्थ नाश

किये, और ब्राह्मणों ने बौधों के ग्रन्थ गारद किये, मुसलमानों ने दोनों को मिट्टी में मिला दिया। छापे की हिक्मत जिस्से ग्रन्थ अमर हो जाते हैं, आगे कोई नहीं जानता था, निदान हिन्दुस्तान के अगले राजाओं की बंशावली और वृत्तान्त शृङ्खलायुक्त और सम्पूर्ण ठीक ठीक अखण्डित अब कहीं से भी नहीं मिल सकता। कहते हैं कि सब से पहला राजा इस देश का मनु का बेटा इक्ष्वाकु हुआ, उसकी राजधानी अयोध्या थी, उसके कुल में बड़े बड़े नामी राजा हुए, सब के भूषण राजा रामचन्द्र तक उस गद्दी पर इक्ष्वाकु बंश के सत्तावन राजा बैठ चुके थे, और फिर छप्पन रामचन्द्र से सुमित्र तक बैठे। सुमित्र अयोध्या का पिछला राजा था, विक्रमादित्य से कुछ दिन पहले उसका देहान्त हुआ। जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजा तीनों अपनी असल रामचन्द्र की औलाद से बतलाते हैं। राठौर अर्थात् जोधपुरवाले मुसलमानों के चढ़ाव के समय कन्नौज की गद्दी पर थे, जब मुसलमानों ने वहां से निकाला तो मारवाड़ में आए। कछवाहे अर्थात् जयपुरवाले पहले नरवर में थे। गहलौत अर्थात् उदयपुरवालों की पहली राजधानी सूरत के पास वल्लभीपुर था। इक्ष्वाकु के बहनोई बुध के बंशवाले राजा चन्द्रबंशी कहलाए, इनकी राजधानी प्रयाग में थी। बुध के बेटे पुरूरव के पड़पोते ययाति के तीन बेटे थे, उरु, पुरु और यदु, पुरु की सत्ताईसवीं पीढ़ी में हस्ती ने हस्तिनापुर बसाया। हस्ति की तेईसवीं पीढ़ी में युधिष्ठिर ने महाभारथ जीतकर इन्द्रप्रस्थ में, जिसे अब दिल्ली कहते हैं, राज किया। यदु के कुल में इक्यावन पीढ़ी के बाद कृष्ण और बलराम उस बंश के भूषण भये, युधिष्ठिर के भाई अर्जुन से लेकर तीस पीढ़ी तक उसी के कुल में इन्द्रप्रस्थ की गद्दी चली आई। पिछला राजा क्षेमराज

जो सुस्त और अचेत हुआ, तो उसका मंत्री विसर्व उसे मारकर गद्दी पर आप ही बैठा। विक्रमादित्य के समय में विसर्व से लेकर इस गद्दी पर अट्ठतीस राजा तीन घरानों के बैठ चुके थे। अट्ठतीसवें राजा राजपाल को जब कमाऊं के राजा सुखवन्त ने मार इन्द्रप्रस्थ पर कब्ज़ा करना चाहा तो महाराज विक्रम ने चढ़ाव किया और वह राज सारा अपने आधीन करलिया। फिर कोई सात सौ बरस पीछे समय के फेर फार से यह इन्द्रप्रस्थ तोमर अथवा तवार राजाओं की राजधानी हुआ, और इक्कीस पीढ़ी तक उन्हीं के हाथ में रहा, उन्नीस पीढ़ी के बाद राजा अनङ्गपाल ने पुत्रहीन होने के कारन अपने नाती पृथ्वीराज को गोद लिया। विक्रमादित्य सन् ईसवी से छप्पन बरस पहले प्रमर अथवा पवार वंश में उज्जैन की राजगद्दी पर बैठा था, यह राजा बड़ा प्रतापी हुआ, लोग उसके गुण आज तक गाते हैं, और आज तक भी उसे परजन-दुखभञ्जन पुकारते हैं, यद्यपि वह ऐसा पराक्रमी और इतना बड़ा राजा था, पर तौ भी उस के सीधेपन और तपस्या को देखो कि राजाधिराज होकर चटाई पर सोता और अपने हाथ सिप्रा नदी से तूंबा भरकर पानी ले आता, संवत् हिन्दुस्तान में उसी का वर्ता जाता है। उत्तर दक्षिण और पूर्व से तो उस समय में हिन्दुस्तान को बाहर के शत्रुओं का कुछ भी भय न था, क्योंकि तब जहाज़ चलाने की विद्या लोगों को अच्छी तरह न आने से दूसरी विलायत के आदमी कदापि समुद्र की राह, जो हिन्दुस्तान के गिर्द प्राय आधी दूर तक खाई तरह घूमा है, इस मुल्क पर चढ़ाव नहीं कर सकते थे, और न कोई हिमालय ऐसे पर्वत के पार हो सकता था, इस मुल्क में आने के लिये पश्चिम तरफ़ अर्थात् पिशावर मानो दर्वाज़ा था, और ईरान इत्यादि सिन्धु

पार के देशवाले उसी राह से इस मुल्क पर चढ़ाव करते थे, सब से पहला चढ़ाव जिसका पक्का पता लगता है, सिकन्दर का था। फ़ारसी तवारीख़ों में यह बात अशुद्ध लिखी है, कि वह कन्नौज तक आया। खुद सिकन्दर के साथी लोग अपनी यूनानी-किताबों में लिखते हैं, कि वह सतलज इस पार न उतर सका, गंगा के दर्शनों की उसके मन में लालसा ही रही। पंजाब के राजाओं को तो उस ने लड़ भिड़ कर ज्यों त्यों अपने मुवाफ़िक़ कर लिया था, पर जब उसकी फ़ौज ने सुना, कि मगधदेश का नागवंशी राजा महानन्द छ लाख पियादे तीस हजार सवार और नौ हजार हाथी की भीड़ भाड़ रखता है, तो उनका दिल यकबारगी टूट गया और आगे बढ़ने से इनकार किया, नाचार फ़ौज के फिर जाने से सिकन्दर को भी उसी जगह से लौटना पड़ा। सिकन्दर के पीछे फिर कई बार ईरान के बादशाहों ने इस देश पर चढ़ाव किया, पर जय ऐसी किसी ने न पाई, जो मध्यदेश तक आता, जो चढ़े सो सिन्धुही के तटस्थ देशों में लड़ भिड़ कर लौट गए, यहां तक कि सन् १००१ ईसवी में महमूद ग़ज़नवी ने अपने लश्कर की बाग हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ी। उस समय में उज्जैन और मगध का राज बहुत दिनों से नष्ट होगया था, और नए नए घरानों के नए नए राजा खण्ड खण्ड में राज करते थे, क्षत्रियों का बहुधा नाश होगया था, और ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जंगली मनुष्यों तक गद्दी पर बैठ गए थे। दिल्ली तवारों के आधीन थी कन्नौज राठौरों के हाथ था, और मेवाड़ में गहलौतों का राज था, आपस में नित के बैर से बाहर के शत्रुओं का मन बढ़ा, और सब का एक महाराजाधिराज के न रहने से उनको इस देश में घुस आना सहज हो गया, निदान महमूद ने पच्चीस बरस के भीतर बारह

बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, और बारहीं बार जय पाई, वह कन्नौज और कालिञ्जर तक आया, और यहां तक सारा मुल्क लूट मार से तबाह कर दिया, महमूदशाह के विजयी होने से हिन्दुस्तान का भरम खुल गया, और फिर हर एक यहां आकर लूट मार मचाने लगा। सन् ११९१ में शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, पहली लड़ाई में तो उस ने महाराज पृथीराज से शिकस्त खाई, पर दूसरी में, जो थानेसर के पास तलावड़ी के मैदान में हुई थी और जिस में कम से कम तीन लाख सवार और तीन हज़ार हाथी पृथीराज के साथ थे और पैदलों की कुछ गिनती न थी, पृथीराज को उसने पकड़ लिया, और दिल्ली अपने गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक को दी। पृथीराज हिन्दुस्तान का आखिरी स्वाधीन राजा था, हिन्दुओं का राज उसी के साथ गया॥

॥ कबित्त ॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये
जात हू न जाने ज्यों तरैया परभात की।
बलि बेणु अम्बरीष मानधाता महलाद
कहां लों कहिये कथा रावण ययात की॥
वे हू न बचन पाये काल कौतुकी के हाथ
भांति भांति सेना रची घने दुख घातकी।
चार चार दिना को चवाव सब कोउ करौ
अन्त लुट जैहै ज्यों पूतरी बरात की॥१॥

सन् १२०६ में कुतबुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा, और यही गुलाम यहां हिन्दुस्तान में मुसलमानों की बादशाहत का बुनियाद-डालनेवाला हुआ, फिर धीरे धीरे ये सारे मुल्क के मालिक बनगए,

और नौबत बनौबत एक खानदान बिगड़ने के बाद दूसरे खानदान के आदमी सल्तनत करते रहे, यहां तक कि सन् १३९८ में समरकन्द के बादशाह तैमूरलंग ने बानवे दस्ते सवारों के लेकर चढ़ाव किया, और दिल्ली को फ़तह कर लिया। तैमूर तो दिल्ली में सोलहीं रोज रहकर अपने देश को चला गया लेकिन उसके पोते के पड़पोते बाबर बादशाह ने सन् १५२६ में पानीपत की लड़ाई के दर्मियान दिल्ली के बादशाह इबराहीम लोदी को मारकर यह सारा मुल्क अपने क़ब्जे में कर लिया। बाबर का पोता अकबर इस मुल्क में बड़ा नामी बादशाह हुआ, बरन ऐसा बादशाह तो मुसल्मानों में कोई भी नहीं था, आज पर्य्यंत लोग उस का यश गाते हैं, और भलाई के साथ उसे याद करते हैं। जिन दिनों इस का बाप हुमायूं शेरशाह से शिकस्त खाकर सिन्ध की राह ईरान को भागाथा, तो उसी सिन्ध के रेगिस्तान में उस आफ़त के दर्मियान, कि हुमायूं के पास चढ़ने को घोड़ा भी मौजूद न था, एक सवार के टट्टू पर चलता था और पीने को पानी मुश्किल से मिलता था, अकबर का जन्म हुआ, और जब हुमायूं ने अपने भाई कामरां से, जो काबुल में था, आते वक्त लड़ाई की तो कामरां ने अकबर को, जो उस वक्त उसके क़ाबू में था, भाले से बांधकर क़िले के बुर्ज पर लटका दिया था, कि जिस में हुमायूं की फ़ौज क़िले पर हथियार न चलावे, क्या महिमा है सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की, कि वही अकबर सब बादशाहों का सिरताज हुआ, वह तेरह बरसकी उमर में तख्तपर बैठा, और इक्यावन बरस राज किया। यद्यपि यह इतना बड़ा बादशाह था कि जिस के इसतबल में पांच हजार हाथी, और दश हजार घोड़े खासे के बँधतेथे, और जिस का डेरा दौलतसरा कमखाब के फ़र्श और मखमली

मोती टके हुए पर्दोंवाला सफ़र के वक्त पांच मील के घेरे में खड़ा होता, हर सालगिरह को सोने से तुलादान करता, और सोने के बादाम अपने दरबारियों में लुटाता, पर तो भी वह रइयत के साथ बहुत सीधा सादा रहता। आठ पहर में केवल एक बार खाता गोश्त से अकबर परहेज़ रखता, हिंसा बुरी जानता, नाम को मुसलमान था मन से सूरज की पूजा करता, आदित्यवार के दिन उसकी अमलदारी भर म जीव मारने की मनाही थी। रइयत उसे इतना चाहती, कि जीते जी उसे मन्नत चढ़ाने लगी थी, और कितनेही आदमी उस के मुरीद अर्थात् शिष्य हो गए थे। उसके राज्य में रुपयेका दो मन पौने चौदह सेर जौ बिकताथा, और एक मन बाईस सेर गेहूं, बाजे बाजे आईन इस बादशाह ने बहुतही अच्छे जारी किये थे। यह भी उसी का जारी किया हुआ आईन था, कि जब तक दूलहा दुलहन समझदार न हों, कि एक दूसरे से अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करें, छोटी उमर में हर्गिज़ शादी न होने पावे। जैसे बुद्धिमान और विद्या में निपुण लोग अकबर की सभा में इकट्ठा हुए थे, ऐसे किसी दूसरे बादशाह के समय में नहीं भये, शेख़ अबुलफ़ज़ल, राजा बीरबल, राजा टोडलमल, नव्वाब ख़ानख़ाना, तानसैन इत्यादि उस के यहां नव रत्न में गिने जाते थे, यह मिहनती मुश्किल काम राजा टोडलमल और अबुलफ़ज़ल का था, जो इस मुल्क के दफ़तर को हिन्दीसे फ़ारसी में उतारा, अब तक भी बहुत बन्दोबस्त अबुलफ़ज़ल के बांधे हुए उसी तरह पर चले जाते हैं। सूबे, सर्कार, महाल, पटवारी, क़ानूनगो, यह सब उसी ने मुक़र्रर किये थे, निदान शाहआलम तक यह बादशाहत इसी घराने में चली आई। शाहआलम से अंगरेज़ोंने लेली। यह घराना तैमूर का मुसलमानों की सल्तनत में सब से पिछला था, जिस

ने यहां बादशाहत का डङ्का बजाया। शाहआलम के पोते बहादुर-शाह अब भी रंगून में नज़रबन्द हैं, खाने को सर्कार से पाते हैं, बादशाहत शाहआलम के साथ गई, अब यहां सिक्का सर्कार अंगरेज़ बहादुर का चलता है। कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलम तक पैंसठ मुसलमान बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, और शाहआलम के मरने तक पूरे छ सौ बरस बादशाहत करते रहे। इन में से उनतीस तो अपनी मौत मरे, और तेईस दूसरे के हाथ से मारे गए, सात बन्दीखाने में मरे, और छ का पता नहीं, पड़ता फैलाने से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर नौ बरस बादशाहत आती है। स्वाधीन स्वेच्छाचारी बादशाहों का प्राय सब जगह ऐसाही हाल है। यह केवल आईनी—बन्दोबस्त का फ़ाइदा है, कि जो इंगलिस्तान में इथलरेड से चौथे विलियम तक ८५६ बरस के अर्से में कुल ४२ बादशाह हुए, और पड़ता फैलाने के हिसाब से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर बीस बरस सल्तनत करते रहे, कि जो यहां की बनिस्बत दूनी से भी अधिक है। अंगरेज़ों ने जब देखा कि पुर्टगाल इत्यादि फ़रंगिस्तान की विलायतों के आदमी हिन्दुस्तान में जाते हैं, और यहां की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते, तो फिर इन दैवी पुरुषों से कब चुप चाप रहा जा सकता था, इन्हों ने भी अपने माल के जहाज़ यहां को रवानः किये। और सन् १५९९ में लन्दन—शहर के दर्मियान बहुत से आदमियों ने आपस के साझे में कुछ रुपया इकट्ठा करके इस मुल्क में बनज—ब्योपार—करने के लिये एक कोठी खड़ी की, और दूसरे ही साल वहां के बादशाह से कई एक शर्त्तों पर इस बात की अपने नाम एक सनद लिखवा ली, कि सिवाय इन साझियों के दूसरा कोई अंगरेज़ हिन्दुस्तान में तिजारत न करने पावे। लेकिन

जब इस मुल्क में उन्हों ने अपना क़ब्ज़ा और दख़ल करना शुरू किया, तो सन् १८१३ में उन को तिजारत-करने की मनाही हो गई, और वह अटक उठगई। अंगरेज़ी में साझियों को कम्पनी कहते हैं, इसलिये इन साझी-सौदागरों का नाम भी ईस्टइण्डिया कम्पनी रक्खा गया। कम्पनी किसी बुढ़िया का नाम नहीं है, जैसा लखनऊ में जब लार्ड वालेंशिया गवर्नर जेनरल विलिज़्ली के भानजे सैर को गये थे तो अख़बार नवीसों ने वहां बादशाह से अर्ज़ की, कि लाट साहिब के भानजे कम्पनी के नवासे तशरीफ़ लाये हैं, वे लोग तब तक यही जानते थे, कि कम्पनी बुढ़िया, और गवर्नर जेनरल उसके बेटे हैं। जब इङ्गलिस्तान में यह कम्पनी खड़ी हुई, तो यहां तख़्त पर अकबर बादशाह था। हिन्दुस्तान में पहले ही पहल इन की कोठियां सन् १६११ में सूरत, अहमदाबाद, खम्भात और घोघे में जारी हुई, १६५२ में बंगाले के दर्मियान बलेश्वर में, और उस से दो बरस पीछे मन्द्राज में भी होगई। सन् १६६४ में पुर्तगाल के बादशाह से बम्बई का टापू मिला। सन् १७०० में बंगाले के सूबेदार ने कलकत्ता, गोविन्दपुर और छोटानटी, ये तीन गांव इन को दे दिये, और कलकत्ते में एक क़िला भी, जिस का नाम अब फ़ोर्ट विलियम है, बनाने की आज्ञा दी, उस समय कलकत्ते में कुल सत्तर घरों की बस्ती थी। सन् १७५६ में बंगाले के सूबेदार नव्वाब सिराजुद्दौला ने इस बात पर, कि अंगरेज़ों ने उसके एक आदमी को, जो ढाके से कुछ ख़ज़ाना लेकर भागाथा पनाह दी, उन से नाखुश होकर कलकत्ता छीन लिया, और १४६ अंगरेज़ों को, जो उस समय वहां मौजूद थे, ऐसे एक छोटे से घर में, जिस का बिस्तार बीस फ़ुट मुरब्बा से अधिक न था, और जिसे अब तक वे

लोग "ब्लेकहोल" अर्थात् कालीबिल पुकारते हैं, बन्द किया, कि दूसरे दिन उन में से कुल २३ जीते निकले, बाक़ी १२३ रात ही भर में वहां दम घुटकर मर गए। निदान यह खबर सुनते ही कर्नेल क्लैव साहिब मन्दराज से ९०० गोरे और १५०० सिपाही लेकर कलकत्ते में आए, कलकत्ता भी लिया और फिर मुर्शिदाबाद पर चढ़ाव कर दिया। सन् १७५७ की तेईसवीं जून को पलासी की लड़ाई में नव्वाब की फ़ौज ने, जो सत्तर हज़ार से कम न थी, शिकस्त खाई, नव्वाब भागा और उसी दिन मानो अंगरेज़ी अमल्दारी की नेव जमी। थोड़े ही दिनों पीछे सन् १७६५ में शाहआलम ने, जो तब दिल्ली के तख़्त पर था, बिहार, बंगाला और उड़ेसा, इन तीनों सूबे की इस्तिमरारी दीवानी का परवाना कम्पनी के नाम लिख दिया, कि जिसमें दो करोड़ रुपये साल की आमदनी का ठिकाना हुआ। और वज़ीर आसिफुद्दौला ने रुहेलों की लड़ाई में मदद लेनेकेलिये सन् १७७५ में बनारस का इलाक़ा इन के हवाले किया। अब देखना चाहिये महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, कि ये लोग कहां से कहां बढ़ गए, और किस दर्जे को पहुंचे, जो लोग सौदागरी के लिये घर से निकले वे अब यहां का राज करते हैं, और जो लोग लाखों सवार के धनी कहलाते थे, वे इन से खाने को टुकड़े मांगते हैं। पर सच पूछो तो यह केवल अपनी नीयत का फल है, अंगरेज लोग यहां सौदागरी के लिये आये थे, और वही सौदागरी मात्र चाहते थे, अपने बचाव का बन्दोबस्त अवश्य रखते थे, और जिसपर बिपत पड़ती उसे मदद देते, पर यहां वालों ने इन को छेड़ना और सताना शुरू किया, जैसा किया वैसा ही फल पाया, जिसने इन के साथ ज़ियादती की, इन्हों ने भी उसे अच्छी तरह उस ज़ियादती का मज़ा

चखाया। उस वक्त में हिन्दुस्तान की बादशाहत का अजब हाल था, आपस की फूट और नित के लड़ाई झगड़ों से तैमूर का खानदान जीर्ण और जराग्रस्त होगया था, तिस में भी सन् १७३९ में ईरान के बादशाह नादिरशाह और फिर थोड़े ही दिनों बाद पैदर्पै तीन चढ़ाव अहमदशाह दुर्रानी के जो उसके अमीरों में था इस मुल्क पर ऐसे हुए कि वह और भी जर्जरीभूत हो गया, सूबेदारों ने बादशाह को नाम मात्र भी मानना छोड़ दिया, और जिसके बाप दादा ने कभी चप्पे भर ज़मीन पर दखल न पाया था उसने भी हिन्दुस्तान की सल्तनत पर दिल दौड़ाया, इधर दक्षिण के सूबेदार निज़ामुल्मुल्क ने हैदराबाद में अपनी हुकूमत जमाई, और उधर नव्वाब वज़ीर ने अवध का सूबा अपने तले दबालिया, इधर आगरे तक मरहठों ने लूट मार मचादी, और उधर सरहिंद तक सिक्खों का हल्ला होने लगा, बादशाह लोग दिल्ली के क़िले में पड़े थे, पर वहां भी उन को कौन बैठा रहने देता था, आज एक आदमी तख़्त पर बैठा कल दूसरे ने उसका गला काट सिक्का अपने नाम का चलाया, अभी तलवार का लहू सूखने नहीं पाया कि तीसरे ने उसी तलवार से उस को भी मौत का जामा पिन्हाया और ताज बादशाही का अपने सिर पर रखा, कभी बादशाह मरहठों की क़ैद में पड़ता था और कभी पठान उसे घेर लेते थे, सन १७०७ से कि जब औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह अकबर का पड़पोता मरा सन् १७६० अर्थात् शाहआलम के राज्याभिषेक तक तिरपन बरस के अर्से में नादिरशाह और अहमदशाह छोड़कर चौदह बादशाह दिल्ली के तख़्त पर बैठे, और इन में से यदि मुहम्मदशाह की सल्तनतके तीस बरस निकाल डालो तो तेईस बरस में तेरह बादशाह ठहरते हैं अब सोचो

जहां तख़्त औ ताज की ऐसी छीनछान मचेगी वहां की सल्तनत भी भला क़ाइम रह सकती है ? सदा से यही दस्तूर चला आया जब सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर देखता है कि अब लोग मेरी प्रजा का पालन नहीं कर सकते और जिस काम के लिये इन्हें नियुक्त किया था उसे छोड़कर विषय बासना में पड़ गए, तब तुर्त उन्हें दूर करता है और जो उसके बंदे इस काम के योग्य हैं उन्हें उनकी जगह पर बिठलाता है इस में कुछ सन्देह नहीं कि जो इस हालत में अंगरेज़ लोग हिन्दुस्तान को न लेते फ़रासीस अथवा फ़रंगिस्तान की किसी दूसरी विलायत के बादशाह के क़ब्ज़े में आ जाता, और यदि वे भी न लेते तो कोई दूसरी क़ौम सिन्धु पार से आकर इस मुल्क को ज़ेर करती, तैमूर के ख़ानदान से बादशाहत निकल चुकी थी, ईश्वर की कृपा से दिन हिन्दुस्तानियों के अच्छे थे जो अंगरेज़ यहां आए, मानो सूखे हुए खेत फिर लहलहाए। निदान पहले तो हैदरअली के बेटे टीपू सुलतान का सिर खुज लाया कि इन अंगरेज़ों से बैर बिसाहा, और बैठे बिठाए इनके साथ लड़ना बिचारा। हैदरअली मैसूर के राजा का नौकर था, नमकहरामी करके उसका सारा मुल्क अपने क़ब्ज़े में कर लिया, टीपू का यह इरादा था कि अंगरेज़ों को दक्षिण से निकाल दे, और उभारा उसे फ़रासीसियों ने था, कई बरस के लड़ाई झगड़े में आख़िरकार सन् १७९९ में श्रीरङ्गपट्टन के हल्ले के दर्मियान अंगरेज़ी सिपाहियों के हाथ मारा गया, और मुल्क उसका बहुत सा सरकार के इख़्तियार में आया। उन्हीं दिनों में सरकार अंगरेज़ बहादुर को मरहठों की तरफ़ से खटका पैदा हुआ, फ़रासीसियों को वे भी नौकर रखने लगे थे, लार्ड विलिज़्ली साहिब ने जो उन दिनों यहां के गवर्नरजेनरल थे उनके पेशवा बाजीराव से

दोस्ती करनी चाही, उस वक्त तो दौलतराव सेंधिया के बहकाने से उसने न माना, लेकिन जब जस्वंतराव हुल्कर ने उस पर चढ़ाव किया तो सरकार से क़ौल क़रार भी किया और बुंदेलखण्ड का इलाक़ा भी दे दिया, यह बात सेंधिया को बुरी लगी, उसने चाहा कि नागपुरवाले से मिलकर कुछ फ़साद उठावे, पर इधर लार्ड लेकने डीगलसवारी और दिल्ली, और उधर जेनरल विलिज्ली ने असाई और अरगांव, की लड़ाइयों में इन दोनों के दांत ऐसे खट्टे किये कि सन् १८०३ में नागपुर के राजा ने तो कटक का जिला और सेंधिया ने अन्तरवेद अर्थात् गंगा जमना के बीच का मुल्क उनको देकर अपना पीछा छुड़ाया इस नए मुल्क के हाथ लगने से अंगरेज़ों की अमल्दारी दिल्ली तक पहुँच गई। उन दिनों में शाहआलम सेंधिया की क़ैद में था, लार्ड विलिज्ली ने उसको उसकी क़ैद से छुड़ाकर गुज़ारे के वास्ते लाख रुपए महीने से कुछ ऊपर पिंशन मुक़र्रर कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद नयपालियों ने अपनी हद से पैर निकाला, और पहुँचते पहुँचते कांगड़े; तक पहुँचे, जब पहाड़ से उतर कर तराई में अंगरेज़ी रऐयत को सताने लगे तो सरकार ने उनको भी नसीहत देना मुनासिब समझा, और सन् १८१४ में मलौन के क़िले पर उनकी फ़ौज को शिकस्त देकर काली नदी से पश्चिम तरफ़ के पहाड़ तो अपने आधीन कर लिये, और पूर्व तरफ़ के उनके पास रहने दिये। यद्यपि बाजीराव ने बिपत के समय अंगरेज़ों से क़ौल क़रार कर लिया था पर दिल से इन के साथ नर्द दग़ाकी खेलना चाहता था, छठी नवम्बर सन् १८१७ को पूना के दर्मियान रज़ीडंटी में आग लगवा दी, और अंगरेज़ी सिपाही जो थोड़े से वहां रहते थे उनका मुक़ाबला किया। इधर सेंधिया की भी एक चिट्ठी नयपाल के राजा

के नाम इस मज़मून की पकड़ी गई, जिस से उसकी दिली दुश्मनी सर्कार अंगरेज़ के साथ साबित हो गई। पिंडारों ने प्राय पच्चीस हज़ार सवार के इकट्ठा होकर सारे मुल्कमें लूट मार मचा रखीथी। हुल्कर के कारदार भी सर्कार के दुश्मनों की पच्छ करते थे। अमीरख़ां पठानों के साथ रजपुताने को तबाह कर रहा था। यद्यपि सब तरफ़ इस ढब से हलचल पड़गई थी, और सारे हिन्दुस्तान में फ़साद की आग भड़का चाहती थी, पर लार्ड हेसटिंग्ज़ ने जो उस समय गवर्नर जेनरल था, इस होसयारी के साथ सबका बंदोबस्त किया, और फ़ौजों को इस ढब से चढ़ाया, कि इधर तो सेंधिया को जो सर्कार ने कहा सब मानकर रजपुताने से अपना इख़्तियार बिलकुल उठा लेना पड़ा, उधर मीरख़ां ने अपना तोपख़ाना सर्कार के हवाले कर दिया, इधर बाजीराव पेशवा ने सर्कारी ख़ज़ाने से आठ लाख रुपया सालाना पिंशन लेकर बिठूर में गंगा सेवन करना स्वीकार किया और उधर हुल्कर की फ़ौज ने महीदपुर में शिकस्त खाकर सर्कारी फ़र्माबरदारी को जान दिल से मंज़ूर कर लिया, नागपुर का राजा अपने क़सूर की दहशत से मुल्क ही छोड़ भागा, सर्कार ने कुछ थोड़ा सा इलाक़ा लेकर बाक़ी उसके वारिसों को बहाल रखा, और पिंडारे ऐसे मारे काटे गए कि नामको भी बाक़ी न रहे, जो जीते बचे वे लूट मार छोड़कर खेती बारी करने लगे। निदान सन् १८१८ में यह मरहठों का युद्ध फ़तह फ़ीरोजी के साथ पूरा हुआ, और सब तरफ़ अमन चैन हो गया। क़ाबुल की लड़ाई के समय सिंध के अमीरों ने करांची और ठट्टा सर्कार को दे डालने और सिंधुनदी की राह से महसूल उठा लेने का क़रार कई बातोंके साथ किया था, पर फिर दग़ाकी, और अपने क़रार से पलट गए,

इस लिये सन् १८४३ में सर्कार ने उन को उस मुल्क से ख़ारिज करके वहां बिलकुल अपना क़ब्ज़ा कर लिया। सन् १८४५ के अन्त में सिक्खों ने सतलज पार उतर कर इन पर चढ़ाव किया, पर जैसा किया वैसा ही फल पाया। पहले तो सन् १८४६ में सर्कार ने उन से केवल जलंधर-दुआब और सतलज के इस पार का मुल्क लिया था, और अपराध क्षमा करके दलीपसिंह को गद्दी पर बहाल रक्खा था, पर फिर भी जब वे लोग लड़ने भिड़ने और बखेड़ा करने से न हटे, तब सन् १८४९ में सर्कार ने बिलकुल मुल्क ज़ब्त कर लिया, और दलीपसिंह को पंजाब से निकाल कर खाने के लिये दस हज़ार रुपया महीना पिंशन मुक़र्रर कर दिया। अब इस दम अटक से कटक तक सर्कार ही की अमल्दारी है, और हिमालय से समुद्र पर्यन्त इन्हीं का डंका बजता है, वरन हिन्दुस्तान की असली सर्हद से भी पूर्व और पश्चिम में अब कुछ कुछ इन की अमल्दारी बढ़ती चली है॥

अंगरेज़ों की बराबर तो कभी किसी की याद में कोई राजा या बादशाह नहीं हुआ, और न किसी ने इन जैसा मुल्क का बन्दोबस्त और प्रजा का पालन किया। जिस तरह अब इन की अमल्दारी में यह विलायत आबाद होती चली है, ऐसी कभी नहीं हुई थी, और न इतनी धरती इस देश में कभी जोती बोई गई। ऐसा यहां कौन राजा हुआ, जो प्रजा से अपने अर्थ कुछ भी कर न लेवे, ख़ज़ाने में जितना रुपया आवे सब उन्हीं के सुख के लिये ख़र्च करे। किस राजा ने ज़मींदारों के साथ ऐसा पक्का बन्दोबस्त किया था, कि जो जमा एक बार उनके साथ ठहर जावे, फिर कभी उसके सिवा और कुछ उन से न मांगे, और व्योपारियों से तिजारत के माल पर महसूल न लेवे। ऐसी सड़कें किस ने बनाई थीं, जिन पर सावन भादों

की अँधेरी रात में बग्गियां दौड़ा करें, इतने पुल किस ने बनाये थे, कि सैकड़ों कोस बराबर चले जाओ पर घोड़े का सुम पानी में न डूबे। डाक इस तरह की किस ने बैठाई थी, कि ऐसे थोड़े महसूल पर इतनी दूर की चिट्ठियां और पुलंदे इस क़दर जल्द आ पहुंचें। पुलिस का बन्दोबस्त किस ने ऐसा किया था कि कोस कोस में सड़कों पर चौकियां बैठ जायँ। ग़रीबों के लड़कों को पढ़ाने के लिये किसने गांव गांव में पाठशाला बिठाये थे, और किस ने शहर में कंगालों के लिये दवाख़ाने बनाये थे। कब ऐसे छापेख़ाने हुये जो टके टके पर पोथियां मिलें, और कब किसी राजा ने अपने बन्धुओं को इस ढब आदमियों की तरह रखा। किस राजा ने ऐसी कचहरी खोली जिसमें राजा पर भी नालिश सुनी जावे, और किसने अपनी रऐयत का माल ऐसा शिवनिर्माल्य समझा कि जो गवर्नर जेनरल भी छटांक भर दूध चाय के वास्ते लें तो उसी दम उसका दाम ज़मींदार को चुका देवें। देखो जहां भारी भारी जंगल थे और शेर हाथी रहते थे वहां अब बस्तियां बस गईं, जो धरती सदा से बनजर पड़ी थी वह भी अब जोती बोई गई, बिरली ऐसी जगह है जहां खेती लायक़ धरती बनजर पड़ी हो, वन तो क्या पहाड़ भी इनकी अमलदारी में खेती से ख़ाली न रहे। हम लोगों की महारानी क्वीन विक्टोरिया, ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उनका, इस मुल्क की आमदनी से एक कौड़ी भी नहीं लेतीं, और हुक्म देदिया है कि जितना रुपया कम्पनी का हिन्दुस्तान से लगा था उसका वाजिबी सूद देकर बाक़ी हिन्दुस्तान की सारी आमदनी इन्हीं हिन्दुस्तानियों की बिहबूदी और बिहतरी के कामों में लगाओ, जैसे सूर्य पृथ्वी से पानी सोखलेता है और फिर मेह बरसाकर उसी पृथ्वी का भला

करता है। ज़मींदारों से जो गांव की जमा मुक़र्रर हो गई अब साहिब कलक्टर का मक़दूर नहीं जो उनसे सेर भर घी भी बिना दाम मांग सकें, या एक आदमी भी उनका किसी काम के लिये बिना पैसा दिये बेगार में पकड़ सकें। चाहे जितना माल मुल्क के एक किनारे से दूसरे कनारे ले जाओ सरकारी अमलदारी में एक कौड़ी भी कोई महसूल की न मांगेगा। सड़कें पक्की कंकर और सुरख़ी पिटी हुई तो कलकत्ते से दिल्ली तक और दूसरे बड़े बड़े शहरों के बीच भी बन ही गई हैं, और बनती चली जाती हैं, पर अब लोहे की सड़कें तैयार होती हैं, कि जिन पर धूएं की गाड़ी चला करेगी, और दूसरे दिन मुसाफ़िरों को कलकत्ते से दिल्ली पहुँचावेगी। पुल जहां पक्के बनने कठिन थे वहां लोहे के बना दिये, जो बाक़ी रह गए हैं उसकी भी तैयारी हो रही है। डाक में चिट्ठी पीछे अब कुल टका महसूल लगने का हुक्म हो गया, चाहो लाहौर से मन्दराज भेजो और चाहे बंबई से कलकत्ते मँगाओ। इलेक्ट्रिक टेलिग्राफ़ जिस्से तार के ऊपर बिजली दौड़ाकर सूइयों के इशारे से ख़बरें पहुँचा करती हैं तैयार हो गई है, उससे एकही लहजे में हज़ारों कोस की ख़बर भुगत जाया करती है। शास्त्र में बढ़ावा देकर लिखा है कि रावण-असुर अग्नि और पवन से काम लेता था, पर ये सुर तुल्य अंगरेज़ बहादुर जल, अग्नि, पवन, धूआं बरन बिजली से भी प्रत्यक्ष चाकरी लेते हैं। गाड़ियां माल की अब अकेली कलकत्ते से लाहौर को चली जाती हैं, न सवार साथ है न पियादा, जो सड़क में किसी जगह पर आधी रातको भी हांक लगाओ तो चारों तरफ़ से चौकीदार जवाब देंगे और उसी दम आकर ख़बर लेंगे, सड़क क्या जैसे बाज़ार बस्ता है कहीं चौकी कहीं दूकान, कहीं पड़ाव कहीं सरा कहीं कूआ कहीं तालाब, दुतर्फ़ा दरख़्तइ सरसब्ज़ी

से लगे हैं, मानो पथिक जन बाग़ में चले जाते हैं। पाठशालों में लड़कों को हिन्दी फ़ारसी अरबी संस्कृत अंगरेज़ी बंगला गुजराती मरहठी सब कुछ सर्कार की तरफ़ से पढ़ाया जाताहै, और अस्पताल में बीमारों की ऐसी ख़बर ली जाती है कि बाप बेटे की भी न लेगा। छापेख़ानों में बहुधा सर्कार भी अपनी तरफ़ से किताब और पोथियां छपवा देती है कि जिससे सस्ती होने से ग़रीब लोग भी उनसे फ़ाइदा उठावें। जेलख़ाने में क़ैदियों के खाने पहन्ने सोने बैठने और मिहनत करने का ऐसा बंदोबस्त है कि जिस से वे क़ैद के सिवा और किसी बात का दुख न पावें, यह नहीं कि सज़ा तो उन्हें क़ैद की बोली जावे और जेलख़ाने में वे तड़फ़ तड़फ़ कर जान से गुज़र जावें, और मिहनत में भी उन से ऐसा काम लेते हैं कि जिसके सीखने से वे जन्म भर रोटी कमा खावें, और फिर कोई बुरा काम न करें। जिन राजाओं ने इन के साथ लड़ाई की थी उनको भी इन्होंने इस आराम से रखा है कि शायद वह अपनी गद्दी पर वैसा आराम न पाते। यदि एक छोटा सा ज़मींदार भी समझे कि सर्कार ने वाजिबी जमा से एक पैसा अधिक ले लिया, उसे इख़्तियार है कि अदालत में सर्कार पर नालिश करे, और यदि आईन के बमूजिब उसकादावा साबित होजावे तो सर्कार को उसी दम उसका पैसा ख़ज़ाने से निकाल देना पड़ताहै। फ़ौज तो क्या जब खुद गवर्नर जेनरल भी दौरे को जाते हैं मक़दूर नहीं कि कोई किसी ज़मींदार से एक बोझा लकड़ी या घास बिना दामदिये ज़बर्दस्ती लेसकें, न्याय और इंसाफ़ इसीका नामहै। देखो आगे यह मुल्क कितना बस्ताथा और कितना जङ्गल उजाड़ था। रामचन्द्र के अयोध्या से रामेश्वर तक जाने में बराबर जङ्गलही जङ्गल का वर्णन लिखा है, कि जिन में ऋषी मुनी अथवा भिल्ल इत्यादि

रहते थे। कृष्णचन्द्र के समय में भी वृन्दावन बन गिना जाता था, और गोप लोग उस में शकटो पर रहते थे, जैसे अब भी तातार के आदमी रहते हैं। अकबर के वक्त तक आगरे के सूबे में हाथी और चीते पकड़े जाते थे। क्या हुए अब वे सब बड़े बड़े जंगल जिनके नाम और बर्णन पुस्तकों में लिखे हैं? कौन ऐसा राजा था जो दास और दासी न रखता था, कहो यह कौन न्याय की बात है कि आदमी को जानवर की तरह पकड़ रखें? भिलसा के टोप पर जो दो हज़ार बरस से पहले का बना मालूम होता है, हिन्दू राजाओं की लड़ाई का एक चित्र लिखा है, उस में जहां सिपाही लोग स्त्रियों को दासी बनाने के लिये पकड़ रहे हैं, देखकर बदन कांपता है। खण्ड खण्ड के राजा होते थे, अयोध्या में रामचन्द्र और मिथिला में दस मञ्जिल के तफ़ावतपर जनक राज करते थे, देखो महाभारत में कितने राजाओं का नाम लिखा है, और फिर ये सब सदा आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे, जहां नित की लड़ाई रहेगी वहां प्रजाकी अवश्य तबाही होगी। दो दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी मुहर और अँगूठियें पीतल और तांबे की धरती से निकलती हैं, जो उस समय में धन बहुत था तो ऐसी चीज़ों पर लोग अपना नाम क्यों खुदवाते थे, बरन उस समय की जो अशरफ़ी भी मिलती हैं तो अकसर हलकी और निरसे सोने की (†) पुराणों को पढ़िये और

(†) बहुतेरे ऐसे भी आदमी हैं कि वह कदापि इस बात को न मानेंगे कि आगे इस देश में धन अब से अधिक न था, तो उनको यह भी समझ लेना चाहिये कि हमारी मुराद उस बात के साबित करने से नहीं है, हम इस जगह केवल इतनाही साबित करना चाहते हैं

बौधमत के ग्रन्थों को देखिये तो अच्छी, तरह यह बात खुल जायगी कि राजाओं के भण्डार में और जो सब महाजन साहूकार और कामदार राज से सम्बन्ध रखते थे उनके घरों में अवश्य सोने चांदी

कि यादि इस देश की दौलत घटी भी हो तो उसके घटने का कारन अंगरेज़ी अमल्दारी नहीं है। सच करके मानो जो कभी अंगरेज़ इस वक्त में इस मुल्क को न थाम लेते, हम लोगों का कहीं पता न लगता। दौलत जो गई तो महमूद ग़ज़नवी मुहम्मदगोरी और नादिरशाह इत्यादि उसे लेगये। दौलत जो छिपी तो लूट की दहशत से हमीं लोगों ने ज़मीन के अंदर छिपाई। दौलत जो नहीं आती तो फ़रंगिस्तानवालों की बुद्धि और विद्या का बल बढ़ने से और हम लोगों के सुस्त और निरुद्यमी पड़ने से और जहाज़वालों को अमरिका और दूसरे बड़े बड़े टापुओं की राह मालूम होजाने से अब उस का आना नहीं होता। आगे वे लोग हमारी बनाई हुई चीज़ें ले जाते थे, अब हमी लोग उनकी बनाई चीज़ें मोल लेते हैं। जो हीरा रूई शक्कर नील गर्म मसाले इत्यादि इस देश की पैदा दूसरे देशों को जाती थीं, वह अब अमरिका और टापुओं से वहां आती हैं। जो लोग अंगरेज़ी अमलदारी को दौलत घटने का कारण समझते हैं, उन्हें पुराने क़िस्से कहानियों पर ध्यान न करना चाहिये, इस मुल्क की उस हालत को देखें कि जब अंगरेज़ी के हाथ पड़ा, ईरान में तो अंगरेज़ी अमल्दारी नहीं है, फिर वे लोग क्यों अपने मुल्क को आगे की बनिस्बत अब बहुत दीन और धनहीन समझते हैं? ज़रा समय के फेर फार पर निगाह करो, कि आगे एशिया और फ़रङ्गिस्तान में क्या तफ़ावत था और अब क्या हो गया॥

और रत्नों का ढेर लगा रहता था, पर प्रजा ऐसी खुशहाल नहीं थी जैसी अब है, आगे तालाब के पानी की तरह धन एक जगह में इकट्ठा रहता था, देखने में तो बहुत पर निरा निकम्मा था, और अब जैसे उसी तालाब को काटकर खेतों में लेजावें और उन्हें सींचकर अन्न उपजावें, इसी तरह वह धन सब प्रजा के बीच फैलगया, देखने में तो नहीं आता पर फल बहुत देता है। शत्रुओं को जब पराजय करते थे बुरी तरह से मारते, योगबाशिष्ठ में एक कथा के बीच लिखा है कि एक राजाने कई सौ चोर एक राक्षसी को खिला दिये, यद्यपि यह बात केवल दृष्टांत के वास्ते हो पर यह साबित है कि आगे चोरी भी बहुत होती थी, और अब सदर निज़ामत का रजिस्टर देखो तो भारी जुर्म हरसाल घटते जाते हैं। सब राजा एक से नहीं होते थे, इस में संदेह नहीं जो कभी कभी कोई युधिष्ठिर विक्रमादित्य और भोज के से अच्छे भी होजाते थे, पर बहुधा नाच गाने में रहते और अन्याय भी बहुत करते। देखो रघुबंश में राजा अग्निवर्ण का क्या हाल लिखा (†) है, जब रामचन्द्र की औलाद में ऐसे भए तो औरों की क्या गिनती है। कुकर्म भी बहुत होताथा, महाराज चन्द्रगुप्त नायन के पेटसे थे, अब कोई नायन रखे तो ज़ात बाहर हो, जब राजा

(†) महाराज अग्निवर्ण नाच रंग और तमाशबीनी में ऐसा आसक्त होगए थे, कि प्रजा को उनका दर्शन मिलना भी दुर्लभ हुआ, और जब मंत्रियों ने महलों में जाकर बहुत सी विनती की कि महाराज आपके दर्शन की अभिलाषा में सारी प्रजा बाहर खड़ी है, तो महाराज ने उन के दर्शन के लिये झरोखे की राह अपना पैर बाहर निकाल दिया !

ने यह काम किया तो प्रजा को ज़िना के लिये कौन सज़ा देता होगा। मुसलमानों का वक्त इससे भी बत्तर था, बादशाह तो बहुधा शराब के नशे में चूर पड़े रहते थे, और फ़ौजें उनकी लड़ाई के नाम और बहाने से मुल्क को लूटती थीं, जिस राजा नव्वाब या ज़मींदार पर उसका धन धरती अथवा उसकी बेटी छीनने के लिये बादशाही फ़ौजें चढ़ती थीं, फिर यह हाल होता था कि दूध पीते बच्चे को भी उस इलाक़े में जान नहीं छोड़ते थे, और लड़कियों को भी पकड़ पकड़ कर ख़राब करते थे। खुलासतुल्अख़बार वाला लिखता है कि सुलतान रुकनुद्दीन फ़ीरोज़शाह इतनी शराब पीता था कि आख़िर नाचार उसके अमीरों ने उसे क़ैद करलिया। ज़ुब्दतुत्तवारीख़ वाला लिखता है कि सुलतान मुइज्ज़ुद्दीन कैक़ुबाद इतनी शराब पीता था, और ऐसा ऐश और तमाशबीनी में डूब गया था, कि उसकी देखा देखी रऐयत को भी सिवाय शराब ज़िना और जुए के कुछ दूसरा शग़ल बाक़ी नहीं रहा, यहां तक कि मसजिद और मन्दिरों में ये बातें होने लगी थीं। मआसिर रहीमी वाला लिखता है कि मुबारकशाह इस क़दर ऐयाश और ख़राब होगया था कि क़लम को भी उसका हाल लिखने में शर्म आती है, ज़नानी पोशाक पहन कर रंडियों के साथ अमीरों के घर नाच तमाशा करने को जाता, और अकसर नंगा मादर्ज़ात दर्बार किया करता। तारीख़ फ़िरिश्त: वाला मुहम्मदशाह दखनी की तारीफ़ यों लिखता है कि उसकी सल्तनत में पांच लाख हिन्दू मारे गए, और अहमदशाह दखनी का हाल यों बयान करता है, कि जब उसने बिजय नगर के राजा पर चढ़ाव किया तो पहले उस की रऐयत को क्या मर्द क्या औरत और क्या बच्चे सब को काटना शुरू किया, जिस मंज़िल में पूरे बीस हज़ार आदमी मारे जाते वह

तीन दिन मुक़ाम करता और बड़ी खुशियें मनाता। वही जुब्दतुत्त-वारीखवाला सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ का ज़िकर इस तरह पर लिखता है, कि जब उस ने रऐयत पर महसूल इस क़दर बढ़ाया कि उस का अदा करना उनकी ताक़त से बाहर था, तो दुआबे के सारे ज़मीदार अपने छान छप्पर और खलिहान फूंक कर गांव छोड़ भागे, बादशाह ने सुनतेही अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि सारे दुआबेको लूट लो, और जहां जो ज़मीदार मिले बेशक मारडालो, बरन आप भी इन बेचारे ज़मीदारों का शिकार करने के लिये सवार हुआ, और सिर जो ज़मीदारों के कटते थे क़िले के कंगूरों से लटकाए जाते थे। निदान मुसल्मान बादशाहों की बादशाहत में हिन्दुओंके मन्दिर तोड़े जाते थे, और ब्राह्मणों के मुंह में थूक थूक कर ज़बर्दस्ती मुसल्मान बनाए जाते, बादशाही लशकरवाले ज़मीदारों को लकड़ी घास और दही दूध का कब दाम देते थे, बरन रसद भी ज़बर्दस्ती लेते, और लड़ाई के वक्त तो खेत तक काटकर घोड़ों को खिला देते, अब तक फ़ारसी मसल चली आती है, नमक अज़ सर्कार आरद अज़ बाज़ार, बेगार में ज़मीदार नित पकड़े जातेथे, अकबर जब कश्मीर में गया तो देखा कि बादशाही केसर चुनने के लिये ज़मीदार बेगार पकड़े गए हैं, हुक्म दिया कि आयंदः से उन बेगारियों को सर्कार से खाने को मिला करे, और यह बात एक ऐसी बड़ी समझी कि वहां की जामेमस्जिद पर यह हुक्म खुदवा दिया, अब कहो यदि अकबर वहां केसर के खेत देखने न जाता तो उन बिचारे ज़मीदारोंको जो बादशाही काम करते थे किस तरह खानेको मिलता, और फिर भी एक केसर चुननेवालों ने खाने को पाया तो क्या हुआ, सारे मुल्क में जो बादशाही नौकर सब काम ज़मीदारों से ज़बर्दस्ती

मुफ़्त बेगार में लेते थे उन्हें खाने को कौन देताथा। स्त्री का सुन्दर होना उसके वास्ते मानो एक अपराध था, जब राजाओं की बेटियां बादशाह ज़बर्दस्ती मँगवा लेते थे, तो बनिये महाजनों की कब छोड़ते होंगे। तारीख़ फ़रिश्तावाला लिखता है कि हुमायूंशाह यहां तक अपनी रऐयत पर जुल्म करताथा कि जब किसी की बरात निकलती तो दुल्हन को मँगाकर पहले आप रख लेता तब दूल्हा के घर जाने देता। मुसाफ़िर सिवाय क़ाफ़िले के अथवा बिना सवार सिपाही लिये कभी राह न चलते, बरन क़ाफ़िले भी दिन दोपहर लूटे जाते थे, क़ाफ़िले क्या इस नित की लड़ाई झगड़ों में इलाक़े के इलाक़े तबाह होजाते थे, एक मैसूर ही का हाल सुनो कि बत्तीस बरस के अंदर अर्थात् सन् १७६० से १७९२ तक दसबार मरहठों के हाथ से लूटा गया। यह जो पक्की सराय बुर्ज और रौज़नों के साथ क़िले के तौर पर जा बजा बादशाही समय की बनी हुई हैं, कारण यही था कि मुसाफ़िरों को रात के समय डाकू और लुटेरों का बड़ा ही डर रहता था। अब भी बहुत से नादान जिन्हों ने पुरानी तवारीख़ें नहीं देखीं अगली बादशाहतों को याद करके ठंढी सांस लेते हैं, और हसरत के साथ उन दिनों को याद करते हैं, हमारी समझ में वे सब मिलकर एक अर्ज़ी इस मज़मून की लिखें और महारानी विक्टोरिया के चरण कमलों में भेजें, कि आप चौथाई मुल्क तो अगले बादशाहों की तरह जागीर में उन निकम्मे निरुद्यमी बेइल्म आदमियों को मुआफ़ कर दीजिए कि जो बहुधा इस देश में राजा बाबू और अमीर कहलाते हैं, जिससे वे बेफ़िकर होकर नाच रंग और भांड़ों का तमाशा देखें, और अपनी तोंद के बोझ के सिवा सेर आध सेर सोने चांदी और जवाहिरात का भी

बोझ अपने बदन पर बढ़ावें, और बाक़ी तीन हिस्से की आमदनी अपने तोशेखाने में दाखिल कीजिए। शाहजहां की तरह एक तख्त ताऊस बनवाइये, जिस्से जौहरियों को फ़ाइदा हो। नौकरों की तनख्वाहें बढ़ादीजिये, और जब वे मरें तो अगले बादशाहों की तरह उनका सारा घरबार ज़ब्त कर लीजिये, हैदराबाद के नव्वाब के यहां तो अब तक भी यही दस्तूर जारी है। राजाओंको हुक्म दीजिये अपनी सुन्दर सुन्दर बेटियां जिस तरह दिल्ली के बादशाहों को देते थे अब आप के शाहज़ादोंके वास्ते भेज देवें, और गवर्नरजेनरल को फ़र्माइये महाजन और भले मानसों की अच्छी अच्छी औरतें चुनकर नव्वाबों की तरह आप के वास्ते लौंडियां हाज़िर करें, और जो उन औरतों को उन्हें देखना मंज़ूर हो, हुक्म देवें कि गवर्नमेंट-हौस में बादशाही ज़माने की तरह लेडी साहिब के लिये मीना बाज़ार लगे, जब लोगों की बहू बेटियां आवें लाट साहिब भेस बदल कर सब को परख लेवें, खुद अकबर यह काम करता था। नादिर शाह की तरह एक दो शहर क़त्ल करवाइये, औरंगज़ेब की तरह आप भी सब मंदिर और मस्जिदों को तुड़वा कर उनके मसाले से अपने मतके गिरजा बनवाइये और हिन्दू और मुसलमानोंको जबर्दस्ती अपने मज़हब में लाइये, और जो बाक़ी रहें उन से मुसलमान बादशाहों की तरह जो अकबर से पहिले हुए थे जिज़ये का रुपया वसूल कीजिये। बादशाह राजा और नव्वाबों को जिन्हें उनके मुल्क से खारिज किया अब आप लाखों रुपये क्यों पिंशन देती हैं, जिस तरह उमरखिलजी फ़र्रुखसियर अहमदशाह इत्यादि दिल्ली के बादशाहों की आंखें निकाली गई थीं आप भी इनकी आंखें निकलवा लीजिए, अथवा पोस्त या नमक का पानी पिलवाकर जान ही ले

डालिये। लाखों रुपया सूद का आप इन महाजनों को क्यों देती हैं, मुहम्मदतुग़लक़ की तरह तांबे का रुपया चलाकर क्यों नहीं उनका बिलकुल क़र्ज़ा अदा कर देतीं, अथवा जिस तरह पेशवा के कहने बमूजिब सेंधिया ने अपने दीवान घाटक्या की लड़की के व्याह का खर्च वसूल करने को उसे पूना में भेजकर वहां के महाजनों को गर्म तोप में बांध बांध रुपया वसूल कियाथा आप भी हम लोगों से उगाह लीजिये। नाव डूबने का तमाशा देखने के लिये आप भी सिराजुद्दौला की तरह एक दो गुज़ार की किश्तियों का बीच धारा में तख्ता खुलवा दीजिये, डाक की क्या ज़रूरत है जिसे काम होगा अगले ज़माने की तरह अब क़ासिद के हाथ चिट्ठी रवानः करेगा। सड़क और पुल तुड़वा दीजिये, और चौकी पहरा बिलकुल उठवा लीजिये, बरन इश्तिहार देदीजिये कि पिंडारों की औलादसे जो जीते हों फिर वही अपने बाप दादों का पेशा इख्तियार करें, जिसमें लोग आगे की तरह अब भी एक शहर से दूसरे शहर में न जा सकें, और जांय तो क़ाफ़िला बांधकर और सवार सिपाही साथ लेकर, माल की बीमा बिकेगी, सिपाहियों का रुज़गार खुलेगा, बीमा लेने वाले महाजनों को फ़ाइदा होगा, और आपको भी मरहठों की तरह पिंडारोंसे लूट के माल की चौथ हाथ लगेगी। सिपाह की तनख्वाह बादशाहों की तरह बरस छ महीने चढ़ाकर बांटिये, जिस में वे रुपया क़र्ज़ लेवें तो महाजनों को पांच सात रुपये सैकड़े से भी अधिक सूद मिले, और बहुत तंग होंगे तो अगले ज़माने की तरह अब भी बाज़ार लूटकर अपना काम चलालेंगे। पाठशाला सब बर्खास्त कीजिये, ग़रीबों को आगे कब किसने पढ़ाया था, न ये पढ़ेंगे न अपना भला चाहेंगे, न ये तवारीखें देखेंगे न बुरी भली अमल्दारी का फ़र्क़ कर सकेंगे।

छापेखाने बन्द कीजिये जिसमें किताब महँगी हों, और लेखकों की रोज़ी खुले। अस्पताल मौकूफ़ कीजिये जिसमें वैद हकीमों को दो पैसे मिलें, और जब उनकी दवा किसी बीमारको फ़ाइदा न करे, तो मूलू आदिल शाह बीजापुरके बादशाहकी तरह क़त्ल करवाइए, और हाथी के पैरों से पिसवाइये। ज़मींदारों से जमा आगे किसने मुक़र्रर की थी, जो जिसके पास देखिये लेलीजिये, ये तो आप की रऐयत हैं, इनको बेगार में पकड़िये, इन से अपनी ख़िदमत लीजिये, सर्कारी मकानात बनवाइये, सिपाहियों का बोझ ढुलवाइये, बाग़ लगवाइये, निदान जिन सब सर्कारी कामों में आप अब रुपया खर्चती हैं, वह सब अगले बादशाहों की तरह ज़मींदारों से मुफ़्त में लीजिये, आप केवल अपने अमीरों को खुश रखिये, और चैन से ऐश कीजिये, और ये करोड़ों ज़मींदार तो आपकी रऐयत गुलाम हैं, आपही के वास्ते ईश्वरने इन्हें बनाया है, इन्हें जो चाहिए सो कीजिये, और जो आप को यह ख़याल हो कि कलकत्ते के बाबू लोग जो कुछ थोड़ा बहुत अंगरेज़ी पढ़गए हैं हमारी बदनामियां अख़बारों में छापेंगे, तो एक दो को उन में से अगले बादशाहों की तरह कान में सीसा पिला दीजिये, या खाल खिंचवाकर भुस भर दीजिये, और हिन्दुस्तानी कवि भाट और शाइरों को ज़मीन दुशाले और सोने के कड़े बख़्शिये, ये आपकी तारीफ़ में ऐसे ग्रंथ बनावेंगे कि फिर लोग सिकन्दर और नौशेरवां को भूलकर क़यामत तक आपही का नाम नेकी के साथ स्मरण करेंगे, और आपही का यश गावेंगे। निदान महारानी साहिब जो हिंदुस्तान की कमनीसीबी से यह अर्ज़ क़बूल करलें तो फिरभी अगला ज़माना आ सकता है, और जो इंसाफ के रूसे यह हुक्म चढ़ावें कि हम अमीरों के साथ कदापि वह बात न रखेंगे जो अगले बादशाह रखते थे,

नहीं तो वे भी उसी तरह हमारा गला काटेंगे, जैसे अगले अमीरों ने अगले बादशाहों का गला काटा था और हम अपनी हिन्दुस्तान की रऐयत के साथ वही सुलूक करेंगे, कि जैसा अपनी इंगलिस्तान की रऐयत के साथ सुलूक करते हैं, जिस में जैसा अंगरेज़ी रऐयत हम को हमारे सब कामों में मदद देती है, उसी तरह हिन्दुस्तानी रऐयत भी देवे, तो फिर अब कभी उस अगले ज़माने के मुंह देखने की दिल में उमेद न रखनी चाहिये, क्योंकि सर्कार अंगरेज़ बहादुर का बंदोबस्त ऐसा कच्चा नहीं है जो किसी तरह से हिल सके। हम ने इस बात की बड़ी खोज की कि जो लोग सर्कार कम्पनी की अमल्दारी को अच्छा नहीं कहते और पुराने वक़्तों को याद करते हैं उन से इस बात का सबब दर्याफ़्त करें, पर जो जो सबब उन लोगों ने बयान किये सब के सब नामाक़ूल मालूम हुए, क्योंकि पहले तो वे कहते हैं कि इस अमल्दारी में ज़मीनका ज़ोर घट गया, अन्न कम पैदा होता है, दूसरे आगे की बनिस्बत अब सर्कार महसूल ज़ियादः लेती है, तीसरे तिजारत में फ़ाइदा न रहा, चौथे हिन्दुस्तानियों को बड़े उहदे नहीं मिलते, ऐसे काम पर अंगरेज़ ही भरती होते हैं। हमने जो आईन अकबरी की किताब खोली और हिसाब किया तो मालूम हुआ कि अकबर के वक़्त में जो सब से अच्छा बादशाह था भली से भली एक बीघे धरती में जो साठ मुरब्बा इलाही गज़का गिना जाता था (*) आठ मन साढ़े सत्तरह सेर गेहूं की पैदावारी पड़ती थी, इस से अधिक नहीं होती थी। हम जानते हैं कि शुरू अंगरेज़ी अमल्दारी में जब लोगों ने लूट मार से बचाव पाकर बहुतेरी ज़मीन

(*) इकतीस अंगुल का एक इलाही गज़ होता है॥

जो हज़ारों बरस से बनजर पड़ी थीं जोत ली है उस में अब पहली सी पैदा न होने से ज़मींदार हाकिम को दोष देते हैं, यह नहीं समझते कि जो ज़मीन बराबर हर साल बोई जायगी उसका ज़ोर अवश्य घट जायगा, आगे अव्वल तो नित के लड़ाई झगड़ों से ऐसे बहुत कम खेत थे जो बराबर पांच सात बरस बोए जावें, दूसरे बादशाह कच्चा बंदोबस्त रहने के कारन जिस साल खेत बोआ जाता था उसी साल पूरा महसूल लेते थे नहीं तो तख़फ़ीफ़ करदेतेथे, अब लड़ाई झगड़े की बिलकुल दहशत उठ गई, सर्कार ने ज़मींदारों का फ़ाइदा समझकर क़ाज़ीरों की लूट मार से बचाने के लिये बड़ी बड़ी मुद्दतों का पक्का बंदोबस्त कर दिया, अब ज़मींदार आंख बंद करके हर साल बराबर एक ही तरह से अपने खेतों को बोते चले जाते हैं, यदि इङ्गलिस्तानियों की तरह फ़सल की बदली करें, और बारी बारी से खेत को बनजर छोड़ें, जैसा इस विषय की किताबों में लिखा है, तो कदापि धरती का ज़ोर न घटे। नौ दस बरसका अर्सा गुज़रता है कि आगरे की गवर्नरी में २२९९९०७६ एकर (*) धरती बोई जाती थी और अब २४४५०२२८ एकर बोई जाती है भला जहां दस बरस के अर्से में १४५११५२ एकर धरती नई जोती बोई जावे, वहां यह बात क्योंकर कही जा सकती है कि आगे की बनिस्बत अब किसानों को फ़ाइदा कम है। महसूल यद्यपि अकबर के वक्त में ऐसी ज़मीन पर फ़ी बीघे केवल दो मन कुछ ऊपर सवा छ सेर गेहूं अथवा उसका दाम लिया जाता था, पर बेगार बेतरह थी, उत्तराखंड इत्यादि देशों के रजवाड़ों में जहां अब तक ज़मींदारोंसे बेगार ली जाती है,

---

(*) कुछ कम दो बीघे का एक एकर होता है॥

यदि बेगार मौकूफ़ हो खुशी से दूना महसूल देने को राजी हैं, पस सोचना चाहिये कि बेगार से कितना नुक़सान था, सिवाय इसके कश्मीर के इलाके में आधी आधी बटाई होती थी, और अकबर कारीगरों की बनाई चीजों पर पांच रुपया सैकड़ा लेता था, और जो महसूल कि साबिक़ से जारी थे और अकबर ने मौकूफ़ किये उनकी तफ़सील नीचे लिखी जाती है, भला इन महसूलों के बोझ से क्योंकर न रऐयत पिसती होवेगी, जहांगीर और शाहजहां तो अकबर की राह पर चले थे, पर औरंगज़ेब के वक्त से फिर बहुतेरे महसूल जारी होगये ॥

तफ़सील महसूलों की जो अकबर ने मौकूफ़ किये ॥

१ जिज़या	११ फ़ोतहदारी
२ परवानराहदारी	१२ वजह किराया
३ मीरबहरी	१३ ख़रीतिया
४ कर हिंदू यात्रियों से	१४ सराफ़ी
५ गांव शुमारी	१५ हासिल बाजार
६ सरदरख़्ती	१६ आबकारी
७ पेशकश	१७ नमक
८ पेशेवालों से	१८ चूना
९ दारोग़ानी	१९ मछए
१० तहसीलदारी	२० मकान की ख़रीद फ़रोख़्त
	२१ मवेशीकी ख़रीद फ़रोख़्त

तिजारत में फ़ाइदा इसीलिये नहीं होता कि हमारे मुल्क के आदमी जहाज़ पर नहीं चढ़ते, यदि ये जहाज़ों पर सवार होकर तिजारत

के लिये दूसरे मुल्कों में जावें निस्संदेह ये भी वही फ़ाइदा उठावें कि जो इनकी बदल फ़रंगी उठाते हैं (*)। रह गया चौथा उज़र सो उसका यह हाल है कि जो रुपया अंगरेज़ों को तनख़्वाह और पिंशन में दिया जाता है, वह हम भी मानते हैं कि इस मुल्क को अवश्य घाटा पड़ता है, पर यदि हम से सर्कार सलाह पूछे तो हम यही कहेंगे कि जिन कामों पर अब हिन्दुस्तानी नौकर हैं उन पर भी अंगरेज़ मुक़र्रर कीजिये। सर्कारी आईन को इन्हीं हिन्दुस्तानियों ने बदनाम किया, मजिस्ट्रेट कलेक्टर से कोई नहीं दुख पाता, जो रोता है सो इन्हीं अमले पुलिस और सरिश्तेदारों के नाम को रोता है। कौन ऐसा बेवक़ूफ़ है जो इन थानेदारों को मजिस्ट्रेटी और सरिश्ते-दारों को कलेक्टरी मिलने की दुआ मांगे। हमारे मुल्क के आदमी अव्वल तो रिशवत लेना ऐब नहीं समझते, परम्परा से यह बात चली आई है, दूसरे हिंदू को काम मिला तो मुसलमान को सताया, मुसलमानों को इख़्तियार हुआ तो हिंदुओं से ख़ार निकाला, पस पहिले हिंदुस्तानियों को चाहिये कि अपने तईं उन कामों के लाइक़ बनावें, जिन के मिलने की उमेद रखते हैं। रुपये के रहने से राज्य का सुशासित होना अधिक बांछित है, जो प्रजा को चैन मिलेगा तो रुपया बहुत हो रहेगा, और जो मुल्क ही में बखेड़ा रहा तो फिर नादिरशाह सरीखे बरसों की इकट्ठा की हुई जमा पूंजी एकही दिन में झाड़ बुहार कर ले जायँगे। जो लोग हमारे सुख के प्रयोजन

(*) ऋग वेद की पहली संहिता के देखने से साफ़ साबित है कि आगे हिंदू लोग जहाज़ पर सवार होते थे और समुद्र में जाना ऐब नहीं समझते थे॥

इतना परिश्रम करते हैं, वह जो अपनी वाजिबी तनख्वाह ले जावें तो इसमें क्यों बुरा मानना चाहिये। बाज़े आदमी यह भी कहते हैं कि अंगरेज़ी अमल्दारी में दीवानी और फ़ौजदारी का बंदोबस्त अच्छा नहीं, उन्होंने शायद पुरानी तवारीखें नहीं देखीं, फ़ौजदारी के बाब में तो राफ़फिच साहिब जो सन् १५८३ में शाह इंगलिस्तान का खत अकबर के नाम लाये थे लिखते हैं कि बनारस और पटने के दरमियान इस तरह रास्ता लुटता था कि जैसे अरब लोग अपने मुल्क के जंगलों में डाका डालते हैं, बरन खुद अकबर का वज़ीर एक जगह में हिंदू फ़क़ीरों की बेवक़ूफ़ी दिखलाने के लिये लिखता है कि एक साल प्रयाग के मेले में साधु सन्तों के दो झुण्ड गंगा में पहिले नहाने के लिये तकरार कर रहे थे, बादशाह भी वहां मौजूद था, समझाया उन लोगोंने उसका समझाना न माना, झुंझला कर हुक्म दे दिया कि दोनों जी खोलके लड़ो, आप तमाशा देखता रहा, यहां तक कि बहुतेरे आदमी उन में से कट गये, वाह रे अकबर तेरा इंसाफ़। धन्य अंगरेज़ कि हरिद्वार के कुंभ के मेले में मक़दूर नहीं कि कोई मियान से तलवार निकाले, और दीवानी के वास्ते एक मोतबर तवारीखवाला लिखता है, कि एक रोज़ किसी लड़के ने शाहजहां के पास नालिश की, कि मेरी मा के पास तीन लाख रुपया है, और मुझ को कुछ नहीं देती, बादशाह ने उसकी बुढ़िया मा को बुलाकर हाल दरयाफ़्त किया, उसने साफ़ कह दिया कि तीन लाख रुपया बेशक है, पर जब लड़का होशियार होगा दूंगी अभी खराब करेगा, बादशाह ने हुक्म दिया कि लाख रुपया लड़के को दे, और लाख रुपया अपने खानेको रख इस क़दर तुम दोनों के लिये काफ़ी है और बाक़ी लाख रुपया बादशाही खज़ाने में दाखिल

करदे। जब मुक़द्दमा फ़ैसल हो चुका और हुक्म काग़ज़ पर चढ़ गया बुढ़िया बहुत घबराई और चालाकी करके बादशाह से अरज़ की कि करामात लड़के को तो लाख रुपये वाजबी दिलवाया, मेरा पति उसका बाप था, पर आप का मेरा पति कौन होता था जो बराबर का तरका लेते हैं इतनी बात मिहरबानी करके बतला दीजिये कि जिस में आगे को इस रिश्तेदारी की खबर रहे। बादशाह अपने मन में लज्जित हुआ और हंसके उसका रुपया उलटा दिलवा दिया। तवारीखवाले ने तो यह बात शाहजहां की तारीफ़ में लिखी है कि एक एक बुढ़िया उस तक पहुंचकर अपने दिलकी कह सकती थी पर इस बहानेसे बादशाहकी नीयत और अदालतका आईन बखूबीमकट होगया अब तकभी गुजरातकी तरफ़ हिन्दुस्तानी अमलदारियों में यह दस्तूर जारी रहाहै कि जब किसी को किसी से रुपया वसूल करने होता तो भाटोंको जिनका वहां यही काम है कुछ देकर उसके घर धरना बिठलाता, और उस बेचारे के पास उस वक्त देने को न होता तो बहुत फ़ज़ीहत करता, यहां तक कि वे ब्राह्मण अपना लहू उसके दरवाज़े पर छिड़कते, बरन कई बार ऐसा हुआ है कि अपने घर से किसी बूढ़े या बुढ़िया को लाकर उसके दरवाज़े चिता पर बिठला कर जला दिया है। जो वहां अदालत अच्छी होती तो यह नौबत क्यों पहुंचती। हम यह बात कुछ अंगरेजों की खुशामद या उनकी झूठी तारीफ़ की राह से नहीं लिखते कि जैसा अकसर ग्रंथकारों ने अपनी पुस्तकों के बीच श्लोक कवित्त शैर और क़सीदों में उन्हें सूर्य से अधिक तेजस्वी और आकाश से अधिक ऊंचा इत्यादि बढ़ावा दिया है, हमने तो केवल अगले राजा और बादशाहों का जो कुछ हाल पुरानी किताबों में देखा था लोगों के ज्ञानवृद्धि के कारन

इस जगह में दर्ज कर दिया, यदि किसी को उसमें संदेह हो पुरानी तवारीखों से मिलान कर ले ॥

यह भी जान लेना चाहिये कि सन् १८५८ में श्रीमती महारानी इङ्गलेंडईश्वरी क्वीन विक्टोरिया ने इस मुल्क का इंतिज़ाम कम्पनी से लेकर अपने एक वज़ीर के सपुर्द कर दिया, और उसकी मदद के वास्ते बारह आदमियों की एक कौंसल भी मुक़र्रर कर दी, यह वज़ीर सेक्रिटरी–अव–स्टेटफ़ार–इंडिया कहलाताहै, और उस कौंसल का नाम कौंसल अव–इंडिया कहा जाताहै। कम्पनी को अब सिवाय उस रुपये का जो इस मुल्कमें लगाया था सूद लेनेके और कुछ भी इस मुल्क से इलाका न रहा, बंदोबस्त और इंतिज़ाम बिलकुल वज़ीर के इख़्तियार में आगया वही सब साहिब लोगों को इस मुल्क के उहदों पर मुक़र्रर करके वहां से भेजता है, और यहां गवर्नर जेनरल को कौंसल के साथ एक राय होकर मुल्क के बन्दोबस्त और इंतिज़ाम का बिलकुल इख़्तियार दे रखाहै। गवर्नर जेनरल से नीचे मंदराज और बंबई के गवर्नर अपनी अपनी कौंसलों सहित और आगरे और पंजाब और बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर मुक़र्रर हैं, और फिर सिवाय पंजाबके उनचारों गवर्नरों के नीचे चार सदर दीवानी और सदर निज़ामत अदालत और चारही बोर्ड–अव–रवन्यू और फिर उनके तावे ज़िले ज़िलेमें कमिश्नर जज मजिस्ट्रेट कलेक्टर इत्यादि अपने अपने कामपर नियुक्त हैं। पंजाबमें सदरके बदल जूडीशल कमिश्नर और बोर्डकी एवज़ फ़िनांशल कमिश्नर मुक़र्रर हैं, और कमिश्नर के नीचे ज़िले के हाकिम डिपुटी कमिश्नर कहलाते हैं। सिवाय इस के कलकत्ते बंबई और मंदराज में उन तीनों शहर के दीवानी फ़ौजदारी के मुक़द्दमे और जो नालिशें कि असली अंगरेज़ों पर दाइर हों सुन्ने के वास्ते

एक एक सुप्रीमकोर्ट की कचहरी भी बादशाहकी तरफ़ से मुक़र्रर है, और उस में तीन तीन जज बैठते हैं। फ़ौज के सेनापति अर्थात् कमांडरिंचीफ़ साहिब इंगलिस्तान से मुक़र्रर होकर आते हैं। कलकत्ता मंदराज और बंबई तीनों हातों में तीन कमांडरिंचीफ़ रहते हैं, पर कलकत्ते वाले का हुक्म दोनों पर ग़ालिब है।

सन् १८५३ में सर्कारी फ़ौज सब मिलाकर इस मुल्क में प्राय अढ़ाई लाख हिन्दुस्तानी और पचास हज़ार गोरे थे, और बत्तीस हज़ार सिपाही कांटिंजंट की फ़ौज में भरती थे, कांटिंजंट वह है जिसका खर्च हिन्दुस्तानी रईसों के यहां से मिलता है और वे उनको हिफ़ाज़त के लिये उन्हों के इलाक़ों में रहते हैं, लेकिन अब गोरे बहुत बढ़ गए, अस्सी हज़ार से कम नहीं हैं, और उनकी एवज़ में हिंदुस्तानी सिपाह घट गई, बरन ऐसी तजवीज़ हो रही है कि यह भी अस्सी हज़ार रहे॥

आमदनी इस मुल्क की प्राय तीस करोड़ रुपया (१) सालाना सर्कारी खज़ाने में आता है, और अनुमान नब्बे करोड़ रुपया सर्कार को लोगों का देना है कि जिस के वास्ते सर्कार ने प्रामिसरी नोट अर्थात् तमस्सुक लिख दिये हैं, और साढ़े पांच रुपये से साढ़े तीन रुपये सैकड़े तक सालाने के हिसाब से छठे महीने सूद दिया करती है। कम्पनी इस मुल्क की आमदनी से केवल उतने रुपये का वाजिबी सूद ले लेती है, कि जो उसने पहले ही पहल इस मुल्क में अपनी गिरह से लगाया था, उस्से सिवाय उसे एक कौड़ी भी लेने का हुक्म नहीं, और न बादशाह इस में से एक कौड़ी लेता है,

(१) सन् १८६० में सैंतीस करोड़ होगया।

यह सारा रुपया इसी मुल्क के कामों में ख़र्च होता है (२)

	आमदनी	ख़र्च
बंगाला	११४४७१८४५	१२९३८११३७
आगरा व पंजाब	७६६५१०००	३१८२५३००
मंद्राज	५२६२२८२०	४९७६८६६०
बंबई	४८५३६८६०	५२२००१६४
इंगलिस्तान		२४१५७८५४
	२९२२८२५२५	२८७३३३११५

और तीसरी जून सन् १८५२ को जो इंग्लिस्तान से गवर्नर जेनरल बहादुर के नाम चिट्ठी आई थी उससे सन् १८५०–५१ की आमदनी और ख़र्च का व्यौरा लिखते हैं।

आमदनी		ख़र्च	
धरती बाबत	१४२८२९६८०	तहसील बाबत	२००१३०६६
महसूल	१९७४५५६०	अदालत	१९५८२६०४
नमक	१७२४४९८०	महसूल	२०२७७३९
अफ़यून १८५१–२	२६८७८१८४	किश्ती व जहाज़	४७१३४७३
साइर व आबकारी	१०४९९८४०	फ़ौज	१००९५६०४०

---

(२) सोलहवीं दिसम्बर सन् १८५२ को जो गवर्नर जेनरल बहादुर ने बाबत सन् १८५२–५३ अर्थात् शुरू मई सन् १८५२ से आखिर अपरैल सन् १८५३ तक एक साल की आमदनी और ख़र्च का तख़मीना बांधकर मंजूरी के वास्ते इंगलिस्तान को रिपोर्ट भेजा है उसका खुलासा नीचे लिखा जाता है।

आमदनी		खर्च	
स्टाम्प डाक कर टकसाल व तमाकू	१५७१०९८३	सूद तमस्सुकों का	२२२३८०९१८
लाहौर सिंध ब्रह्मा व टापू	१०१०००००	सूद इंगलिस्तानमें	४७४५६८५
		पिंशन इमारत और विद्यालय	४४८५२०८८
		मुतफ़र्रिक़ात ग़ैर मामूली	२५५४८८६२
	२५१४७९२२७		२५१९७९२२७

तीसवीं अपरैल सन् १८५३ को सर्कारी ख़ज़ानों में नक़द रोकड़ मौजूद है १५२३९६०४४

बंगालहाता ।

निदान मुजमल बयान तो हिंदुस्तान का हो चुका, अब उसके जुदा जुदा जिलों का कुछ बखान करते हैं । जानना चाहिये कि इस मुल्क के तीन खंड गिने जाते हैं, जितना हिमालय के पहाड़ों में बसा है वह तो उत्तराखंड कहलाता है, और जो नर्मदा और महानदी से दक्षिण है वह दक्षिणात्य अर्थात् दक्षिण देश अथवा दखन कहा जाता है, इन दोनों के बीच आर्यावर्त है उसी को पुण्य भूमि भी कहते हैं । हिन्दुस्तान का दक्षिण भाग अंतरीप है, क्योंकि वह पूर्व पश्चिम और दक्षिण तीनों तरफ़ समुद्र से घिरा है । मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत में इस मुल्क को बाइस सूबों में विभाग किया था, परन्तु उन में से काबुल क़ंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और दक्षिण देश के कितने ही जिले उनके

दखल में न रहने के कारन उन सूबों में गिने ही नहीं गए थे, सिवाय इस के उन सूबों की हदें अब ऐसी बदल गई हैं कि कुछ तो एक के पास हैं और कुछ दूसरे के हाथ चले गए, इस लिये हम उन सूबों का खयाल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमल्दारी में भाग देकर उन के एक एक ज़िलों का उस क्रम से बयान करते हैं कि जो अब बने जाते हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता, बंबई हाता, और मंदराज हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं, फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ्टिनेंट गवर्नर के ताबे, जमना के पार उत्तर में लाहौर के लेफ्टिनेंट गवर्नर का इख्तियार है, और गंगा पार अवध के इलाके में वहां के चीफ़ कमिश्नर का॥

पश्चिमोत्तर देशकी लेफ्टिनेंट गवर्नरी॥

पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत के जो ज़िले हैं उन में---१---इलाहाबाद सदर मुक़ाम (१) इलाहाबाद जिस का असली नाम प्रयाग है २५ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में ७२००० आदमियों की बस्ती गंगा और जमुना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ

(१) ज़िले का सदर मुक़ाम उसको कहते हैं जहां हाकिम रहे और कचहरी हो॥

हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। वह बादशाही जमाने में इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। गंगा और जमना दोनों बड़ी नदियों के संगम होने से और तीसरी सरस्वती का संगम भी जो आंखों से दिखलाई नहीं देती पर शास्त्र में इसी जगह लिखे रहने से उसको त्रिवेणी भी कहते हैं, और सब तीर्थों का राजा मानते हैं। मकर की संक्रांति को बड़ा भारी मेला होता है, लाखों यात्री आते हैं। क़िला बहुत मज़बूत है, एक तरफ़ उसके जमना और दूसरी तरफ़ गंगा मानो उसकी खाई होगई है। सर्कार की तरफ़ से उसकी बड़ी तैयारी रहती है, और मेगज़ीन भी उसमें रक्खा गया है इस क़िले के अंदर एक तलघरे में बड़के दरख्त की जड़ है, हिंदू उसे अक्षय-बट कहते, और बहुत मानते हैं। तवारीखों से ऐसा मालूम होता है कि आगे गंगा जमना का संगम ठीक उस बड़के नीचे था, और जो लोग त्रिवेणी में डूबकर मरना चाहते थे वे उसी बड़ पर चढ़कर कूदते थे, शायद किसी बादशाह ने इस बात के बंद करने के लिये उसे कटवाडाला, और समय पाकर दरिया भी वहां से हट गया। उसी क़िले में ४२ फ़ुट ऊंची एक पत्थर की लाट अर्थात् शिला स्तम्भ जिसे वहां के ब्राह्मण बहुधा भीमसेन का सोंटा कहते हैं दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी है, उस पर मगध देश के महाधार्मिक राजा महाराज प्रियदर्शी अर्थात् अशोक का एक अनुशासन अर्थात् हुक्मनामा पाली भाषा में जो मगधी से मिलती है पुराने पाली अक्षरों के दरमियान खुदा हुआ है। इस से अधिक पुरानी लिपि इस भारतवर्ष में और कोई नहीं। जेम्स प्रिंसिप साहिब इन अक्षरों को पढ़कर उनकी एक वर्णमाला बना गए हैं, अब उस वर्णमाला की

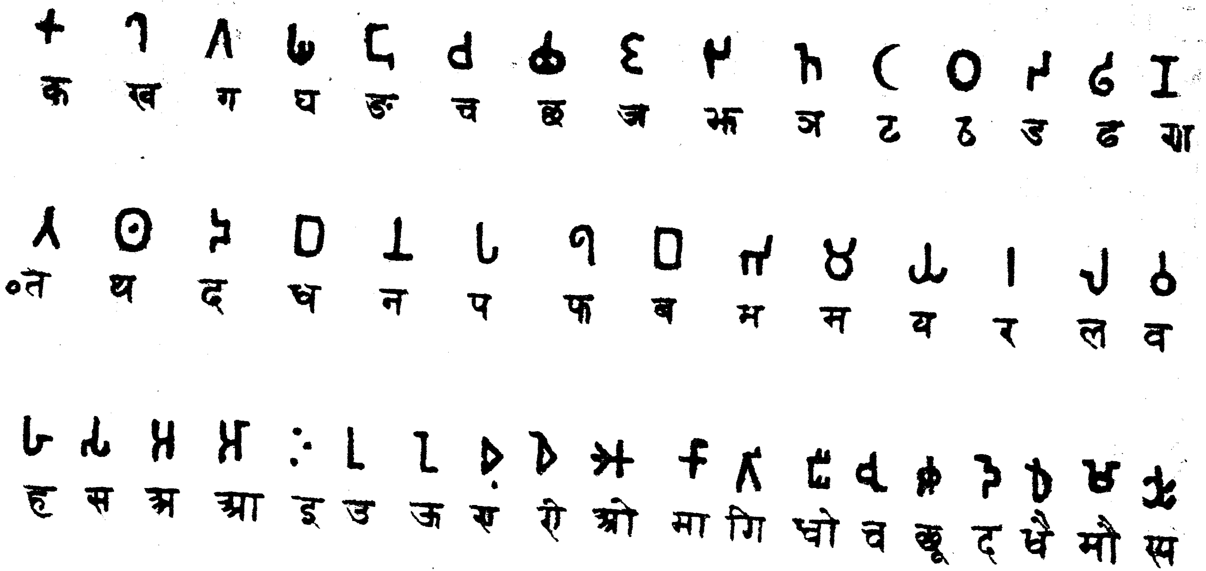
सहाय से जो कोई चाहे इस प्रकार के अक्षर पढ़ सकता है । निदान उस लाटपर इन पाली हर्फ़ों में उस समय के राजा अशोकका हुक्म यह खुदा है, कि मैंने अहिंसा को परम धर्म माना और इसी धर्मको अंगीकार किया, मेरी प्रजा भी सब ऐसाही करे, और फिर किसी पशुको न बधे, दया दान सत्य शौच का पालन करे, और चण्डत्व नैष्ठुर्य क्रोध मान ईर्ष्यादि से दूर रहे । पुराणों में इस अशोक को महाराज चंद्रगुप्त का पोता कहा है, और जैन शास्त्र में बौध पुस्तकोंकी तरह उसकी बड़ी प्रशंसा लिखी (१) है । वह सन् ईसवी से कुछ न्यूनाधिक अढ़ाई सौ बरस पहिले राजसिंहासन पर बैठाथा । इस तरहके शिलास्तम्भ दिल्ली इत्यादि और भी कई स्थानों में हैं, और उन पर भी यही धर्मलिपि इसी राजा की आज्ञा से इन्हीं अक्षर और भाषा में खुदी है । फ़ारसी इत्यादि अक्षर जो उसपर हैं वह पीछे से खोदे गये हैं । सराय इलाहाबाद की पक्की और बहुत बड़ी है, और उसी से लगा हुआ सुलतान खुसरो का मक़बरा बना है—२—मिरज़ापुर इलाहाबाद से अग्निकोन की तरफ़ । यह ज़िला बहुत सा विंध्य के पहाड़ों से आच्छादित है। सदरमुक़ाम मिरज़ापुर ७५००० आदमियों की बस्ती जो इस समय बड़े बेवपार और तिजारत की जगह है इलाहाबाद से ४५ मील पूर्ब अग्निकोन को झुकता गंगाके दहने किनारे (२)

---

(१) बौध और जैनियों की पुस्तक मिलाने से और पुराने मंदिर और मूर्त्ति के देखने से इस बात में कुछ भी संदेह बाक़ी नहीं रहता कि किसी समय में यह दोनों मत एक थे थोड़े दिनों से भेद पड़ा है ।

(२) जिधर नदी बहती हो उधर उसका मुंह मानकर दहने और

पाली अक्षरों की वर्णमाला

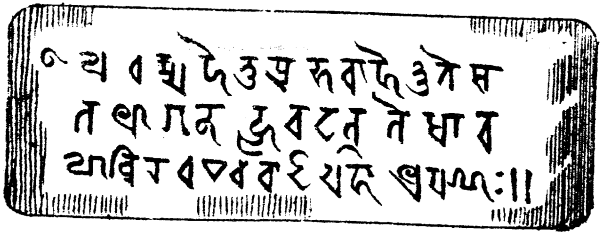


पर बसा है मिरज़ापुर से तीन कोस पर एक झरना बीस गज़ ऊंचे पहाड़ से गिरता है बरसात में वह जगह सैर की है, और कोस दो एक के तफ़ावत पर जहां विंध्याचल गंगा के समीप आ गया है पहाड़ के नीचे गंगा के निकट बिंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। नवरात्रि में बड़ा मेला होता है। क़िला चनार का, जिसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मिरज़ापुर से १२ कोस पूर्व गंगा के तट कई सौ फुट ऊंचे एक पहाड़ के टुकड़े पर बहुत मज़बूत बना है। हिंदू इस क़िले को विक्रम के भाई राजा भर्तृहरि का बनाया कहते हैं, वरन अकसर नादान निश्चय रखते हैं कि भर्तृहरि अब तक उस में बैठा है। एक तहख़ाना अंधेरा जिसका मुंह इतना छोटा है कि आदमी मुशकिल से अंदर जासके हिंदुस्तानी अमलदारी में उस क़िले का जेलख़ाना था कितने आदमी उस में घुटकर मरे होंगे यह परमेश्वर जाने पर अब भी उसके देखने से रोंघटे खड़े होते हैं, न मालूम कैसा दिल था उन लोगों का जो इस ढबसे तड़फा तड़फा कर आदमियों की जान लेतेथे! चनार से तीन मील पर शेखक़ासिम सुलैमानी का मक़बरा भी विशेष करके उसका दरवाज़ा और गिर्द की जालियां देखने लाइक़ हैं—३—बनारस मिरज़ापुर के ईशान कोन, यह ज़िला बहुतही आबाद है। शहर बनारस जिसे मुसलमान मुहम्मदाबाद और हिंदू काशी और बाराणसी भी

बांयें किनारों का भेद बिचार लेना चाहिये जैसे नर्मदा पूर्वसे पश्चिम को बहती है तो दक्षिण के देश उसके बांयें किनारे पर और उत्तर के देश दहने किनारे पर पड़ेंगे और महानदी पश्चिम से पूर्वको बहती है तो दक्षिण के देश उस के दहने किनारे पर और उत्तर के देश बांयें किनारे पर पड़ेंगे।

कहते हैं, क्योंकि बरणा और अस्सी दो नदियों के बीच इलाहाबाद से ७० मील पूर्व ऐन गंगा के बाएं किनारे बसी है, बहुत आबाद दौलत की इफ़रात और हिंदुओंका बड़ा तीर्थ स्थान है। १८१००० उस में आदमी बसते हैं गलियां बहुत तंग और मकान बहुत ऊंचे, ऐसा कि छ सात मरातिब तक, गर्मियों में चलने का बड़ा आराम छतरी दर्कार नहीं, छांव छांव में सारे शहर का चक्कर दे आइये। घाट गंगाके तीर बहुत संगीन और सुहावने बने हैं। बिंदुमाधव का मंदिर तोड़कर जो औरंगजेब ने मस्जिद बनाई है उसके दोनों मीनार मस्जिद की छत से १५० फुट और गंगातीर से अनुमान २१० फुट ऊंचे हैं। ऊपर जाने से सारा शहर और दूर दूर तक का गिर्द नवाह गंगाके दोनों तरफ़ दिखलाई देता है। उनपर चढ़ने के लिये १३१ सीढ़ी लगी हैं। बिश्वेश्वरका मंदिर भी यहां उसी बादशाहने तोड़ा था, कहते हैं कि तब असली बिश्वेश्वर तो ज्ञानवापी के कूए में पड़े और जिनकी अब पूजा होती है वह उन की जगह पर नए बिठाए गए। मान मंदिर में राजा जयसिंह जयपुरवाले के बनवाये हुए चन्द्र सूर्य तारादिकों के देखने और ग्रहों के बेधने के लिये बहुत अच्छे यंत्र बने थे पर अब सब बे मरम्मत हैं। इन यंत्रों का तात्पर्य बिना ज्योतिष शास्त्र पढ़े समझ में नहीं आवेगा, इस कारन हमने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा, इतना ही समझ लेना चाहिये कि ज्योतिष सम्बन्धी बेधशाला में ऐसे ऐसे यंत्र बने रहते हैं, कि जिन से विद्वान लोग सूर्य चन्द्र और तारादिकों के चलने फिरने का हाल मालूम करते हैं। संस्कृत विद्या का यह काशी मानों घर है, यहां के पण्डित सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। तीर्थ के कारन फ़क़ीर बहुत रहते हैं। सांड़ गली गली घूमते हैं। रूप यहां अच्छा होता है, तिस में भी

बौधमत का श्लोक जो सारनाथ की धमेख में मिला था



७ ये धर्म्महेतु प्रभवाहेतुतेषां तथा गता ह्यवदत् तेषांचयो निरोध एवंवादी महाश्रमण: ॥

बिहार के जिले में बहुतेरी प्राचीन बौध मूरतों पर यह श्लोक खुदा हुआ है, बरन राज गृह के प्रसिद्ध जैन मंदिर में भी जो बस्ती में है एक मूर्त्ति पर यही श्लोक खुदा है, और इसीकारण हम उसको प्राचीन बौधमती अनुमान करते हैं ॥

नागरियां तो इस नगर की अत्यंत ही सुन्दर हैं। सर्कार ने लड़कों के पढ़ने के लिये एक पाठशाला अंगरेज़ी डौल का यहां बहुत अच्छा बनवाया है, उस मकान के बनने में प्राय सवा लाख रुपया खर्च हुआ। नए आदमी के वास्ते काशी की सैर के दो समय हैं, एक तो नाव पर सवार होकर प्रातःकाल घाट ही घाट जाने का, कि जब सब लोग स्नान पूजा करते हैं, और दूसरा संध्या को मीनार पर से देखने का कि सारा शहर हथेली सा और सब मर्द औरत अपने घरों में काम करते हुए दिखाई देते हैं। बुढ़वा मंगल का मेला इस शहर में मशहूर है, और हक़ीक़त में देखने लाइक़ होता है, होली के पीछे जो मंगल आता है लोग शाम से किश्तियों पर जा बैठते हैं, और फिर बुध के दिन दो पहरको उतरते हैं, छ पहर मेला रहता है, बिलकुल दर्या किश्तियों से छा जाता है, और लोग किश्तियों को अपने अपने मक़दूर मुवाफ़िक़ रंग रंगाकर और उन में झाड़ फ़ानूस और तसवीरें लगाकर बहुत आरास्तः करते हैं, सैकड़ों किश्तियों पर नाच गाना होता है, और हलवाई और तंबोलियों की दूकानें भी कोड़ियों किश्ती पर चलती हैं, रोशनी भी होती है, और आतिश बाज़ियां भी छुटती हैं। शहर से डेढ़ कोस पर सारनाथ महादेव के पास बौधमतवालों के बनाए हुए कुछ मकान टूटे फूटे अब तक भी बाक़ी हैं, जिसे वहांवाले सारनाथ की धमेख कहते हैं और देखने में एक बहुत बड़ा ठोस गुम्बज़ औंधी हांडी की सूरत दिखलाई देता है पर इतना पुराना कि उसके पत्थर बुढ़िया के दांतों की तरह गिरते चले जाते हैं, हक़ीक़त में वह बौध लोगों का देहगोप अर्थात् उन के महापुरुषों से किसी की क़बर और पूजा की चीज़ है, साहब लोगों की तहक़ीक़ात से ऐसा मालूम होता है कि सन् ईसवी से ५४३

बरस पहले शाक्य मुनिके मरने पर उस समय हर एक राजा ने जो बौधमती था यही चाहा कि उनकी लाश को अपने इलाक़े में उठा ले जावे, और सब के सब उसके वास्ते युद्ध करनेको उपस्थित हुए, तब उस के चेलों ने उसकी लाश जलाकर थोड़ी थोड़ी हड्डी और राख सबको बांटदी, और लड़ने से रोका। निदान राजाओं ने उस हड्डी राखको अपने अपने इलाक़े पर धरती में गाड़कर गुम्बज़ बना दिये और फिर उसके चेलों के मरने पर उनकी हड्डी राखके ऊपर भी इसी तरह के गुम्बज़ तैयार किये और उस सब की पूजा करने लगे। भिलसा मानिकयाला इत्यादि स्थानों में कई जगह अब भी ये गुम्बज़ मौजूद हैं, और बर्म्हा सिंहल तिब्बत चीन इत्यादि देशों के बौधमती लोग आज लों इन गुम्बज़ों की नक़ल धातु पत्थर अथवा मिट्टी की बनाकर चिता सम्बन्धी होने के कारण चैत्य के नाम से पूजते हैं, यहां भी पुराने मंदिर और खंडहरों में अकसर जगह ये चैत्य मिलते हैं। और धमेख की असल धर्ममृग मालूम होती है, क्योंकि बौध पुस्तकों में लिखा है कि काशी में मृग अर्थात् हिरनों को धर्म के लिये दाना मिलता था, शायद उसी के पास उन हिरनों का रमना था। अब यह गुम्बज़ अथवा धमेख टूट फूटकर बहुत जर्जर हो गया है, कुछ गिरगया है और कुछ गिरता जाता है, तिस पर भी अनुमान नब्बे फुट ऊंचा और तीन सौ फ़ुट के घेरे में है। जेम्स प्रिंसिप साहिब ने भेद लेने के लिये उसे एक तरफ़ से खुदवाया था, तब उस के अंदर से एक डिब्बे में हड्डी और राख और कुछ उस समय के प्रचलित सिक्के और तांबे के पत्र पर उसी समय के अक्षरों में बौध मतका एक श्लोक खुदा हुआ निकला था। जिन दिनों में बुधका मत सारे हिंदुस्तान में फैल रहा था, यहां के राजा भी उसी मत को मानते थे

और इस काशी को जो अब ब्राह्मणों का बड़ा तीर्थ है बौधका तीर्थ जानते थे। गंगाके पार राम नगर में महाराजे बनारस के रहने के महल और मकान सुहावने बने हैं, उसी के पास एक तालाब और मंदिर राजा चेतसिंह का बनाया यद्यपि अधबना रहगया है पर जितना है उसमें पत्थरकी पुतली इत्यादि चित्र बहुत, बारीकी के साथ बनाए हैं।–४–जौनपुर बनारस के उत्तर सदर मुक़ाम जौनपुर इलाहाबाद से ६० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता गोमती के बांएं किनारे पर बसा है। आबादी २७००० आदमियों की, फुलेल वहां का मशहूर है। क़िला पत्थर का बना है पुल गोमती पर १५ ताक़वाला संगीन बहुत मजबूत और आलीशान है, यद्यपि वह सैकड़ों बरस का पुराना होचुका है, और सन् १७७३ में उस पर इतना पानी आगया था, कि वार्कर साहिब के सिपाहियों की नावें उसके ऊपर होकर निकल गईं, तथापि अब तक कहीं से चल विचल नहीं हुआ। अंगरेज़ भी उस के बनानेवाले कारीगरों की तारीफ़ करते हैं। सिवाय पुल और क़िले के यहां तीन मस्जिदें ऐसी बड़ी बड़ी संगीन बनी हैं कि यद्यपि अब निरीखंडहर होगई हैं तौभी किसी समय में कुछ दिन इस शहर के पायतख्त रहने की पक्की गवाही देती हैं। –५– आज़मगढ़ जौनपुर के ईशानकोन की तरफ़, इस का सदर मुक़ाम आज़मगढ़ इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता टोंस नदी के बायें किनारे बसा है। आबादी उस में १३००० आदमी से ऊपर है।–६–ग़ाज़ीपुर आज़मगढ़ के अग्निकोन की तरफ़। गुलाब और गुलाब का इतर यहां बहुत बढ़िया बनता है और सब दिसावरों को जाता है। बारह रुपयेतक बोतल गुलाब की और पचासरुपये तोले तक का इतर अब भी तैयार होता है। बिशप हीबर साहिब जब वहां गये थे

सो दो लाख फूल का तोले भर इतर सौ रुपये को बिकता था। सदर मुक़ाम ग़ाज़ीपुर ३८००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ११५ मील पूर्व गंगा के बांयें तीर है। लार्ड कार्नवालिस की क़बर इसी जगह बनी है, उसके बनाने में लाख रुपया खर्च हुआ था।–७–गोरखपुर आज़मगढ़ के उत्तर, गर्मी बहुत नहीं पड़ती परन्तु आब हवा कुछ अच्छी नहीं है। उत्तर तरफ़ नयपाल की तराई में बड़ा भारी जंगल है सदर मुक़ाम गोरखपुर ५४००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन रावती नदी के बांयें किनारे बसा है, उस में गोरखनाथ का मन्दिर है। ऊपर लिखे हुये छओं ज़िले बनारस की कमिश्नरी में गिने जाते हैं।–८–बांदा इलाहाबाद के पश्चिम सदर मुक़ाम बांदा ४१००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ९० मील पश्चिम है। कालिंजर का क़िला बांदे से ४८ मील दक्षिण अढ़ाई कोस के घेरे का एक पहाड़ पर जो वहां के मैदान से अनुमान चार सौ गज़ ऊंचा होवेगा मज़बूत और बहुत मशहूर है, पर अब बे मरम्मत और टूटा फूटा पड़ा है। बांदे से ३६ मील अग्निकोन को चित्रकोट में हिन्दुओं का मन्दिर और तीर्थ है, नदी पहाड़ और जंगल उदासीन मनवालों को बहुत सुख देते हैं।–९– फ़तहपुर इलाहाबाद से वायुकोन की तरफ़। सदर मुक़ाम फ़तहपुर २०००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ३० मील वायुकोन को बसा है।–१०–कान्हपुर फ़तहपुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम कान्हपुर जिस की आबादी लाख आदमियों से प्राय अठारह हज़ार ऊपर गिनी गई है इलाहाबाद से १२० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा के दहने किनारे पर बसा है। वहां सर्कारी फ़ौज की बड़ी छावनी है। कान्हपुर से नौ मील उत्तर पश्चिम को झुकता

हुआ गंगा के दहने किनारे बिठूर हिन्दुओं का तीर्थ है। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।–११–इटावा कान्हपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम इटावा प्राय २३००० हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के बाएं तीर बसा है।–१२–फ़र्रुख़ाबाद इटावे के ईशानकोन की तरफ़। सदर मुक़ाम फ़र्रुख़ाबाद १३२००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा से डेढ़ कोस हटकर दहने किनारे बसा है। छावनी फ़तहगढ़ में ऐन गंगा के किनारे है। वहां एक क़िला भी कच्चा बना है डेरे तम्बू उस जगह में बहुत अच्छे बनते हैं। कन्नौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत में कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुख़ाबाद से प्राय ४० मील आग्निकोन गंगा के इसी किनारे पर उजाड़ सा पड़ा है, यदि बस्ती के निशानों पर नज़र करो तो किसी समय में उसकी बस्ती का बिस्तार लंदन से भी अधिक मालूम पड़ता है। यह वही कन्नौज है जिस में बारह सौ बरस भी नहीं बीते कि तीस हज़ार तो केवल तंबोलियों की दुकान खुलती थीं। इसी कन्नौज का राजा इस देश में मुसल्मानों के राज्य का कारण हुआ, कहते हैं कि जब वहां के राजा जयचंद राठौरने अपनी लड़की का स्वयंबर करने के लिये राजसूयज्ञ रचा, और पृथीराज दिल्लीवाला उस यज्ञ में न आया, तो जयचंद ने एक सोने का पृथीराज बना के दरवाज़े पर द्वारपाल की ठौर बैठा दिया, महाराज पृथीराज को इस बात के सुनने से बड़ा कोप आया, उसी दम अपने बीरों को ले उठ धाया, और जयचंद की बेटी को हर ले गया। इस लड़ाई में पृथीराज के अच्छे अच्छे आदमी मारे गए, और इसी सबब जब जयचंद ने इस लाग की

आग से शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी को हिंदुस्तान में बुलाया, तो आखिर को पृथीराज ने शिकस्त खाई और हिन्दुस्तान में मुसल्मानों का राज हो गया। यदि मुहम्मदग़ोरी के चढ़ाव के समय इन का आपस में बिगाड़ न रहता, और जयचंद पृथीराज को सहाय करता तो हिन्दुओं का राज कदाचित् फिर भी कुछ दिन ठहर जाता।-१३-मैनपुरी इटावे के उत्तर। सदर मुक़ाम मैनपुरी बसी हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन को बसा है।-१४- आगरा मैनपुरी के पश्चिम। बादशाही वक़्त में उस के आसपास के ज़िले उसी नाम के सूबे में दाखिल थे। शहर आगरे का, जिसे सिकन्दरलोदी ने बसाकर बादलगढ़ नाम रखा था और फिर अकबर बादशाह के वक़्त से जब वह हिन्दुस्तान की दरुस्सलतनत हुआ अकबराबाद कहलाया, इलाहाबाद से २८५ मील वायुकोन जमना के दहने किनारे पर बसा है। आगे कीसी आबादी तो कहां पर फिर भी १२५००० आदमी उसमें बस्ते हैं हिन्दू इस जगह को परशुराम का जन्मस्थान कहते हैं। शाहजहां बादशाह की बेगम मुम्ताज़ महल का मक़बरा, जिसे लोग ताजगंज अथवा ताजबीबी का रौज़ा कहते हैं, इस शहर में एक निहायत उमदा मकान बना है। फ़रंगिस्तानवालों ने सारी दुनिया छान डाली, पर इस साथ की इमारत कहीं नहीं पाई, इसके देखने को यदि लोग रूम और चीन से भी पैदल दौड़ते हुए आवें, तो निश्चय है कि उसे आंख भरकर देखने ही में अपनी सारी मिहनत भर पावें। न उस में जाकर फिर उस में बाहर आने को जी चाहे, न उसे देखकर फिर उस पर से आंख उठाने को मन माने। दरवाज़े के अन्दर जाते ही उसको सीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती है,

साम्हने बाग़ जिस में नहर और फ़व्वारे जारी सर्व के दरख़त दुतरफ़ा लगे हुए उन के बीचसे रौज़े का गुम्बज़ और उसके चारों कोने के चारों मीनार साम्हने देख पड़ते हैं, ऐसे ऊंचे कि मानों आस्मान से बातें करते हैं। इस गुम्बज का कलस अढ़ाई सौ फ़ुट से कम कदापि ऊंचा नहीं है, और व्यास अर्थात् चौड़ान उस गुम्बज़ की ७० फ़ुट है। वह सारा मकान संगमर्मर का बना है, और उस पर लाजवर्द अक़ीक़ सुलैमानी गोरी तामड़ा यशम बिलौर फ़ीरोज़ा इत्यादि सैकड़ों क़िस्म के क़ीमती पत्थर जड़कर ऐसे बेल बूटे फूल फल और जानवर बनाए हैं, कि मानो किसी चितेरे ने हाथीदांत पर अभी तसवीरें खींच दी हैं। तसवीरें भी कैसी, कि यह न मालूम हो कि तसवीरें खींची हैं। या सचमुच किसी ने बाग़ से फूल फल तोड़कर उस पर ला रखे हैं। बारीकी का यह हाल है, कि अठन्नी बराबर एक फूल में सत्तर टुकड़े पत्थर के, और फिर भी नाखुन घिसने से उस पर न अटके पत्तियों में हल्के भारी रंग का होना, रग रेशों का जुदा जुदा दिखलाई देना, यही मन में लाता है कि जो इस का बनानेवाला कारीगर यहां होता तो उसके हाथ चूमते, पर कहते हैं कि शाहजहां ने उसके हाथ कटवाडाले थे, जिस में फिर दूसरा मकान ऐसा न बना सके। जमना उसकी दीवार के तले बहती है, और उस तरफ़ उसकी दीवार ३००० गज़ लंबी है। कप्तान इजर्टन साहिब अपनी किताब में इस की लागत कुछ ऊपर तीन करोड़ सत्तरहलाख रुपया लिखते हैं। सर्कार ने इस की और सिकंदरे की मरम्मत के लिये सन् १८१४ में एक लाख रुपया खर्च किया था। शाहजहां भी अपनी बेगम की क़बर के पास इसी रौज़े के अन्दर गड़ा है। शहर से तीन कोस पर सिकंदरा जहां अकबर की क़बर है, और जमना पार एतमादुद्दौला का मक़बरा और

रामबाग़ भी देखने के योग्य स्थान हैं। क़िला जमना के किनारे लाल पत्थर का अकबर का बनवाया हुआ बहुत सुन्दर है, पर जहां उस समय में जयपुर और जोधपुर के राजाओं को भी बैठना कठिन था, खड़ेही रहते थे, वहां अब उल्लू और चमगीदड़ का बासा है। जहां मीयां तानसेन की तान छिड़ती थी, वहां अब मकड़ियां जाला तनती हैं। जहां तीन तीन गज़ लम्बी कपूरी बत्तियां सोने के बीस बीस सेर भारी शमादानों पर बलती थीं वहां अब कोई चिराग़ में कौड़ी भर तेल भी नहीं डालता। मोती मसजिद इस क़िले में निरे संग-मर्मर की बहुत उमदा बनी है। सन् १८०३ में जब लार्डलेक ने मर्हठों से आगरा छीना तो वहां एक तोप छ सौ मन भारी हाथ लगी, मालूम नहीं कि किस समय की बनी थी, लार्डलेक ने चाहा कि कलकत्ते भेजें, पर नाव का तख्ता टूट जाने के सबब जमना में डूब गई। इसी ज़िले में आगरे से नौ कोस पर फ़तहपुर सीकरी में शेख़ सलीम चिश्ती की दर्गाह है, और अकबर के बनवाये बहुत से मकान उमदा उमदा बने हैं, पर अब सब बे मरम्मत हैं, दर्गाह देखने लाइक़ है। राफ़फ़िच साहिब जो अकबर के समय में आये थे फ़तेहपुर की शान को आगरे से भी बढ़कर लिखते हैं।—१५—मथुरा आगरे के वायुकोन को। शास्त्र में इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखा है। शहर मथुरा का ६५००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २९० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के दहने किनारे बसा है। कृष्ण का जन्मस्थान और इसीलिये तीर्थ की जगह है। पारखजी का मंदिर यहां प्रसिद्ध है। क़िले में राजा जयसिंहने ग्रह नक्षत्रादिकों के बेधने के लिये कुछ यंत्र बनवाये थे, पर अब वह सब टूट फूट गए, क़िले का भी केवल नाम ही रह गया है। पुराने मंदिर तो इस शहर के सन् १०१७ में

महमूद गज़नवी ने तोड़े थे, पर पीछे से एक मन्दिर छत्तीस लाख रुपया लगा के राजा बीरसिंहदेव उर्छावाले ने बनवाया था, सो औरंगजेब ने उसे तुड़वाकर उसके मसाले से उसी जगह मस्जिद बनवा दी। महमूद ग़ज़नवी ने यहां से सौ मूरतें चांदी की और पांच मूरतें सोने की लूटीं थीं, और इस शहर की तारीफ़ में एक खत के दरमियान ग़ज़नी के क़िलेदार को यों लिखा था, कि "इस सूरत का शहर दो सौ बरस की मिहनत में भी दूसरा तैयार होना कठिन है, हज़ारों इमारतें जिन में बहुतेरी संगमर्मर की बनी हैं मुसल्मानों के मत की तरह मज़बूत हैं, और मन्दिरों की तो गिनती भी नहीं हो सकती" मथुरा से पांच मील उत्तर जमना के दहने किनारे वृन्दावन कृष्ण के रास बिलास की जगह बहुत रम्य और सुहावनी है। कुंज और मन्दिर बहुत मनोहर बने हैं। बन्दर और लंगूर और मयूर वृक्षों की घनी घनी छांव में सदा कलोलें करते रहते हैं। ऊपर लिखे हुये पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी में हैं।-१६-बदाऊं फ़र्रुख़ाबाद के वायुकोन को गंगा पार। सदर मुक़ाम बदाऊं २७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २५० मील पर बायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है।-१७-शाहजहांपुर बदाऊं के पूर्व। सदर मुक़ाम शाहजहांपुर कुछ ऊपर ७४००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील बायुकोन उत्तर को झुकता गर्रा नदी के बांएं किनारे बसा है। -१८- बरेली शाहजहांपुर के उत्तर। सदर मुक़ाम बरेली १११००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २६५ मील बायुकोन उत्तर को झुकता हुआ और संकरा दोनों नदियों के संगम पर बसा है। मेज़ कुरसी कौंच संदूक़ इत्यादि काठ के सियाह रोग़नी वहां बहुत अच्छे बनते हैं, और दूर दूर तक जाते हैं। रुहेले सिपाही इस ज़िले में बहुत रहते हैं, पर अब

अंगरेज़ी अमल्दारी होने से दंगा फ़साद और लूट मार उन लोगोंने छोड़ दिया, बहुतेरे हल जोतते हैं, और बहुतेरों ने परदेस में नौकरियां करलीं। बरेली से ३० मील ईशान कोन को पीलीभीत २५००० आदमी की बस्ती गर्रा नदी के बाएं किनारे है, चांवल वहां अच्छे होते हैं। —१९—मुरादाबाद बरेली के वायुकोन। उत्तर भाग में पहाड़ और जंगल हैं। ऊख इस जिले में बहुत होती है। सदर मुक़ाम मुरादाबाद कुछ कम ५७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता रामगंगा के दहने किनारे बसा है। वहां से मंज़िल एक पर दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता संभल है, जहां हिंदू लोग कलि के अंत में कलंकी अवतार होने का निश्चय रखते हैं। —२०—बिजनौर मुरादाबाद के उत्तर सदर मुक़ाम बिजनौर ११००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर की तरफ़ झुकता हुआ है। ये ऊपर लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखण्ड की कमिश्नरी में गिने जाते हैं। —२१—अलीगढ़ मुरादाबाद के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम कोयल ५५०००आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २८० मील वायुकोन को है, और उससे कोस भर पर अलीगढ़ का क़िला है। —२२—बलंदशहर अलीगढ़ के उत्तर सदर मुक़ाम बलंदशहर १५००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३१५ मील वायुकोन काली नदी के दहने किनारे है। —२३—मेरठ बलंदशहर के उत्तर सदर मुक़ाम मेरठ ४०००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५५ मील वायुकोन को है और वहां सरकारी फ़ौज की बहुतबड़ी छावनी है। वह स्थान जहां किसी समय में हस्तिनापुर बस्ता था मेरठ से २५ मील ईशानकोन की तरफ़ गंगा के दहने तट से निकट है

अब वहां केवल एक मंदिर दिखलाई देता है और बाक़ी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरट से एक मंज़िल वायुकोन को सरधने में समरू की बेगम का बनाया गिरजाघर देखने लाइक़ है। उस में पच्चीकारी के कामकी संगमर्मर की बेदी बनाई है। –२४–मुज़फ़्फ़र नगर मेरट के उत्तर। सदर मुक़ाम मुज़फ़्फ़रनगर नौ हज़ार आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता है। –२५–सहारनपुर मुज़फ़्फ़र नगर के उत्तर। ऊख बहुत होती है सदर मुक़ाम सहारनपुर ३७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ४१० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है। अलीमर्दांखांवाली जमना की नहर उसके बीच से जाती है। सहारनपुर से पूर्व अग्नि कोन को झुकता हुआ रुरकी एक मुक़ाम है। वहां गंगा की नहर लाने के लिये सलानी नदी पर जो अंगरेज़ों ने पुल बांधा है देखने योग्य है। वह नदी नहर के रस्ते में थी और उसके किनारे नहर के पानी से नीचे पड़ते थे इन्होंने क्या हिक्मत की है कि जहांतक धरती नीची थी वहां तक नहर के बराबर ऊंचा पक्का बंध बांधकर और सलानी के बहने के लिये उसके बीच में एक पुल रख कर उस बंध और पुल पर से नहर को निकाल दिया है, अर्थात् पुलके नीचे तो सलानी जारी और पुलके ऊपर से नहर चलती है वहां सरकार की तरफ़ से एक कालिज भी बहुत बड़ा बना है कि उसमें लड़के एंजिनिअरिंग अर्थात् इमारत का काम सीखते हैं। और खाने पहने और रहने को जगह भी सरकार से पाते हैं। ज्यों ज्यों काम सीखने वाले हैं उनकी तनख़्वाहें बढ़ती जाती हैं और जब पढ़ लिखकर तैयार होते हैं तो सड़क पुल नहर बंगले बारक इत्यादि बनाने के कामों पर मुक़र्रर होजाते हैं ये पांचों ज़िले मेरटकी कमिश्नरी में हैं

।-२६-देहरादून (†) सहारनपुर से उत्तर पहाड़ों के अंदर। सालके जंगल इस जिलें में बहुत हैं। लंधौर और मंसूरी टीबा जो समुद्रसे कुछ न्यूनाधिक छ हज़ार फुट ऊंचे होवेंगे साहिब लोगों के हवाखाने की जगह इसी जिले में हैं। गंगा और जमना वहां से दूरतक बहती हुई दिखलाई देती हैं, परंतु शिमला की तरह इन पहाड़ों पर बड़े बड़े ऊंचे पेड़ों के सुंदर और मनोहर जंगल नहीं हैं। सदर मुक़ाम देहरा इलाहाबाद से ४१५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है वहां सिखों का गुरुद्वारा है। वहां से छ मील उत्तर मंसूरी टीबे की जड़ में राजपुरा बसा है जो लोग हवा खाने को टीबे पर जाते हैं गाड़ी इत्यादि जो असबाब पहाड़ोंपर नहीं चढ़सकता इसी जगह छोड़ जाते हैं। -२७-कमाऊं गढ़वाल सहारन पुरसे ईशान कोनको हिमालय के पहाड़ों में चीन की हद तक। यह एक बे आइनी कमिश्नरी है। अकसर नदियों का बालू धोने से सोना हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। तांबे की खान है। बस्ती यहां खसियों की बहुत सूरत इन पहाड़ियों की कुछ कुछ तातारियों से मिलती है कमाऊं का असिस्टेंट सदर मुक़ाम अलमोरे में रहता है, वह ३५०० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ समुद्र से कुछ ऊपर तिरपन सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। शहर के पश्चिम एक छोटा सा क़िला सरकार ने फ़ोर्ट माइरा नाम बनवाया है गढ़वालका असिस्टेंट अलमोरे से १०४ मील वायुकोन अलखनन्दा नदी के बाएं किनारे श्री नगर के पास पावरी में रहता है। अलमोरे से २५ मील पूर्व अग्नि कोन को झुकती नयपाल की हद पर लोहू घाट की छावनी है।

(†) दून उसे कहते हैं जो दो पहाड़ों के बीच चौरस मैदान हो।

वहां से तीन मील पश्चिम एक पहाड़ पर फ़ोर्टहेस्टिंगज़ छोटा सा क़िला है, पर मज़बूत बना है। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ बदरीनाथ अलमोरे से ८० मील उत्तर जरा वायुकोन को झुकता विष्णुगंगा के दहने किनारे समुद्र से दस हज़ार तीन सौ फ़ुट ऊंचा है। मन्दिर शिखरदार ४५ फ़ुट बलन्द, ऊपर तांबेकी छत सुनहरी कलस चढ़ा हुआ, मूर्त्ति नारायणकी गज़ भर ऊंची श्याम पाषाण की है। वहां गर्मियों में यात्रियों का मेला लगता है। जाड़े भर मन्दिर बर्फ़ के नीचे दबा रहता है। उस के पासही गर्म पानी का एक सोता है, जिस में गन्धक की गन्ध आती है। बदरीनाथ से सीधा पच्चीस मील लेकिन सड़क की राह प्राय १०० मील केदारनाथ का मन्दिर है, जहां एक काले पत्थर की पूजा होती है। जिनको हिमालय में गलना मंज़ूर होता है इसी जगह से बर्फ़ के पहाड़ों में चले जाते हैं। हिन्दू लोग इस तरह अपने तईं हलाक़ करने में बड़ा पुण्य समझते हैं। जिसे गलना मंज़ूर होता है पण्डा उसे एक तरफ़ को इशारा करके कह देता है कि यही स्वर्ग की राह है, निदान यह बेचारा पहाड़ के अन्दर उसी तरफ़ दौड़ता है, और जब नज़रों से निकल जाताहै तो उसे एक बर्फ़ के खाड में उतरना पड़ता है कि जहां से फिर उलटा नहीं लौट सकता क्योंकि बर्फ़ का ढाल कुढब है, उतर जाना सहज पर फिर चढ़ आना कठिन, निदान जब वह बर्फ़ की सर्दी से वहां ठिठुरकर मर जाता है, तो चील कव्वे उस पर गिरते हैं। अलमोरे के दक्षिण तीस मील की राह पर कोई एक मील लम्बी भीमताल की सुन्दर झील है इस्से दो मील पूर्व नौकुचिया ताल है। अलमोरे से २२ मील नैर्ऋत कोन दक्षिण को झुकता ५६०० फ़ुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है।

ताल के गिर्द घूमने में कुछ कम-जियादः दो घण्टा लगता है। चारों तरफ़ उसके पहाड़ों पर कोठी और बंगले बने हैं। ताल बड़ा गहरा और स्वच्छ जल से भरा हुआ बहुत रम्य और सुहावना मालूम देता है।—२८—अजमेर यह जिला रजपुताने के बीच अर्बली पहाड़ से पूर्ब है। दूसरे सर्कारी जिलों से किसी तरफ़ भी नहीं मिला, चारों तरफ़ जयपुर जोधपुर किशनगढ़ और उदयपुर की अमलदारियों से घिरा है यह भी एक बे आईनी कमिश्नरी है। बादशाही ज़माने में इस के आस पास के सब इलाक़े इसी नाम के सूबे में गिने जाते थे अब अंगरेज़ी दफ़्तरों में यह सूबा रजपुताने के नाम से लिखाजाता है क्योंकि उस गिर्दनवाह में रजपूत राजा बहुत हैं। सीसे की इस जिले में खान है। सदर मुक़ाम अजमेर इलाहाबाद से ४५० मील पश्चिम ज़रा वायुकोन को झुकता एक पहाड़ की जड़ में पक्की शहरपनाह के अन्दर बसा है। ८०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर तारागढ़ का बे मरम्मत पुराना क़िला है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दर्गाह जिस की ज़ियारत को अकबर आगरे से नंगे पांव गया था इस शहर में बहुत मशहूर है। शहर के बाहर एक झील के किनारे जिस का घेरा ८ मील का होगा बादशाही बाग़ है। रजपुताने के अजण्ट के रहने की जगह यही अजमेर है। शहर से सात कोस पर नसीराबाद की छावनी एक वृक्ष रहित पथरीले मैदान में बनी है। जेनरल अक्टरलोनी साहिब को दिल्ली के बादशाह ने नसीरुद्दौला खिताब दियाथा इसी कारन उनके नामपर इस छावनी का नाम नसीराबाद रहा। दूसरी तरफ़ तीन कोस के फ़ासिले पर पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है अनुमान आध कोस के घेरे में वह झील होवेगी किनारे पर घाट और मंदिर बने हैं झील में कमल

और मगर बहुत हैं यहां ब्रह्मा की पूजा होती है। -२९.-सागर नर्मदा अथवा जब्बलपुर की वे आईनी कमिश्नरी नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और संधिया की अमल्दारी तक चला गया है। विंध्य के तटस्थ होने के कारन जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है। कोयले की खान है सदर मुक़ाम जब्बलपुर इलाहाबाद से २०० मील नैर्ऋतकोन को नर्मदा से कुछ दूर हटकर दहने किनारे पर बसा है। वहां सर्कार ने ठगों के लिये बड़ा बंदोबस्त बांधा है। जो ठग आगे अपना पेटपालने को आदमियों का गला घोंटते थे वे सब वहां शतरंजी कालीन बुनते हैं, और देरे तंबू बनाते हैं। जो ठग गिरफ्तार होते हैं उसी जगह भेजे जाते हैं और सज़ा मुआफ़ होने के वादे पर अपने सारे साथियों को पकड़ा देते हैं। अब वहां इन ठगों का एक गांव बस गया है, और उसी जगह उनका आपस में शादी ब्याह भी हुआ करता है। सर्कार उन से काम लेती है, और उन्हें खाने को देती है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुक़र्रर हैं, वे आईनी ज़िले के मेजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के इलाक़े में इस हिसाब से इन्तिज़ाम करते हैं, कि एक तो सागर में जो जब्बलपुर के वायुकोन को सौ मील पर बसा है। दूसरे सिउनी में जो जब्बलपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सौ मील पर बसा है। तीसरे बैतूल में जो जब्बलपुर के नैर्ऋत कोन १७० मील पर बसा है चौथे नरसिंहपुर में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को झुकता ७० मील पर बसा है। पांचवें होशंगाबाद में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को जराझुकता १५० मील पर नर्मदा के बांए किनारे बसा है, वहां सर्कारी फ़ौज की छावनी है। छठे मंडले

में जो जब्बलपुर के दक्षिण ५६ मील पर बसा है और सातवें द-मोह में जो जब्बलपुर के वायुकोन उत्तर को झुकता ६० मील पर बसा है।–३०–झांसी की बे आईनी कमिश्नरी कानपुर के पश्चिम जमना पार। इस में चार ज़िले हैं पहले का सदर मुक़ाम हमीरपुर इलाहाबाद से ११० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बेत्वा के बांएं किनारे जहां वह जमना से मिली है दूसरे का जालौन हमीर पुर के वायुकोन मिसरी कालपी की प्रसिद्ध है। वह १८००० आ-दमियों की बस्ती जमना के दहने किनारे हमीरपुर से एक मंज़िल वायुकोन को बसा है। तीसरे का झांसी जालौन के नैर्ऋतकोन और चौथे का चन्दरी झांसी के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता च-न्देरी का कपड़ा किसी समय में बहुत प्रसिद्ध था, और उस में अबु-लफ़ज़ल अक्बर के समय १०००० मस्जिद ३६० सरा और ३८४ बाज़ार लिखता है, लेकिन अब तो ऊजड़ सा पड़ा है॥

इति

अनुक्रमणिका

पहिला हिस्सा

इति